शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षा केंद्र

सत्र–3 : पेपर–3

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य–I (P-03)

सत्र–4 : पेपर–5

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य–II (P-05)

नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 नुसार सुधारित अभ्यासक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2025-26 से)

बी. ए. भाग–2 हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2023
द्वितीय संस्करण : 2025
बी. ए. भाग 2 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 2000

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-89345-31-5

■ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी– शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रा. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रा. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
प्र. अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. एस. महाजन
प्र. अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) ज्योती जाधव
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

१. **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा,
ता. जावळी, जि. सातारा

२. **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर

३. **प्रो. डॉ. अशोक विठोबा बाचूळकर**
आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर

४. **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय,
जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

५. **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा,
जि. सोलापुर-४१३२०३

६. **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहानी**
सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर

७. **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा

८. **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ,
सातारा-४१५ ००२.

९. **प्रो. डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव,
जि. कोल्हापुर

१० **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
प्रो. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापूर,
जि. कोल्हापुर

११ **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली

१२ **डॉ. परशराम रामजी रागडे**
शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,
वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्‌यालय की दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग 2 (ऐच्छिक) हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित स्वयं अध्ययन नियमित रूप से प्रवेश न ले पानेवाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्‌यालय की सामाजिक संवेदनशीलता आधारभूत है तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचितों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्‌धता। सन् 2007 से बी. ए. भाग 1 से लेकर एम.ए. 2 तक के छात्र स्वयं अध्ययन सामग्री से दूर शिक्षा योजना के अंतर्गत लाभान्वित हुए हैं । उसी तरह अब बी. ए. 2 के छात्र इस पुनर्रचित पाठ्‌यक्रम की स्वयं अध्ययन सामग्री से लाभान्वित हो, इसका पूरा ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत स्रोत सामग्री सामूहिक प्रयास का ही फल है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत अभ्यास सामग्री उक्त छात्रों के लिए उपादेय सिद्‌ध होगी।

– संपादक

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र–3	सत्र–4
◆ **प्रो. डॉ. वर्षाराणी निवृत्तीराव सहदेव** श्री. विजयसिंह यादव महाविद्यालय, पेठवडगाव, जि. कोल्हापुर	१	–
◆ **श्री. सर्जेराव यशवंत भोसले** राजा श्रीपतराव भगवंतराव महाविद्यालय, औंध, जि. सातारा	२	–
◆ **डॉ. सुनंदा सोपानराव मोहिते** सरदार बाबासाहेब माने महाविद्यालय, रहिमतपूर, जि. सातारा	३	–
◆ **डॉ. विठ्ठल शंकर नाईक** श्रीमती आक्काताई रामगौंडा पाटील कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	४	–
◆ **डॉ. संग्राम शिंदे** आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, जि. सातारा	–	१
◆ **डॉ. पी. आर. रगडे** शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा	–	२
◆ **डॉ. माधव मुंडकर** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	–	३
◆ **डॉ. गजानन चव्हाण** श्रीमती गंगाबाई खिवराज घोडावत कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. जयसिंगपूर, जि. कोल्हापुर	–	४

■ सम्पादक ■

प्रो. (डॉ.) एस. एस. सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अभ्यासमंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली, जि. सांगली.

डॉ. संग्राम शिंदे
आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय,
मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा

अनुक्रम

सत्र–३ पेपर–३ : आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य–I

इकाई **I - कहानी साहित्य**		पृष्ठ
1	एक टोकरी भर मिट्टी – माधवराव सप्रे	१
2	दूध का दाम – प्रेमचंद	७
3	पोस्टमैन–शैलेश मटियानी	१३
इकाई **II - कहानी साहित्य**		
4	अपना रास्ता लो बाबा – काशिनाथ सिंह	२०
5	'जाँच अभी जारी हैं'– ममता कालिया	३१
6	दास्ताने कबूतर (कहानी)– कुसुम अंसल	१४
इकाई **III - कथेत्तर साहित्य (व्यंग्य)**		
7	बहानेबाजी (व्यंग्य)–भदंत आनंद कौसल्यायन	५६
8	जैसे उनके दिन फिरे (व्यंग्य)– हरिशंकर परसाइ	६३
9	जिसके हम मामा है (व्यंग्य)– शरद जोशी	६९
इकाई **IV - कथेत्तर साहित्य (रेखाचित्र, निबंध, संस्मरण)**		
10	''लल्लू कब लौटेगो'' (रेखाचित्र)– बनारसीदास चतुर्वेदी	७४
11	बाजार दर्शन (निबंध)– जैनेंद्र कुमार	८२
12	'हम हशमत – भीष्म सहानी' (संस्मरण)– कृष्णा सोबती	९१

सत्र–4 पेपर–6 : आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य–II

इकाई **I**		पृष्ठ
1	नाटककार–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय	९९
इकाई **II**		
2	लड़ाई' (नाटक) – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	११२
इकाई **III**		
3	'अब गरीबी हटाव' (नाटक) – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	१३३
इकाई **IV**		
4	लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' (समसामायिकता, सार्थकता, समस्या)	१५३

हर इकाई की शुरूआत उद्‌देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्‌वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्‌ध होगी।

इकाई 1
एक टोकरी भर मिट्टी – माधवराव सप्रे

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 माधवराव सप्रे का परिचय

1.3.2 'एक टोकरी भर मिट्‌टी' कहानी का परिचय

1.3.3 'एक टोकरी भर मिट्‌टी' कहानी के मुख्य बिंदु

1.3.4 'एक टोकरी भर मिट्‌टी' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

1.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आप

- माधवराव सप्रे के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'एक टोकरी भर मिट्‌टी' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- वर्गभेद का विरोध करेंगे।
- मनुष्य को अपनी जरूरतों से अधिक जब लालसा होने लगती है तो वह अपने पथ से कैसे भ्रष्ट हो जाता है, इस बात को जमींदार के माध्यम से समझ सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधा कहानी है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरम्भ १९०० इसवी के आसपास माना जाता है। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और सम्पन्न परंपरा रही है। कहानियों से श्रोताओं को मनोरंजन के साथ-साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता है। प्राय: कहानियों में असत्य पर सत्य, अन्याय पर न्याय और अधर्म पर धर्म की विजय दिखाई गई है।

हिंदी कहानी के विकास का अध्ययन करने के लिए हम कथा सम्राट प्रेमचंद को केंद्र बिंदु मानते हैं। प्रेमचंद के पूर्व की कहानी, प्रेमचंद युगीन कहानी, प्रेमचंदोत्तर कहानी, नई कहानी, सचेतन कहानी, समकालीन कहानी, अकहानी, समानांतर कहानी आदि के रूप में इसके विकास को देखते हैं।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 माधवराव सप्रे का परिचय :

माधवराव सप्रे (1871 से 1926) हिंदी के आरंभिक कहानीकारों में से एक है। सुप्रसिद्ध अनुवादक एवं हिंदी के आरंभिक संपादकों में प्रमुख स्थान रखने वाले संपादक है। वह हिंदी के प्रथम कहानी लेखन के रूप में जाने जाते हैं। माधवराव सप्रे का जन्म सन 1871 ईस्वी में दमोह जिले के पथरिया ग्राम में हुआ था। बिलासपुर में मिडिल तक की पढ़ाई के बाद मैट्रिक शासकीय विद्यालय रायपुर से उत्तीर्ण किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद उन्हें तहसीलदार के रूप में शासकीय नौकरी मिली बिलासपुर जिले के एक छोटे से गांव पेंड्रा से 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक मासिक पत्रिका निकाली।

आपने मराठी में रचित समर्थ रामदास के 'दासबोध' लोकमान्य तिलक रचित 'गीता रहस्य' जैसे मराठी ग्रंथों, पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी बखूबी किया। 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की पहली कहानी होने का श्रेय प्राप्त है। 1924 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन में सभापति रहे थे।

1.3.2 एक टोकरी भर मिट्टी कहानी का परिचय :

एक टोकरी पर मिट्टी हिंदी की पहली कहानी सिद्ध हुई। इस कहानी में एक विधवा स्त्री के माध्यम से जमींदारों द्वारा गरीब जनता पर होने वाले अन्याय को दर्शाया गया है। विधवा स्त्री की दयनीय अवस्था और नियति द्वारा उसकी पारिवारिक सदस्यों का निधन होना उसके दुर्भाग्य को व्यक्त करता है। जमींदार के द्वारा जबरदस्ती उसके झोपड़ी पर कब्जा करना और झोपड़ी की एक टोकरी भर मिट्टी का उसके द्वारा न उठाना उसके अपराधी भाव को दर्शाता है। अंततः इसी अपराधी भाव का एहसास कर कृतकर्म का पश्चाताप करते हुए जमींदार का विधवा से माफी मांगना कहानी को आदर्श स्तर पर उठाता है। यह कहानी हिंदी की पहली कहानी होकर भी प्रभाव की दृष्टि से मौलिक है।

1.3.3 एक टोकरी भर मिट्टी कहानी के मुख्य बिंदु :

- यह एक बहुत ही छोटी और कर्तव्य श्रेष्ठ कहानी है।

- यह कहानी आज के यथार्थ से जुड़ी हुई है।
- यह कहानी वर्ग भेद पर आधारित है; इसमें एक गरीब के शोषण का चित्रण है।
- इस कहानी में अहंकार और स्वार्थ का चित्रण जमींदार के रूप में किया गया है।
- एक गरीब बुजुर्ग महिला द्वारा जमींदार का हृदय परिवर्तन होना दिखाया गया है।

1.3.4 एक टोकरी भर मिट्टी कहानी की समीक्षा :–

यह कहानी वर्ग भेद पर आधारित कहानी है। संपन्न वर्ग के लोग हमेशा से गरीबों और अनाथों का शोषण करते आए हैं। इस कहानी में भी जमींदार अपने महल को बढ़ाने के लिए गरीब महिला का शोषण करता है।

जमींदार साहब को अपने महल की हद उस झोपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। जमींदार ने विधवा से बहुत बार कहा कि, अपनी झोपड़ी हटा ले पर वह तो कई जमाने से वहीँ बसी थी।

उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही पोती उसकी वृद्धकाल में एकमात्र सहारा थी। जब कभी भी उसे अपनी पहले की स्थिति याद आ जाती तब वह मारे दुःख से फूट–फूट कर रोने लग जाती थी। जबसे उसने अपने श्रीमान पड़ोसी का हाल सूना है, तब से वह मृत सी हो गई थी। उस झोपड़ी से उसे इतना लगाव था कि वह वहाँ से निकलना नहीं चाहती थी। जमींदार की इच्छा को सुनकर उसकी अवस्था मृतक सी हो गई थी। पर वह झोपड़ी छोड़ने के लिए तैयार नहीं थी। जमींदार के सभी प्रयत्न विफल हो गए। तब जमींदार ने अदालत का सहारा लिया। और झोपड़ी पर कब्जा कर विधवा को वहाँ से निकलवा दिया। झोपड़ी छोड़ने के बाद बुढ़िया वही पड़ोस में ही रहने लगी।

एक दिन जमींदार मजदूरों को लेकर झोपड़ी के पास कुछ काम करवा रहा था। उसी समय अनाथ विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहां पहुँचती है। जमींदार उसे देखते ही नौकरों को हटाने के लिए कहते है। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, 'महाराज! अब तो यह झोपड़ी तुम्हारी हो गई है; मैं उसे लेने नहीं आई हूँ' महाराज क्षमा करे तो एक विनती है। जमींदार साहब के सर हिलाने पर उसने कहा, ''जब से यह झोपड़ी छूटी है तब से मेरी पोती ने खाना–पीना छोड़ दिया है। मैंने उसे बहुत समझाया पर वह एक नहीं मानती है। वह कहा करती है कि मुझे अपने घर ले चलो, वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने सोचा है कि इस झोपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊंगी। यह कहने से भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज, कृपा करके आज्ञा दीजिये तो इस टोकरी में मिट्टी ले जाऊं।'' श्रीमान ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातें याद आने लगी और उसके आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आतंरिक दुःख को किसी तरह संभालकर टोकरी में मिट्टी भर ली। टोकरी बहुत भारी हो गयी थी। जिसे वह उठा नहीं पा रही थी। बुढ़िया श्रीमान से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी। ''महाराज, कृपा करके इस टोकरी को हाथ लगाइए जिससे कि मैं अपने सिर पर धर लूँ'' जमींदार इच्छा के विरुद्ध टोकरी

उठाने लगता है। पर टोकरी हाथ भर भी ऊपर नहीं उठती है। यह देखकर अनाथ विधवा कहती है, ''महाराज नाराज न हो आपसे तो एक टोकरी मिट्टी नहीं उठाई जाती है और इस झोपडी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं। उसका भार आप जन्म भर कैसे उठा सकेंगे? आप ही इस पर विचार कीजिएगा।'' अनाथ विधवा का यह कथन बहुत सहज है पर तत्कालीन समय में वह जमींदार की वृति के खिलाफ विद्रोह ही करती है।

'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी का कथानक बहुत सरल और सहज है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यथार्थ और आदर्श को बड़े ही सहजता से पाठकों के सामने रखा है। कहानी में अनाथ विधवा द्वारा सामाजिक संवेदना को वाणी भी दी गयी है। मनुष्य को अपनी जरूरतों से अधिक लालसा होने लगी है, जिसके फलस्वरूप वह अपने पथ से भ्रष्ट हो जाता है। अतः लेखक ने बड़ी ही कुशलता से इस छोटे से कथानक को प्रभावी बना दिया है। यही मजबूत पक्ष ने इस कहानी को हिन्दी की आरंभिक कहानियों में स्थान दिया है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. माधवराव सप्रे का जन्म............ में हुआ।

   अ) सन 1850 ब) सन 1871 क) सन 1860 ड) सन 1961

2. माधवराव सप्रे की मृत्यु .... में हुई।

   अ) सन 1926 ब) सन 1990 क) सन 1920 ड) सन 1970

3. माधवराव सप्रे ने बिलासपुर से .... पत्रिका निकाली थी।

   अ) छतीसगढ़ मित्र ब) लोकमत क) संचार ड) हंस

4. माधवराव सप्रे का जन्म............ जिले में हुआ।

   अ) लमही ब) सुल्तानपुर क) दमोह ड) झांसी

5. माधवराव सप्रे हिन्दी साहित्य समेलन के देहरादून अधिवेशन में .... सभापति रहे थे।

   अ) सन 1850 ब) सन 1871 क) सन 1860 ड) सन 1924

6. विधवा की पतोहु .... बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी।

   अ) चार ब) पांच क) सात ड) आठ

7. झोपडी के छुटने पर पोती ने .... छोड़ दिया था।

   अ) गाना ब) खाना-पीना क) सोना ड) रोना

8. एक टोकरी भर मिट्टी से विधवा .... बनाना चाहती थी।

   अ) घर ब) कमरा क) चूल्हा ड) खेत

9. जमींदार ………… बात से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।

अ) धन–मद ब) बच्चे क) बुद्धि ड) गहने

10. जमींदार विधवा को ………… वापिस दे देते है।

अ) पैसे ब) अलंकार क) झोपडी ड) कुवां

1.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

जमींदार– भू–स्वामी, अनाथ– लावारिस, असहाय, पतोहू– बहू, मृतप्राय– जो मरे हुए के समान हो, प्रयत्न– कोशिश, अदालत– न्यायालय, स्मरण– याद करना, पश्चाताप– पछतावा

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1– ब, 2– अ, 3– अ, 4– क, 5– ड

6– ब, 7– ब, 8– क, 9– अ, 10– क

1.7 सारांश

1. एक टोकरी भर मिट्टी एक प्रभावी कहानी है, जिसमें वृद्धा की मार्मिक उक्ति जमींदार की वृत्ति ही परिवर्तित कर देती है।
2. इंसान का अहंकार उसे अन्याय और विद्रोष करने को प्रेरित करता है। इस हेतु वह छल, झूठ और षड्यंत्र करने से भी नहीं चुकता परन्तु सत्य और इमानदारी की एक चोट उसे हकीकत के धरातल पर ला पटकती है। परिणामस्वरूप उसका जमीर जाग जाता है उसे सत्य की पहचान होती है।
3. प्रस्तुत कहानी में एक जमींदार द्वारा असहाय विधवा की झोपडी को हथिया लेने के बाद की स्थिति का प्रभावपूर्ण चित्रांकन हुआ है।
4. यह कहानी मानवीय संवेदना से जुडी हुई है। विधवा के कथन से उसका ह्रद्य परिवर्तन होना और विधवा की झोपडी को जमींदार द्वारा लौटा देना इस कहानी का सारतत्व है।

1.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तर प्रश्न

1) एक टोकरी भर मिट्टी कहानी की विधवा।

2) एक टोकरी भर मिट्टी कहानी के जमींदार।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) एक टोकरी भर मिट्टी कहानी के माध्यम से लेखक क्या सन्देश देना चाहते है?

2) इस कहानी का शीर्षक एक टोकरी भर मिट्टी क्यों रखा गया है?

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1907 में प्रकाशित बंग महिला द्वारा लिखित 'दुलाई वाली' कहानी को भी हिन्दी की पहली कहानी का दर्जा प्राप्त है। इस कहानी को पढ़िए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

हिन्दी में लिखित विविध विधाओं के प्रथम साहित्यकारों की सूची तैयार कीजिए।

❑❑❑

इकाई 1
2. दूध का दाम – प्रेमचंद

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

    1.3.1 प्रेमचंद का परिचय

    1.3.2 'दूध का दाम' कहानी का परिचय

    1.3.3 'दूध का दाम' कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आप –

- प्रेमचंद के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- 'दूध का दाम' कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- दलितों के प्रति समाज के दोहरे रवैये को समझ सकेंगे।
- दलितों को सेवा का मूल्य एक झूठी थाली से अधिक नहीं, यह जान सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को एक नई जमीन और दिशा प्रदान की। प्रेमचंद के हाथों हिन्दी कहानी वस्तु और शिल्प दोनों ही स्तरों पर उत्कर्ष पर पहुँचती है। मूलतः यह कहानियाँ आम आदमी को केंद्र में रखकर ही लिखी गई है। प्रेमचन्द जी दीन–दलित पर होनेवाले अत्याचारों के साक्षी रहे हैं। इसलिए उनकी कहानियों में उभरी चिंतन की भूमि बिलकुल स्वाभाविक और हर युग में प्रासंगिक है।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 प्रेमचन्द का परिचय :

युगप्रवर्तक रचनाकार प्रेमचन्द जी का जन्म वाराणसी के लमही नामक गाँव में 31 जुलाई 1880 ई. को हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपतराय था। बचपन में ही माता–पिता का देहांत हो जाने से छोटी आयु में ही आपका विवाह हो गया। पति–पत्नी के सम्बन्ध कभी मधुर नहीं रहे। झगड़ालू पत्नी हमेशा के लिए अपने मायके चली गई। कुछ समय बाद प्रेमचंद ने बाल विधवा शिवरानी देवी के साथ विवाह कर लिया।

पारिवारिक जिम्मेदारी को सम्भालते हुए प्रेमचन्द जी ने मैट्रिक की परीक्षा को पूर्ण किया। इसके बाद स्कुल में अध्यापक हो गए और पदोन्नति द्वारा 'डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल' के पद को प्राप्त किया। सन 1920 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर नौकरी छोड़ दी। देशसेवा तथा साहित्य साधना को अपना लक्ष्य बना लिया। लगभग तीस वर्ष तक अथक परिश्रम से साहित्य रचना करते हुए सन 1936 ई. में प्रेमचन्द का स्वर्गवास हो गया।

आरम्भ में प्रेमचंद ने 'नबाबराय' नाम से उर्दू में लिखना शुरू किया था। उनकी पहली उर्दू कहानी 'संसार का अनमोल रत्न' 1907 ई. में 'जमाना' उर्दू पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। उनका पहला कहानी संग्रह 'सोजेवतन' अंगेज सरकार ने जब्त करके जलाया था। अंग्रेज सरकार की नीति और व्यवहार देखकर वे 'प्रेमचन्द' इस उपनाम से लिखने लगे। वही नाम उनकी पहचान बन गया। 'पंच परमेश्वर' उनकी पहली हिन्दी कहानी सन 1916 ई. में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने उर्दू में 178 और हिन्दी में तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखी है। उनकी प्राय: सभी कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित है। इनके प्रकाशित उपन्यासों में 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'गबन', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गोदान', 'मंगलसूत्र' आदि उल्लेखनीय है। कहानीसंग्रहों में 'सप्तसरोज', 'प्रेमद्वादशी', 'प्रेम–पूर्णिमा', 'प्रेम–प्रसून', 'नवनिधि', 'प्रेम–प्रमोद' आदि प्रसिद्ध है। 'कर्बला', 'प्रेम की वेदी' और 'संग्राम' नाट्य कृतियाँ है। 'कुछ विचार' और 'विविध प्रसंग' (तीन भाग) इनके महत्वपूर्ण निबंध संकलन है।

1.3.2 'दूध का दाम' कहानी का परिचय :

'दूध का दाम' कहानी प्रेमचन्द जी की एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में लेखक ने जाती-पाती, छुआछूत, ऊँचनीच, धर्म-अधर्म तथा गरीब-अमीर लोगों की सोच के बारे में वर्णन किया है। इसमें अमीर लोगों द्वारा गरीब लोग कैसे सताए जाते है, इसका वर्णन किया है। प्रस्तुत कहानी दलितों के प्रति समाज के दोहरे रवैये को उजागर करती है। इसमें एक दलित को उसकी सेवा का फल तिरस्कार के रूप में मिलता है।

1.3.4 'दूध का दाम' कहानी की समीक्षा :

एक दलित परिवार है, जिसका मुखिया गूदड़ नाम का व्यक्ति है। गूदड़ की पत्नी भूंगी है और उनका एक बच्चा मंगल भी है। भूंगी दाई का काम करती है। कहानी में महेशनाथ बाबू का परिवार भी है। महेश नाथ बाबू जाति से सवर्ण हैं। उनकी पत्नी को पुत्र पैदा होता है और पुत्र पैदा होने में भूंगी दाई का काम बखूबी करती है, इस कारण उसका महेशनाथ बाबू के परिवार में महत्व बढ़ जाता है।

भूंगी का पुत्र मंगल और महेशनाथ बाबू का पुत्र सुरेश दोनों लगभग समान आयु के हैं। लेकिन भूंगी अपने पुत्र मंगल को दूध ना पिला पाती है, क्योंकि महेश नाथ बाबू के पत्नी को दूध ना आने के कारण भूंगी को उनके बच्चे को दूध पिलाना पड़ता था। भूंगी को दूध पिलाने के लिए तरह-तरह के लालच दिए जाते हैं। इस तरह बच्चा बड़ा होता है पर जब उन लोगों का काम निकल जाता है तो वह लोग भूंगी को दुत्कार देते हैं। कहानी में एक शास्त्री जी भी हैं जो महेश नाथ को धर्म का पाठ पढ़ाते हुए कहते हैं कि नीची जाति की भूंगी से तुम अपने बच्चे को दूध कैसे पिलवा रहे हो। इस तरह भूंगी द्वारा महेशनाथ के पुत्र को दूध पिलाना बंद करवा दिया जाता है।

समय बीतता रहता है। प्लेग की बीमारी के कारण गूदड़ मर जाता है और कुछ समय बाद भूंगी भी एक दुर्घटना में सांप द्वारा काटे जाने से मर जाती है। उनका लड़का मंगल अकेला रह जाता है। महेश नाथ बाबू के परिवार की बची हुई जूठन से उसका गुजारा चलता है।

एक बार महेश नाथ बाबू का लड़का सुरेश, मंगल को खेल-खेल में घोड़ा बनने को कहता है और उस पर बैठ जाता है। इस प्रक्रिया में सुरेश गिर जाता है उसे चोट लग जाती है और महेश नाथ बाबू की पत्नी मंगल को खूब भला बुरा कहती है। मंगल को खाना भी नहीं मिलता वो भूखा प्यासा भटकता है और किसी तरह महेशनाथ बाबू और सुरेश का जूठन खाना पाकर अपने पेट की आग बुझाने की कोशिश करता है। तब वह खाना खाते हुए सोचता है कि उसकी माँ ने इस परिवार के पुत्र को दूध पिलाया और उस दूध का फल आज उसे इस तिरस्कार के रूप में मिल रहा है।

यहाँ इस कहानी में प्रेमचंद ने समाज के दोहरे रवैये पर कटाक्ष किया है। जहाँ नीची जाति के व्यक्ति से जब अपना काम निकलवाना होता है, तब छुआछूत दिखाई नहीं देती। लेकिन जब उनके अधिकार देने की बात आती है तो छुआछूत नजर आती है। जब भूंगी से अपना काम निकलवाना था, तब महेश नाथ बाबू को

उनकी नीची जाति नहीं दिखाई दी। लेकिन जब उन्हें उनके लड़के का ध्यान रखने की बात आई, तब छुआछूत की बात आ गई और उन्हें वह नीची जाति का दिखाई देने लगा।

कहते है दूध का दाम कोई नहीं चूका सकता और आज भूंगी के बेटे को यह दाम मिल रहा था। इस कहानी में प्रेमचंद जी ने दिखाया है कि इंसान कितना स्वार्थी होता है इसके साथ-साथ इसमें समाज में जात-पात, ऊँचनीच और छुआछूत जैसी समस्याओं के बारे में भी बताया गया है यह कहानी गरीबों के प्रति अमीरों के नजर ही को दिखाती है। जब जरूरत पड़ी तो ऊंची जाति के लोग एक अछूत का दूध तक अपने बच्चों को पिलाने के लिए तैयार हो गए। उस वक्त वह गूंगी को खूब खुशामद करते है, लेकिन मतलब पूरा होने के बाद वह उसके साथ एक अछूत की तरह ही व्यवहार करने लगे; कड़े नियम तो सिर्फ गरीबों के लिए थे अमीर तो अपने स्वार्थ के हिसाब से उसमें बदलाव करते रहते थे।

हम सभी जानते हैं कि, मां के दूध में जो तत्व होते हैं वह दुनिया के किसी चीज में नहीं होते मां का दूध बच्चों के दिमाग को मजबूत बनाता है, इसलिए बच्चों को मां का दूध पिलाना बेहद जरूरी है। जिस दूध पर मंगल का हक था, उसे छीन कर महेश नाथ के बेटे को पिलाया गया। उपर के दूध की वजह से मंगल बीमार रहने लगा और कमजोर रह गया। जिस औरत ने महेश नाथ के बच्चे का पेट अपने दूध से भरा उसी के अनाथ बच्चे को उन लोगों ने भूखा मरने के लिए छोड़ दिया था।

इसमें यह भी बताया गया है कि पहले लड़के लड़कियों में भेदभाव किया जाता था बेटी होने पर दुख और बेटा होने पर जश्न मनाया जाता था। भूख इंसान को इतना बेबस कर देती है कि इतने अपमान और डांट के बाद भी मंगल को इस दरवाजे पर वापस जाना पड़ा। कहते हैं कि, जो जन्म दे सिर्फ वही माँ नहीं होती बल्कि जो पालती है, वह भी माँ होती है और यह भी सच है कि एक माँ का एहसान कभी नहीं चुकाया जा सकता। मंगल की माँ ने सुरेश को पाला था और इसी कहानी का शीर्षक यह बताता है कि गरीबों को अपनी सेवा के बदले में अपमान मिलता है और उसे डर-डर की ठोकरे खानी पड़ती है। भूंगी के दूध का दाम उन लोगों ने उसके बच्चे को बेकार करके चुकाया था

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. प्रेमचंद का जन्म .... में हुआ।

   अ) सन 1880 ब) सन 1871 क) सन 1860 ड) सन 1961

2. प्रेमचंद की मृत्यु .... में हुई।

   अ) सन 1926 ब) सन 1990 क) सन 1920 ड) सन 1936

3. दूध का दाम .... विधा की रचना है।

   अ) नाटक ब) रेखाचित्र क) कहानी ड) उपन्यास

4. बाबू महेशनाथ की .... बेटियाँ थी।

अ) चार ब) तीन क) दो ड) एक

5. भूंगी ने महेशनाथ के बेटे को .... समय तक दूध पिलाया।

अ) एक वर्ष ब) बारह दिन क) छह महीने ड) दस महीने

6. भूंगी के पति का नाम............ था।

अ) सुरेश ब) मंगल क) गुदड ड) महेश

7. सुरेश का रोना .... आवाज जैसा था।

अ) रेल का इंजिन ब) बस की हॉर्न क) साइकिल की घंटीड) कोयल की कुक

8. बाबू महेशनाथ अपने गाँव के .... थे।

अ) मुखिया ब) जमींदार क) कोतवाल ड) सरपंच

9. गुडद .... बीमारी से मर गया था।

अ) प्लेग ब) बुखार क) केंसर ड) टी.बी.

11. भूंगी का अपना बेटा .... महीने का था।

अ) ३ महीने ब) ६ महीने क) ४ महीने ड) ९ महीने

11. भूंगी को दान दक्षिना में............ साड़ियाँ मिली थी।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

12. भूंगी .... कांटने से मर गई थी।

अ) सांप ब) बिच्छू क) कुत्ता ड) शेर

1.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

उजड़–वीरान, गावदी–मंदबुद्धी, बरौठे–बैठक, चुडे- कंगन, बीघा–जमीन मापने की इकाई, टाट–जूट से बनाया गया जालनुमा कपड़ा, सकोरा–मिट्टी का बर्तन, साइत–मुहरत, फरियाद- विनती, लाजिम- आवश्यक, तब्दीली–परिवर्तन, जायदाद–सम्पत्ति, बदहजमी–अपच, गलीज–मैला, तजवीज–सलाह, निरीह- बेचारा, प्रभुत्व–अधिकार

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- अ, 2- ड, 3- क, 4- ब, 5- अ

6- क,   7- अ,   8- ब,   9- अ,   10- ब,

11- ब,   12- अ

1.7 सारांश

1. जातिप्रथा के कारण उपजी अमान्यता को रेखांकित करनेवाली ढेर सारी कहानियाँ प्रेमचंद जी ने लिखी है प्रस्तुत कहानी भी इन्ही कहानियों में से एक है इस कहानी में लेखक ने जातिप्रथा को रेखांकित किया है।
2. मंगल की माँ ने सुरेश को पाला था और इसी कहानी का शीर्षक यह बताता है कि, गरीबों को अपनी सेवा के बदले में अपमान मिलता है।
3. इस कहानी में प्रेमचंद ने समाज के दोहरे रवैये पर कटाक्ष किया है। जहाँ नीची जाति के व्यक्ति से जब अपना काम निकलवाना होता है, तब छुआछूत दिखाई नहीं देती।

1.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) दूध का दाम कहानी में जाति प्रथा।

2) दूध का दाम कहानी की भूंगी।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'दूध का दाम' कहानी का उदेश्य स्पष्ट कीजिए।

2) भूंगी की मृत्यु के बाद मंगल की क्या स्थिति हुई?

3) वाह रे आपका धर्म! इस वाक्य में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

4) ''लोग कहते है कि दूध का दाम कोई नहीं चूका सकता और मुझे दूध का यह दाम मिल रहा है'' इस कथन के मर्म को स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

'दूध का दाम' कहानी पर एकांकी लेखन कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

प्रेमचंद - मानसरोवर (कहानी संकलन भाग २) की अन्य कहानियाँ पढ़िए

❑❑❑

इकाई 1

3. पोस्टमैन–शैलेश मटियानी

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 शैलेश मटियानी का परिचय

1.3.2 पोस्टमैन – कहानी का परिचय

1.3.3 पोस्टमैन – कहानी की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने के बाद आप –

- शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य से परिचित होंगे।
- पोस्टमैन–कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- पोस्टमैन के जीवन को समझ सकेंगे।
- कुमाऊं अंचल की लोकभाषा एवं लोकसंस्कृति से परिचित हो सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नई कहानी ने अपने आपको पिछली कहानी परंपरा से अलग करने की कोशिश की। बदलते वातावरण के साथ नई कहानियाँ लिखी जाने लगी। इन नई कहानियों में आंचलिकता बोध की कहानियां विशेष है। नई कहानी विशेष अंचल या क्षेत्र के जीवन को अभिव्यक्त करने में सफल रही।

अंचल किसी निश्चित भूभाग को कहते है। किसी अंचल यानी निश्चित भूभाग के निवासियों का रहन-सहन, वेशभूषा, रीतिरिवाज तथा लोक संस्कृति को जिस कथा में दर्शाया गया हो उसे आंचलिक कथा कहते है। हिन्दी के प्रमुख आंचलिक कथाकारों में नागार्जुन, फनीश्वरनाथ रेणु, शैलेश मटियानी, देवेन्द्र सत्यार्थी, रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा आदि है।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 शैलेश मटियानी का परिचय :

शैलेश मटियानी नई कहानी आंदोलन के दौर के कहानीकार एवं प्रसिद्ध गद्यकार थे। शैलेश मटियानी का जन्म 14 अक्टूबर 1931 को उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के बाड़ेछीना नामक गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम रमेशचंद्र सिंह मटियानी था। बारह वर्ष की अवस्था में उनके माता-पिता का देहांत हो गया था, तब वे पाँचवीं कक्षा में पढ़ते थे, इसीलिए उनका पालन-पोषण चाचा लोगों के संरक्षण में हुआ। निरंतर विद्याध्ययन में व्यवधान पड़ता रहा और पढ़ाई रुक गई। इस बीच उन्हें बूचड़खाने तथा जुए की नाल निकालने का काम करना पड़ा। पाँच साल बाद 17 वर्ष की उम्र में उन्होंने फिर से पढ़ना शुरु किया। उन्होंने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की तथा रोजगार की तलाश में पैत्रिक गाँव छोड़कर 1951 में दिल्ली आ गए। यहाँ वे 'अमर कहानी' के संपादक, आचार्य ओमप्रकाश गुप्ता के यहाँ रहने लगे। 'अमर कहानी' और 'रंगमहल' से उनकी कहानी पहले ही प्रकाशित हो चुकी थी। इसके बाद वे इलाहाबाद गए। उन्होंने मुज़फ़्फ़र नगर में भी काम किया। दिल्ली आकर कुछ समय रहने के बाद वे बंबई चले। बंबई से फिर अल्मोड़ा और दिल्ली होते हुए वे इलाहाबाद आ गए और कई वर्षो तक वहीं रहे। 1992 में छोटे पुत्र की मृत्यु के बाद उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। जीवन के अंतिम वर्षों में वे हल्द्वानी आ गए। विक्षिप्तता की स्थिति में उनकी मृत्यु 24 अप्रैल 2001 को दिल्ली के शहादरा अस्पताल में हुई। 1950 से ही उन्होंने कविताएँ और कहानियाँ लिखनी शुरू कर दी थीं। शुरु में वे रमेश मटियानी 'शैलेश' नाम से लिखते थे। उनकी आरंभिक कहानियाँ 'रंगमहल' और 'अमर कहानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उन्होंने 'अमर कहानी' के लिए 'शक्ति ही जीवन हैफ (1951) और 'दोराहा' (1951) नामक लघु उपन्यास भी लिखे। उनका पहला कहानी संग्रह 'मेरी तैंतीस कहानियाँ' 1961 में प्रकाशित हुआ। उनकी कहानियों में 'डब्बू मलंग', 'रहमतुल्ला', 'पोस्टमैन', 'प्यास और पत्थर', 'दो दुखों का एक सुख' (1966), 'चील', 'अर्द्धांगिनी', 'जुलूस', 'महाभोज', 'भविष्य' और 'मिट्टी' आदि विशेष उल्लेखनीय है। कहानी के साथ ही उन्होंने कई प्रसिद्ध उपन्यास भी लिखे। उनके कई निबंध संग्रह एवं संस्मरण भी प्रकाशित हुए। उन्होंने 'विकल्प' और 'जनपक्ष' नामक दो पत्रिकाएँ निकाली।

कहानी संग्रह– 'मेरी तैंतीस कहानियाँ' (1961), 'दो दुखों का एक सुख' (1966), 'दूसरों के लिए' (1967), 'सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ' (1968), 'सफ़र पर जाने के पहले' (1969), 'हारा हुआ' (1970), 'अतीत तथा अन्य कहानियाँ' (1972), 'मेरी प्रिय कहानियाँ' (1972), 'पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ' (1973), 'हत्यारे' (1973), 'बर्फ़ की चट्टानें'(1974), 'जंगल में मंगल' (1975), 'महाभोज' (1975), 'चील' (1976), 'प्यास और पत्थर' (1982), 'नाच, जमूरे नाच' (1989), 'माता तथा अन्य कहानियाँ' (1993), 'भविष्य तथा अन्य कहानियाँ', 'अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ', 'भेंड़े और गड़ेरिए', शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ (1996; विभोर प्रकाशन, इलाहाबाद से, पुनः विभा प्रकाशन, चाहचंद रोड, इलाहाबाद से–2013)

उपन्यास– 'बोरीवली से बोरीबन्दर' (1959), 'कबूतरखाना' (1960), 'हौलदार' (1961), 'चिट्ठीरसैन' (1961), 'तिरिया भली न काठ की' (1961), 'किस्सा नर्मदाबेन गंगू बाई' (1961), 'चौथी मुट्ठी' (1961), 'बारूद और बचुली' (1962), 'मुख सरोवर के हंस' (1962), 'एक मूठ सरसों' (1962), 'बेला हुई अबेर'(1962), 'कोई अजनबी नहीं' (1966), 'दो बूँद जल' (1966), 'भागे हुए लोग' (1966), 'पुनर्जन्म के बाद' (1970), 'जलतरंग' (1973), 'बर्फ़ गिर चुकने के बाद' (1975), 'उगते सूरज की किरण' (1976), 'छोटे–छोटे पक्षी' (1977), 'रामकली' (1978), 'सर्पगन्धा' (1979), 'आकाश कितना अनंत है' (1979), 'उत्तरकांड, डेरेवाले' (1980), 'सवित्तरी' (1980), 'गोपुली गफूरन' (1981), 'बावन नदियों का संगम' (1981), 'अर्द्ध कुम्भ की यात्रा' (1983), 'मुठभेड़' (1983), 'नागवल्लरी' (1985), 'माया सरोवर' (1987), 'चंद औरतों का शहर' (1992)

निबंध और संस्मरण– 'मुख्य धारा का सवाल', 'कागज की नाव' (1991), 'राष्ट्रभाषा का सवाल', 'यदा कदा', 'लेखक की हैसियत से', 'किसके राम कैसे राम' (1999), 'जनता और साहित्य'(1975), 'यथा प्रसंग', 'कभी–कभार' (1993), 'राष्ट्रीयता की चुनौतियाँ' (1997), 'किसे पता है राष्ट्रीय शर्म का मतलब' (1995)

सम्मान– प्रथम उपन्यास 'बोरीवली से बोरीबंदर तक' उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत; 'महाभोज' कहानी पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'प्रेमचंद पुरस्कार'; सन् 1977 में उत्तर प्रदेश शासन की ओर से पुरस्कृत; 1983 में 'फणीश्वरनाथ रेणुफ पुरस्कार' (बिहार); उत्तर प्रदेश सरकार का 'संस्थागत सम्मान'; देवरिया केडिया संस्थान द्वारा 'साधना सम्मान'; 1994 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय द्वारा 'डी.लिट.' की मानद उपाधि; 1999 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'लोहिया सम्मान';

1.3.2 पोस्टमैन कहानी का परिचय :

पोस्टमैन जिसे हम डाकिया कहते हैं। 'पोस्टमैन' कहानी इसी डाकिए के जीवन पर आधारित है। इस कहानी में लेखक ने कुमाऊनी अंचल के ग्रामीण परिवेश का, वहां के जीवन का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है। एक पोस्टमैन है जिसका नाम है दयाराम, ब्रांच– पोस्ट ऑफिस, बेनीनाग में काम करता है; और हफ्ते में दो बार ड्यूटी करने पास वाले गांव में जाता है। पहाड़ों में गुजर करने वाले स्त्रियों के दर्द की अभिव्यक्ति इस

कहानी में है। उन स्त्रियों की, जिनके पति फौज में है और वह अपने पतियों से दूर गांव में जीवन गूजार रही है। पोस्टमैन दयाराम इन फौजी सैनिकों की कुशलता का समाचार लाता है और गांव के लोग पोस्टमैन को जब शुभ समाचार प्राप्त करते हैं तो तिलक- दक्षिणा आदि करते हैं और अशुभ समाचार प्राप्त करने पर उसको बुरा-भला कहते हैं। इस कहानी में लेखक ने पोस्टमैन दयाराम के माध्यम से उन स्त्रियों, माताओं, बहनों और परिजनों के दुख को भी बताने का प्रयास किया है, जिनके अपने सीमा पर शहीद होते हैं।

यहां कहानी दयाराम के मन के भीतर चल रही है दयाराम की कल्पना को आधार बनाकर लेखक ने कहानी को बड़ी ही मार्मिकता से व्यक्त किया है। गांव की स्त्रियों के दुख से किस तरह दयाराम टूटता है; उसे हर समय यह डर लगा रहता है कि, न जाने किस लिफाफे या तार में न जाने किसके मरने की सूचना या खबर आ जाए और इसी से वह इतना टूट जाता है, इतना डर जाता है कि जसौत सिंह के घर आया तार देने की उसकी हिम्मत नहीं होती।

इसी कहानी में हम देखेंगे कि पोस्टमैन दयाराम के मानसिक द्वंद्व को किस तरह से सफलतापूर्वक लेखक ने उजागर किया है। कहानी की भाषा में लोकभाषा के शब्द और लोकसंस्कृति का बहुत सुंदर निर्वहन देखने को मिलता है। भाव की गहनता को निभाने वाला शिल्प भाषा के संयम और उत्तेजना में स्पष्ट रूप से दिखता है। पात्रानुकूल संवाद है। कमला और दयाराम का संवाद इसका उदाहरण है। कुमाऊनी भाषा की शब्द योजना कहानी को जीवंत बनाती है।

1.3.4 पोस्टमैन कहानी की समीक्षा :

शैलेश मटियानी जी द्वारा लिखित प्रस्तुत कहानी उत्तर प्रदेश के कुमाऊं अंचल के दयाराम नामक पोस्टमैन के इर्द गिर्द घूमती है। पोस्टमैन दयाराम जब इस अंचल में डाक बांटने जाते हैं तब उसकी खातिरदारी अच्छी-बुरी खबर के आधार पर होती है। एक बार जब दयाराम मृत्यु का तार देने जाता है तो उसकी जान के लाले पड़ जाते हैं। ऐसे ही एक अवसर पर पोस्टमैन दयाराम बहाना बनाकर तार को अपने वरिष्ठ अधिकारी पांडेय जी को दे देता है। पांडेय जी के लौटने तक वह दिवास्वप्न में ही डूबा रहता है कि, ना जाने तार का क्या परिणाम निकलेगा? जब पोस्टमैन दयाराम के गांव के प्रधान जसौत सिंह नेगी के नाम से उनके बेटे रतनवा की ओर से भेजी गई चिट्ठी को देने गया तो चिट्ठी हाथ में लेते हुए प्रधान ने आवाज दी- ''अरी बहु! पोस्टमैन सैप के लिए दरी तो डाल दे, चा-तमाकू पीला'' तत्पश्चात प्रधान दयाराम की ओर मुड़कर उसे चिट्ठी पढ़कर सुनाने की विनती करते हैं। चिट्ठी में घर के सभी बड़े-छोटे के प्रति आदर सत्कार की बातें लिखी हुई थी। छोटे भाई की शादी की बातों का भी जिक्र किया गया था। रतनुआ अपनी ड्यूटी के बारे में भी बात करता है छुट्टी पर साल भर बाद आने की बात करता है। अपने तरफ सब कुछ कुशल होने की बात करता है। पोस्टमैन दयाराम चिट्ठी समाप्त कर आगे के घरों की ओर बढ़ जाता है।

कमस्यारी गांव से पोस्टमैन दयाराम लौटा, तो शाम हो आई थी। ब्रांच पोस्ट-ऑफिस बेनीनाग में वह पोस्टमैन था। नया-नया नौकरी पर लगा था। हाई स्कूल पास करने के बाद बेकार पड़ा था। उसके पिता हरकारे की ड्यूटी करते थे। उन्होंने ही शहर पोस्टमास्टर के यहां बेटे को यह पोस्टमैन की नौकरी दिलाई थी। जब

किसी का मनी ऑर्डर आता और दयाराम उसे देता तो लोग पोस्टमैन को तिलक लगाते और दक्षिणा देते थे। अपनी खाकी वर्दी पहनकर, खाकी झोला कंधे से लटकाते, दयाराम जब गांव में जाता, तो जिस घर के समीप भी पहुंचता, औरतें अपना काम छोड देती और बूढ़ों के हाथ में चिलम की डाली थमी रह जाती सब की जान पर एक ही बात होती..... ''पोस्टमैनसैप।''

लड़ाई के समय में कुमाऊं गांव के अधिकांश बेटे पलटन में भर्ती हो गए थे। आर्थिक विवशताओं ने उन्हें अपने परिजनों, अपनी धरती से अलग होने को बाध्य किया था। पोस्टमैन दयाराम को मुवाणी गांव की बात याद है। एक तार वह ले गया था; धन सिंह बिष्ट का बेटा मारा गया था पलटन में, कश्मीर की लड़ाई में। तार दयारामने खुद पढ़के सुनाया था और उसकी जान खतरे में पड़ गई थी। धन सिंह की बहू दरांती लेकर दयाराम को मारने आई थी। उसे खूब बुरा-भला बोली थी; दयाराम के माथे पर पसीना आ गया था, दयाराम कहना चाहता था, 'मुझे क्यों गालियां देती है दीदी? मैंने तो तुम्हारे स्वामी को गोली नहीं मारी' पर, कह वह कुछ नहीं पाता था। उसके करुण विलाप के आगे उसकी वाणी मूक हो गई थी।

सोमवार का दिन था, कमस्यारी गांव की तरफ जाने की बारी थी। ब्रांच पोस्टमास्टर पांडेय चिट्ठीयां सॉर्ट कर रहे थे और दयाराम कुछ खोया-खोया सा अपनी डाक थैली में भर रहा था कि सहसा वह बिच्छू के काटे सा चहक उठा - उसकी तरफ पोस्ट मास्टर पांडेय तार का एक लिफाफा बढ़ा रहे थे तार या उस चिट्ठी का पता था जसौत सिंह नेगी, कमस्यारी नाम देखते ही पोस्टमैन दयाराम विचलित हो उठा। जब पोस्टमास्टर पांडेय ने दयाराम से कारण पूछा तो उसने जुकाम होने का बहाना बना दिया। इस पर पोस्टमास्टर पांडेय ने दयाराम से सहानुभूति जताते हुए कहा कि, 'तुम ड्यूटी पर मत जाओ, कमस्यारी की तरफ' तो बड़ी तेज ठंडी हवा बहती है, कहीं निमोनिया ना हो जाए। उसके बाद पोस्टमास्टर पांडेय ने दयाराम को दुकान में ही रहकर टिकट लिफाफों का हिसाब-किताब रखने की जिम्मेदारी दे दी।

पिछले दिनों हुए कुछ अप्रिय घटनाओं को याद करके दयाराम कहीं खोया रहता है, तो पोस्टमास्टर पांडेय उसे झकझोरते हुए कहते हैं 'बुखार ज्यादा चढ़ आया है क्या, बेटे दयाराम?' तत्पश्चात पांडेय जी दयाराम को संबोधित करते हुए कहते हैं कि 'तकदीर का तो कच्चा है बेटे! तार लेकर जसौत सिंह नेगी के घर गया अल्मोड़ा जो उनकी बेटी ब्याही है उसको लड़का हुआ है बेचारों ने खूब आव-भगत की! ऊपर से आठ आने दक्षिणा दी कि ब्राह्मण आदमी हो, खुशखबरी लाए हो। आखिर में पांडेय जी अपने जेब से चवन्नी निकाल कर दयाराम को देते हुए बोले - चलने लगा था कि प्रधान की बहू प्रधान से बोली कि चार आने दक्षिणा छोटे पोस्टमैन के लिए भी भेज दीजिए, बड़ी लक्ष्मी बेटी है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. शैलेश मटियानी का जन्म .... में हुआ।

   अ) सन 1850　　ब) सन 1931　　क) सन 1860　　ड) सन 1961

2. शैलेश मटियानी की मृत्यु .... में हुई।

अ) सन 2002 ब) सन 2003 क) सन 2001 ड) सन 1970

3. शैलेश मटियानी का मूल नाम .... था।

अ) रमेशचंद्र सिंह ब) विक्रमसिंह क) उदयसिंह ड) विजयसिंह

4. पोस्टमैन का काम............ हैं।

अ) पत्र लिखना ब)खरीद-फरोक्त करना

क) पत्र पढना ड) पत्र पहुंचाना

5. मनी ऑर्डर द्वारा .... किया जाता है।

अ) पैसा भेजा जाता है ब) तार भेजा जाता है

क) पत्र भेजते है ड)राखी भेजते है

6. रतन सिंह नेगी के पिता का नाम .... है।

अ) जसवंत सिंह नेगी ब) विक्रमसिंह नेगी क) उदयसिंह नेगी ड) विजयसिंह नेगी

7. कमस्यारी गांव का पोस्ट ऑफिस .... में था।

अ) देहरादून ब) बेनी नाग क) देहली ड) मुंबई

8. पत्र .... से आया था।

अ) कार्यालय ब) घर

क) मिलिट्री क्वार्टर पंजाब ड) मिलिट्री क्वार्टर देहरादून

9. दयाराम .... है।

अ) एक पोस्टमैन ब) एक पोस्टमास्टर क) किसान ड) पिता

10. मनी ऑर्डर आने पर पोस्टमैन का सम्मान .... प्रकार किया जाता था।

अ) तिलक-दक्षिणा देकर ब) गाली देकर क) आरती उतारकर ड) भोजन देकर

1.5 पारिभाषिक शब्द- शब्दार्थ

सिपोय- सिपाही, बखत- वक्त, आखर- वक्त, विध्या- विद्या, दाज्यू- बड़ा भाई, कोसिस- प्रयास, मातम- शौक, काया- शरीर, विलाप- रोना, पीटना, निकटवर्ती- करीब का, मुक- चुप, फर्क- अंतर, तकदीर- किस्मत, भाग्य, विस्मय- हैरानी, अपार- जिसका पार न पाया जा सके, वाणी- आवाज, जुबानी- याद, चरणतल- पैरों के नीचे, वज्र- पत्थर, कठोर, हरक़रा- डाकिया।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1– ब, 2– क, 3– अ, 4– ड, 5– अ

6– अ, 7– ब, 8– ड, 9– अ, 10– अ

1.7 सारांश

1. शैलेश मटियानी द्वारा लिखित 'पोस्टमैन' कहानी में लेखक हमें डाकिये के जीवन के बारे में जानकारी देते है। लोग डाकिये के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा वह अपने साथ अपने पत्रों में खबर लाता था।
2. बच्चे को जन्म देने की खबर आने पर लोग खुश होकर और मिठाई खिलाकर पोस्टमैन का स्वागत करते है और कभी–कभी जब वह परिवार के किसी सदस्य के गुजर जाने की खबर लाता था तो लोग उसे मारने के लिए दौड़ पड़ते थे। पहली बार जब पोस्टमैन ने ठाकुर को खबर दी की उसका बेटा सेना में कुशल है तो उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया गया। जब खबर आई कि कश्मीर युद्ध में बेटे की मौत हो गई है तो उसे मारने के लिए उसके पीछे दौड़ पड़े।
3. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने पोस्टमैन के जीवन को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया हैं।
4. कुमाऊ अंचल की लोकभाषा और लोकसंस्कृति का परिचय प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मिलता हैं।

1.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) कुमाऊ अंचल की लोक भाषा और लोकसंस्कृति।

2) पोस्टमैन दयाराम का चित्रन किजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. शैलेश मटियानी के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए उनकी पोस्टमैन कहानी की समीक्षा कीजिए।
2. पोस्टमैन दयाराम के व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

फणीश्वरनाथ रेणू द्वारा लिखित ठेस इस आंचलिक कहानी को पढ़िए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

हिन्दी में लिखित डाकीये के जीवन पर आधारित अन्य कहानियों को पढ़िए।

❑❑❑

इकाई 2
कहानी साहित्य

4. अपना रास्ता लो बाबा – काशिनाथ सिंह

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 काशिनाथ सिंह का परिचय

4.3.2 'अपना रास्ता लो बाबा' कहानी का परिचय

4.3.3 'अपना रास्ता लो बाबा' कहानी का कथानक

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.8.1 ससंदर्भ वाक्यांश

4.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य :

इस एकाई के अध्ययन के बाद आप –

1) काशिनाथ सिंह के जीवन परिचय से अवगत हो जायेंगे।
2) काशीनाथ सिंह के साहित्यिक कृतियों से परिचित होंगे।
3) महानगरीय जीवन परिचित हो जायेंगे।
4) देहात से आये हुए व्यक्ति के बारे में महानगरीय लोगों विचारों से अवगत हो जायेंगे।
5) देहात से आये हुए मेहमान के प्रति होनेवाले भेदभाव को समझ सकेंगे।
6) छात्र रिश्ते- नातों की अहमियत को समझ सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना :

कहानी कहने और सुनने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। प्राचीन कहानी की सुरुआत एक था राजा एक थी रानी से हुआ करती थी। हमारे बचपन में दादा-दादी इस प्रकार की कहानियाँ सुनाते थे। हम भी मन लगाकर सुनते थे।

आज की कहानी बहुआयामी है। आज कहानी के कथ्य और शिल्प में बदलाव आया है। आज का युग विज्ञान का युग है। भागदौड का युग है। ऐसे में बडी रचना पढने के लिए किसी के पास समय नहीं है। कहानी कम समय में पढी जाती है और हमारी जिज्ञासा को पूरी करती है। इसी कारण आज वह लोकप्रिय विधा के रूप में विकसित हुई है।

काशीनाथ सिंह समकालीन कहानीकारों में शीर्षस्थ है। वे कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंदजी को आदर्श मानते है। उन्होंने कुछ हद तक प्रेमचंद परंपरा को आगे बढाया है। उनके अधिकांश कहानियों में सामाजिक विसंगति, आर्थिक विषमता, अवसरवादिता, पूँजीपतियों से साँठ-गाँठ, मानसिक विकृतियों का चित्रण मिलता हैं। उनके कहानियों में देहात तथा महानगर का चित्रण मिलता हैं।

'अपना रास्ता लो बाबा' आदमी की आत्मीयता खोने की कहानी है। अपने जड से कटती हुई युवा पीढी की कहानी है। महानगरीय लोगों की मानसिकता का मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है। बेंचू बाबा देवनाथ का पता पूछते -पूछते उसके घर तक पहुँचते है। इस कहानी का नायक देवनाथ है, जो दस वर्ष पूर्व महानगर में आकर बस चुका है। उसके पत्नी का नाम आशा है। उसके दो संतान हैं। बेंचू बाबा देवनाथ का ताया है। जो गाँव में रहते है। बीमारी के कारण अस्पताल में दिखाने के लिए महानगर में आये है। वे अपने साथ देहात की कुछ चीजे लाते है (गन्ने का रस, हो रहा)। बेंचू बाबा को आशा के द्वारा बुसी (बुसी/खराब हो चुकी) मिठाई दी जाती है। रस को बच्चे मोरी में लुढ़का देते है। बच्चे बाबा के प्रति अलग विचार करते है। देवनाथ बाबा को अस्पताल में दिखता है। डॉ गर्ग बेंचू बाबा को कैन्सर होने की बात कहते है। देवनाथ बाजार से दवाईयाँ लाता है और बेंचू बाबा को कौन-सी दवाई कब खानी है यह बताता है। बेंचू बाबा अपने गाँव जाना चाहते है तब देवनाथ को लगता है कि बेंचू बाबा का गाँव जाना मतलब हमेशा हमेशा के लिए विदा लेना है।

प्रस्तुत कहानी में महानगरीय जीवन का चित्रण मिलता है। बुजुर्गो की दयनीय अवस्था से पाठक परिचित हो जाते है। देवनाथ के मन का अंतर्द्वंद्व दिखाई देता है। ग्रामीण व्यक्ति की सहजता, सरलता, सादगी, आत्मियता का परिचय बेंचू बाबा के रूप में मिलता है। आशा की संकुचित मानसिकता का परिचय मिलता है। देवनाथ अपनी पत्नी के सामने हताश दिखाई देता है।

4.3 विषय विवेचन :

4.3.1 काशिनाथ सिंह का परिचय :

काशिनाथ सिंह जी का हिंदी साहित्य में अनूठा स्थान हैं। वे बहुमूखी प्रतिभा के धनी हैं। वे साठोत्तरी पीढी के एक सशक्त कहानीकार, उपन्यासकार एवं संस्मरणकार हैं। उनका साहित्य समाज का जीता जागता चित्रण करता है।

काशिनाथ सिंह का जन्म 'जीयनपुर 'नामक गाँव के एक सामान्य कृषक परिवार में 1 जनवरी 1937 को हुआ। ग्रामीण परिवेश में जन्म होने के कारण उनका पालन –पोषण सामान्य ही रहा है। उनका बचपन सामान्य रहा है। उनके पिता का नाम नागरसिंह तथा माता का नाम बागेश्वरी था। काशिनाथ सिंह की प्रारंभिक शिक्षा 'जीयनपुर' गाँव के पास 'अमर शहीद विद्यामंदिर' में हुई। उन्होंन 1953 में हायस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

वे गणित विषय में कमजोर थे। काशीनाथ सिंहजी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक, परास्नातक और पीएच.डी की उपाधि हासिल की है। सन 1965 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से नौकरी की शरूआत की। वे प्रारंभ में प्राध्यापक के रूप में पढाते थे। वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने 31 की साल तक नौकरी की। वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विभाग में सचिव के रूप में भी काम कर चुके हैं। वे 8 दिसंबर 1996 में सेवानिवृत्त हुए। काशिनाथ सिंह को साहित्यिक बनाने में उनके बडे भाई नामवर सिंह जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। नामवर सिंह यह हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक है।

✻ रचनाएँ

✻ कहानी साहित्य

लोग बिस्तरों पर (1968), सुबह का डर (1975), आदमी नामा (1978), नई तारीख (1979), कल की फटेहाल कहानियाँ (1980), सदी का सबसे बडा आदमी (1986), कहानी उपाख्यान, प्रतिनिधि कहानियाँ (1980), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (1980), संकलित कहानियाँ (2010), संपूर्ण कहानियाँ (2003), खरौच (2004)

✻ उपन्यास

अपना अपना मोर्चा (1972) काशी का अस्सी (2002) रेहान पर रग्घू (2008) महुआ चरित (2012) उपसंहार (2014)

✻संस्मरण

याद हो कि न याद हो (1992) आछे दिन पाछे गए, (2004) घर का जोगी जोगडा (2006)

✻ नाटक:–

घोआस (1969)

✻ शोध –आलोचना:–

आलोचना भी रचना है (1996), हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ (1976) लेखक की छेडछाड (2013)

✻ साक्षात्कार:–

गपोडी से गपशप (2013)

✻ संपादन:– परिवेश (अनियतकालीन पत्रिका) कशी के नाम (2007) नामवर सिंह के पत्रों का संचयन)

✻ सन्मान:–

साहित्य अकादमी पुरस्कार, शरद जोशी सन्मान, साहित्य भूषण सन्मान, कथा सन्मान, राजभाषा सन्मान, भारत भारती पुरस्कार,

4.3.2 'अपना रस्ता लो बाबा' कहानी का परिचय :

'अपना रास्ता लो बाबा' यह काशिनाथ सिंह की ख्याति प्राप्त कहानी है। यह कहानी महानगरीय लोगों वास्तविकता को प्रस्तुत करती है। बेंचू बाबा देवनाथ का पता पूछते-पूछते उसके घर तक पहुँचते है। इस कहानी का नायक देवनाथ है, जो दस वर्ष पूर्व महानगर में आकर बस चुका है। उसके पत्नी का नाम आशा है। उसके दो संतान हैं। बेंचू बाबा देवनाथ का ताया है, जो गाँव में रहते है। बीमारी के कारण अस्पताल में दिखाने के लिए महानगर में आते है। वे अपने साथ देहात की कुछ चीजे लाते है (गन्ने का रस, हो रहा)। बेंचू बाबा को आशा के द्वारा बुसी (बुसी/खराब हो चुकी) मिठाई दी जाती है। रस को बच्चे मोरी में लुढ़का देते है। बच्चे बाबा के प्रति अलग विचार करते है। देवनाथ बाबा को अस्पताल में दिखता है। डॉ. गर्ग बेंचू बाबा को कैन्सर होने की बात कहते है। देवनाथ बाजार से दवाईयाँ लाता है और बेंचू बाबा को कौन-सी दवाई कब खानी है यह बताता है। बेंचू बाबा अपने गाँव जाना चाहते है। तब देवनाथ को लगता है कि बेंचू बाबा का गाँव जाना मतलब हमेशा हमेशा के लिए विदा लेना है।

4.3.3 'अपना रास्ता लो बाबा' कहानी का कथानक :

देवानाथ सिगरेट खरीद रहे थे। इसी समय बगल के दुकान से आवाज सुनाई देती है। वह व्यक्ति देवनाथ के गली का नाम पूछ रहा था। उस गली में सैंकड़ो लोग रहते थे। वह आदमी किसी के भी घर जा सकता था। वह जानी पहचानी आवाज होने पर भी देखने का साहस नहीं करता है। जल्द घर पहुँच सके ऐसा रास्ता अपनाता है।

बच्चे घर में बच्चे हंगामा कर रहे है फिर भी आशा बच्चों को कुछ भी नहीं कहती है। देवनाथ बच्चों पर डाँटता है और आशा को यह सूचित करता है कि सिरदर्द हो रहा है। मैं आराम करने जा रहा हूँ कोई

आये तो उनसे बीमार होने की बात कहना। कुछ समय बाद फिर से आकर कहता है कि शहर से बाहर चले गये है यह बताना, द्वार मत खोलना। देवनाथ सोने का प्रयास करता है लेकिन नींद नहीं आती है । वह 'मानस नगर ममें बंगला बनवाने का सपना सजाता है। इसी समय बाहर की हलचल सुनाई देती है। पत्नी आशा ने दरवाजा खोल दिया। एक मेहमान ने पूछा कि यहीं कहीं देऊ नाम का किराएदार रहता है। देवनाथ के कान पर आवाज आती है। देवनाथ को अपने पत्नी की बुद्धि पर दया आती है। नीचे चले जाते है तो दिखाई देता है कि उनके पिताजी के बडे भाई है। वह कहता है कि बेंचू बाबा कहाँ से चले आ रहे है? आपको कोई तकलीफ तो नहीं हुई? बेंचू बाबा देहात से आये थे। उनके सिर पर गन्ने के रस का गगरा था। उसे हाथ में लेकर वे घर के अंदर प्रवेश करते है। वे देवनाथ को कई वर्षो के बाद देख रहे थे। देवनाथ के शरीर को छूकर देखते है और कहते है कि बचवा। देऊ! तू ही है न! सपना हो गया है तू। अरे अपना गाँव -घर हैकभी तो आया कर।

देवनाथ और बेंचू बाबा में बातचीत चल रही थी तभी उनके दो बच्चे वहाँ आते है। बाबा को पहचानते नहीं है। पहचानेंगे भी कैसे? जब वे छोटे थे तब देखा था। बेंचू बाबा बच्चों को अपने पास लेना चाहते है लेकिन बच्चे दूर चले गये। मेहमान की खातिरदारी करते हुए मेज पर गिलास और पानी भरा जग रखकर देवनाथ उपर चले गए।

देवनाथ की पत्नी आशा चाय बना रही थी। उसके बच्चे भी आशा को आँखों देखा हाल बता रहे थे। अर्थात बेंचू बाबा के बारे में कह रहे थे। देवनाथ अपनी पत्नी से कहता है कि सिर्फ चाय काम से नहीं चलेगा, तब आशा अपने पति से कहती है कि यह देहाती गँवार आदमी कौन है? बेंचू बाबा सुदामा के पिताजी है। आशा बेंचू बाबा के लिए पिछले हप्ते अगरवाल द्वारा दी गई मिठाई देती है ।देवनाथ मिठाई को सूँघ लेता है तब उसे पता चलता है कि यह मिठाई वासी है। अर्थात खाने लायक नहीं है। खराब हो चुकी है। देवनाथ मिठाई की तश्तरी लेकर कमरे में चला गया। वह देखता है कि बैठक में पानी बिखरा हुआ है। देवनाथ यह समझता है कि बाबा ने हाथ पैर धो लिए होंगे। देहात में रहने वाले बेंचू बाबा को यह कहाँ मालूम है कि बाथरूम में हाथ, पैर, मुँह धोया जाता है। जैसे देहात में कहीं भी हाथ पैर धोते है उसी तरह से धो लिए। वेंचू बाबा के पैरों से चादर मटमैली हो गयी थी। यह देवनाथ को अच्छा नहीं लगता है लेकिन वह कुछ भी नहीं कहता है। वह चाय तथा मिठाई बेंचू बाबा को खाने के लिए देता है। इस समय बेंचू बाबाने कहा कि ऐसी चीजें देहात में नहीं मिलती है।

बेंचू बाबा कमरे में दिखाई देने वाली हर चीज के बारे में देवनाथ से पूछते है और अंत में बताते है कि एक ही चीज की कमी है। वह कमी गाय की थी। वे गाँव के रहने वाले थे। उन्हें महानगर का वातावरण मालूम नहीं है। बाबा गगरा में जो गन्ने का रस लाया था उसे बच्चों को देने के लिए कहते है। बेंचू बाबा को लगता है कि ऐसी चीजे शहर में कहाँ मिलती होगी? बच्चे बाबा ने क्या लाया है? इसका इंतजार कर रहे होंगे। गगरा उपर ले जाने के लिए कहते है। इसी समय देवनाथ बेंचू बाबा से एक सवाल पूछते है कि आप किस मतलब से या काम से चले आये है? बाबा को यह सवाल बडा अटपटा-सा लगता है। वे अस्पताल में भरती होने के लिए आने की बात कहते है। अपनी बीमारी के बारे में बताते है। देवनाथ उदास होकर सारी बातें

सुनता रहता है। बेंचू बाबा ने अस्पताल के लिए पैसे बचाकर रखे थे। देवनाथ को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे देवनाथ को गन्ने का रस और होरहा उपर पहुँचाने के लिए कहते है। देवनाथ उपर के कमरे में चला जाता है। बच्चे पढाई कर रहे थे। बच्चे गगरा देखकर देवनाथ के पास दौडकर आते है। एक बच्चे को गगरी के उपर गोबर दिखाई देता है।

आशा देवनाथ से पूछती है कि बेंचू बाबा रात को यही ठहरेंगे क्या? देवनाथ पत्नी को समझाते हुए कहता है कि अस्पताल में भरती होने के लिए आये है। गाँव का पता नहीं है तुम्हें। वे सगे बडे भाई के समान हैं। दस साल ही तो हुए हैं वहाँ से आए हुए। यह बात सुनकर आशा को गुस्सा आता है। और वह अपने बेटे को साथ लेकर क्यों नहीं आए इस तरह का सवाल पूछती है, तब देवनाथ कहता है कि सुदामा अपने पिता को महत्व नहीं देता है। खेती के नुकसान के बारे में सोचकर नहीं आया होगा।

पति-पत्नी में उपर्युक्त बात चल रही थी तब बच्चे गगरी का रस मोरी में लुढ़का देते है। जब देवनाथ देखता है तब बच्चे के कान पकडता है। बच्चे उसके बदबू के बारे में बात करते है। आशा बचे हुए गन्ने के रस को उनके कामवाली बाई को देना चाहती है। देवनाथ निराश होकर बैठ जाता है। देवनाथ की पत्नी कहती है कि रोज -रोज का खाना मुझेसे नहीं बनेगा। अपनी बहू को लायें और किराये पर कमरा ले। आशा मानो यह सूचित करना चाहती है कि अस्पताल में आना -जाना, खान-पान सब करना कठीन है। देवनाथ पत्नी की बातों से तंग आकर उसके हाँ में हाँ मिलाते हुए यहीं कहता है कि गांव में मस्ती मारते फिरेंगे। फिर जिसकी तबियत खराब होगी यहीं चला आयेगा।

बेंचू बाबा पलंग पर लेटकर खर्राटे ले रहे थे। देवनाथ सूट पहनता है और बाबा को जगाता है। देवनाथ और बेंचू बाबा डॉक्टर गर्ग के अस्पताल में जाने के लिए निकलते है। स्कूटर पर बैठकर एक ओर बेंचू बाबा को मजा आ रहा था तो दूसरी ओर डर भी लग रहा था। डॉ. गर्गने बेंचू बाबा के गौर से देखा। डॉक्टर गर्गने देवनाथ के सामने बेंचू बाबा को कैंसर होने का संदेह प्रकट किया। बाबा का कैंसर पहले स्टेज पर था। सुरुआती मामला है। ठीक हो जायेगा यहीं शब्द वे सुनते है। डॉक्टर गर्ग को दिखाने के बाद दोनों भी घर की ओर चले आते है। इसी समय देवनाथ के मन में परेशानी होती है क्योंकि कैंसर कोई आसान बीमारी नहीं है। बाबा कोई पराये नहीं है।

देवनाथ बेंचू बाबा को घर छोड कर उनकी दवाईयाँ लाने के लिए बाजार जाता है। दवाईयाँ अलग अलग शिशियों में लेकर आत। है, कौन- सी दवा कब लेनी है यह बताता है। बेंचू बाबा के मन में दुःख होता है कि सुदामा के सामने अपने दर्द के बारे में कहने के बावजूद भी उसने कुछ नहीं किया। देवनाथ सुबह से भागदौड कर रहा है। दिनभर अपना नुकसान करके दौड रहा है। बेंचू बाबा दूसरे दिन गाँव जाने की बात कहते है। वह बेंचू बाबा को रोक सकता था पर ऐसा नहीं करता है। बाबा का जाना हमेशा हमेशा के लिए विदा लेने जैसा ही है क्योंकि कैन्सर की बिमारी से कोई नहीं बच पाता है।

प्रस्तुत कहानी महानगरीय लोगों मानसिकता का चित्रण करती है। गाँव के बेंचू बाबा की सादगी, आत्मीयता, सहजता, सरलता का परिचय मिलता है। बुजुर्गों की दयनीय अवस्था की जानकारी मिलती है। देवनाथ के मन में अतीत की स्मृति से अपराधबोध की भावना होती है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) 'अपना रस्ता लो बाबा' कहानी के कहानीकार का नाम .... है।

अ) काशिनाथ सिंह ब) कुसुम अंसल क) प्रेमचंद ड) माधवराव सप्रे

2) अपना रास्ता लो बाबा कहानी के देवनाथ की पत्नी का नाम.................. है।

अ) नमिता ब) अर्पिता क) आशा ड) उषा

3) अपना रास्ता लो बाबा कहानी के .... देहात से आये थे।

अ) रेंचू बाबा ब) केंचू बाबा क) संजू बाबा ड) बेंचू बाबा

4) बेंचू बाबा के सिर पर .... था।

अ) टोपी ब) टोकरी क) गगरा ड) लोटा

5) देवनाथ के.................. बच्चे थे।

अ) एक ब) दो क) तीन ड) चार

6) बेंचू बाबा के बेटे का नाम .... था।

अ) सुरज ब) सुयश क) सुजय ड) सुदामा

7) देवनाथ की पत्नी आशा ने तश्तरी में मिठाई के.................. टुकडे रखे थे।

अ) एक ब) तीन क) दो ड) चार

8) देवनाथ के घर में.................. मिठाई दी थी।

अ) नेताजी ब) सबरवाल क) अगरवाल ड) बनिए

9) देवनाथ बेंचू बाबा को .... डॉक्टर के पास ले गया।

अ) शाह ब) पटेल क) जाधव ड) गर्ग

10) स्कूटर पर .... को मजा आ रहा था।

अ) देवनाथ ब) बेंचू बाबा क) आसाराम ड) सुदामा

11) डॉ. गर्ग को बेंचू बाबा को .... होने का संदेह है।

अ) कैंसर ब) प्लेग क) चेचक ड) तपेदिक

12) आपना रास्ता लो बाबा कहानी के आशा के पति का नाम.................. है।

अ) सुदामा ब) देवनाथ क) देवराम ड) देवा

13) काशिनाथ सिंह का जन्म.................. गाँव में हुआ

अ) जीयनपुर ब) जौनपुर क) कानपुर ड) मथुरा

14) काशी काशिनाथ सिंह के पिता का नाम.................. था।

अ) नागरसिंह ब) नागसिंह क) नामसिंह ड) वालेदसिंह

15) काशीनाथ सिंह के माता का नाम।

अ) माहेश्वरी ब) राजेश्वरी क) बागेश्वरी क) विजयादेवी

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

* आदतन- आदत के अनुसार / स्वभावगत।
* उल्टे पाँव भागना (मु) - कहीं पहुंचते ही वहां से पूर्वस्थान की और चल देना/ बिना रूके तुरंत वापस लौट जाना।
* तश्तरी - छोटी थाली।
* बुसी - खाने की वस्तू जो खराब हो चुकी हो।
* गटक - निगल जाना, पी जाना।
* मुँह लटकाना- (मु) निराश होना/ उदास होना।
* महरी - बर्तन माँजने का काम करने वाली।
* मुँह फुलाना-(मु)- रूठ कर बैठ जाना या अप्रसन्नता होना।
* मेहर - दया/ कृपा /करूणा।
* दुखडा रोना- अपना दुःख किसी को बताना / दुःख जाहीर करना।
* फूटफूट कर रोना - (मु) जोर जोर से रोना /बहुत अधिक रोना।
* हरजा - नुकसान।

*   तडकें – सबेरे।

*   भुच्या – गँवार/ मूर्ख /जडमति।

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) अ) काशिनाथ सिंह।

2) क) आशा।

3) ड) बेंचू बाबा।

4) क) गगरा।

5) ब) दो।

6) ड) सुदामा।

7) क) दो।

8) क) अगरवाल।

9) ड) गर्ग।

10) ब) बेंचू बाबा।

11) अ) कैंसर।

12) ब) देवनाथ।

13) अ) जीयनपुर।

14) अ) नागरसिंह।

15) क) बागेश्वरी।

4.7 सारांश

1) 'अपना रस्ता लो बाबा' यह काशिनाथ सिंह की महानरीय जीवन पर प्रकाश डालनेवाली प्रसिद्ध कहानी है।

2) देवनाथ दस वर्ष पहले अपने गाँव से आकर शहर में बसा है। उसके पत्नी का नाम आशा है। उसके दो बच्चे है।

3) देवनाथ को सिगरेट पीने की आदत थी। सिगरेट लेने के लिए वह चला जाता है वहाँ जानी पहचानी आवाज सुनाई देती है। वह उसकी ओर अनदेखा करता है और छोटे से रास्ते से अपने घर आता है।

4) घर में बच्चों का शोरगुल चल रहा था। पत्नी आशा बच्चों को कुछ भी नहीं कहती है। देवनाथ बच्चों को डाँटकर उपर के मंजिल में जाते समय पत्नी से कहता है कि आराम करने के लिए उपर के मंजिल जा रहा हूँ। मैं बीमार हूँ कोई आये तो कह देना। थोडी देर बाद वापस आकर बताता है कि ये शहर से बाहर चले गये है यह बताना। कोई द्वार पर आये तो द्वार न खोलने की हिदायत भी पत्नी को देता है।

5) देवनाथ की पत्नी दरवाजा खोलती है। बेंचू बाबा देऊ नाम के किरायएदार आदमी के बारे में पूछते है।

6) देवनाथ नीचे आकर देखता है तो पिताजी के बडे भाई दिखाई देते है। वह बेंचू बाबा को घर में लेता है बेंचू बाबा गाँव से आते वक्त गन्ने का रस होरहा लेकर आये थे। बाबा को लगता था कि ये सारी चीजे महानगर में कहाँ मिलती होगी।

7) बाबा के चाय पान की व्यवस्था करने के लिए देवनाथ उपर चला जाता है। तब तक बेंचू बाबा अहाते में हाथ पैर धो लेते है। देहात के रहनेवाले होने के कारण महानगर में बाथरूम में हाथ मुँह धोना नही जानते है।

8) आशा बासी मिठाई के दो टुकडे देती है। देवनाथ को यह अच्छा नहीं लगता है पर चुप रहता है।

9) बेंचू बाबा देवनाथ के घर को पूरी तरह से निहारते है और अंत में कहते है कि घर में सब कुछ है बस एक गाय की कमी है। वे देहात की होने के कारण महानगर के जीवन से परिचित नहीं है।

10) बेंचू बाबा के शहर आने का कारण देवनाथ पूछता आहे तब उन्हे अच्छा नही लगता है।वे अस्पताल में दिखाने के लिए आने की बात कहते है।

11) देवनाथ की पत्नी आशा को बेंचू बाबा गँवार लगते है। वह अपने पति महोदय से पूछती है कि क्या रात को यही ठहरेंगे?

12) देवनाथ डॉक्टर गर्ग के पास बेंचू बाबा को ले जाते है डॉक्टर गर्ग बेंचू बाबा की बीमारी के बारे मे पूछते है। कैंसर होने की बात डॉक्टर गर्ग देवनाथ को बताते है। बेंचू बाबा की औषधी लाते है और कौन सी दवाई कब खानी है यह बताते है। बेंचू बाबा डॉक्टर ने क्या कहा इसके बारे में पूछते है बाबा दूसरे दिन सुबह गांव जाने की बात देवनाथ की सामने करते है देवनाथ चाहता तो रोक शकतात लेकिन वह कुछ भी नही कर पाया देवनाथ को यह मालूम हो गया था कि बेंचू बाबा का जाना यह हमेशा हमेशा के लिए जाना है। कैंसर जैसी बीमारी जो काही ठीक होने वाली नही है।

4.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) बेंचू बाबा का चित्रण कीजिए।

2) आशा का चित्रण कीजिए।

3) प्रमुख पात्रों का विवेचन कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1) 'आपना रास्ता लो बाबा' कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए।
2) अपना रास्ता लो बाबा कहानी का नाट्यरूपांतर कीजिए।
3) महानगरीय जीवन पर निबंध लिखिए।
4) महानगर और गाँव के लोगों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
5) अपने घर आए देहात के मेहमान का चरित्र चित्रण कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) काशीनाथ सिंह– लाल किले का बाज – कहानी
2) काशिनाथ सिंह– बैल– कहानी
3) काशीनाथ सिंह– कविता की नई तारीख– कहानी
4) ममता कालिया– बीमारी –कहानी

5 'जाँच अभी जारी हैं'

ममता कालिया

अनुक्रम

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 विषय विवरण

5.3.1 ममता कालिया का परिचय

5.3.2 'जाँच अभी जारी हैं' कहानी का परिचय

5.3.3 'जाँच अभी जारी हैं' कहानी का कथानक।

5.3.4 'जाँच अभी जारी हैं' कहानी की अपर्णा जोशी का चरित्र -चित्रण।

5.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

5.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

5.7 सारांश

5.8 स्वाध्याय

5.8.1 ससंदर्भ वाक्यांश

5.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

5.9 क्षेत्रीय कार्य

5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

5.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1) ममता कालिया के जीवन परिचय एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) बैंक क्षेत्र में चल रहे भ्रष्टाचार से अवगत होंगे।

3) नौकरी पेशा नारी की समस्या को समझ सकेंगे ।

4) बैंक के अधिकारियों द्वारा छोटी –सी बात का बतंगड कैसे बनाया जाता है? यह समझ सकेंगे।

5) अपर्णा के चरित्र से परिचित हो जायेंगे।

6) नौकरी पेशा। नारी के डर को समझ पायेंगे।

7) बैंकिंग व्यवस्था से परिचित होंगे।

8) जब किसी पर नौबत आती है तो कोई साथ नहीं देता है यह जान लेंगे।

5.2 प्रस्तावना :

'जाँच अभी जारी हैं' ममता कालिया की नारी उत्पीडन पर लिखी कहानी है। पुरूष के षड्यंत्र में पिसती नारी की व्यथा है। इस कहानी की अपर्णा नौकरी पेशा नारी है। माता–पिता की इकलौती संतान है। पढ़ी–लिखी है। राष्ट्रीयकृत बैंक में नौकरी करती है। एल.टी.सी के अंतर्गत छुट्टी और 1800 रूपये लेकर घूमने के लिए जाना चाहती है। पिताजी की बीमारी के कारण नहीं जाती है। इसकी जानकारी मि. खन्ना को फोनपर देती है। लिखित रूप में कोई सूचना न देना यह उसके गले की हड्डी बन जाता है। वह मि.खन्ना और सिन्हा के षड्यंत्र का शिकार बनती है। जाँच के नाम पर अपर्णा दर–दर की ठोकरे खाती है। अपने सहयोगी, सहेलियाँ, समाज की नजरों से गिर जाती है। जाँच अधिकारी प्रीतमसिंह, समीर सक्सेना से मिलती है पर जाँच खींचती चली जाती है।

5.3 विषय विवेचन :

5.3.1 ममता कालिया का परिचय :

ममता कालिया हिंदी साहित्य जगत की विख्यात लेखिका है। उनका जन्म 2 नवम्बर सन् 1940 ई. में उत्तर प्रदेश के 'वृंदावन' में हुआ। एक संपन्न परिवार में जन्म होने के कारण उनके जीवन में सुख ही सुख दिखाई देता है। ममता कालिया के माता का नाम इंदुमती था। इंदुमतीजी का रुढि, परंपरा पर विश्वास था। वे एक भोली भाली आदर्श गृहिणी थी। उनके पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल था। वे संभूदयाल कॉलेज, गाजियाबाद में प्रिन्सिपल थे। वे स्वयं लेखन करते थे और दूसरों को भी प्रेरणा देते थे। वे स्पष्टवक्ता थे। कुछ वर्ष आकाशवाणी दिल्ली में कार्यरत थे। ममताजी पर पिताजी के व्यक्तित्व की छाप दिखाई देती हैं।

ममताजी की प्रारंभिक शिक्षा गाजियाबाद के कान्वेंट स्कूल में हुई। उन्होंने पिताजी के तबादले के कारण गाजियाबाद, दिल्ली, नागपुर, मुंबई, पुणे, इंदौर आदि स्थानों पर शिक्षा ग्रहण की। ममताजी की पूरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से हुई है। उन्होंन विक्रम विश्वविद्यालय से बी.ए.की उपाधि हासिल की। 1963 में दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय लेकर एम. ए. किया। दिल्ली के दौलतराम कॉलेज से नौकरी आरंभ की।

नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई में अध्यापन का काम किया। वे महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद में प्राचार्य पद पर काम कर चुकी है। 2001 में सेवानिवृत्त हो चुकी है।

ममता कालिया का विवाह रचनाकार रवींद्र कालिया के साथ 12 दिसम्बर1964 में हुआ। उनके दो बेटे हैं। बडे बेटे का नाम अनिरूध्द तो छोटे का प्रबुद्ध हैं।

ममता कालिया का विषय अंग्रेजी है। ममताजी अंग्रेजी से अधिक हिंदी में लेखन करती है। ममताजी ने लगभग हिंदी की सभी विधाओं में अपने कलम का जादू बिखेर दिया है। ममता जी के अधिकांश साहित्यिक कृतियों में नारी जीवन का चित्रण मिलता है।

रचनाएँ:–

✻ कहानी संग्रह

'छुटकारा, एक आदत औरत, सीट नंबर छह, उसका यौवन, प्रतिदिन, बोलने वाली औरत, जाँच अभी जारी है, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लडकी, काके दी हट्टी।

✻ उपन्यास

बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लडकियाँ, एक पति के नोट्स, दौड, अंधेरा का ताला, दुक्खम्–सुक्ष्म,कल्चर–वल्चर

✻ कविता संग्रह

खाँटी घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूँ (खंडकाव्य), पोएम्स, ट्रिब्यून टू पापा एंड अदर पोएम्स

✻ नाटक तथा एकांकी संग्रह

यहाँ रोना मना है, आप न बदलेंगे, आत्मा अठन्नी का नाम है

✻ संस्मरण

कितने शहर में कितनी बार

✻ अनुवाद

मानवता के बंधन (उपन्यास–स्वाँमरसेट माँम)

✻ संपादन:–

बीसवीं सदी का हिंदी महिला–लेखन–खंड–3

स्त्री विमर्श के तेवर (कथा संकलन)

❋ **बालसाहित्य**

ऐसा था बजरंगी, शाब्बास चुन्नी, नन्हें मुन्ने सपने

❋ **पुरस्कार**

सर्व श्रेष्ठ कहानीकार पुरस्कार–(1963), साहित्य भूषण पुरस्कार–2002,

'उसक यौवन, कहानी संग्रह पर यशपाल कथा सम्मान– (1985), महादेवी स्मृतिसन्मान–(1998), कमलेश्वर स्मृति सन्मान, सावित्रीबाई फुले सन्मान(1999), अमृत सन्मानसीता पुरस्कार (2012), अभिनव भारतीय सन्मान (1990), जनवाणी सन्मान (2008), व्यास सन्मान(2011),व्यास सम्मान (2017),ढींगरा फैमिली फाउंडेशन का लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान, (2020), वनमाला सम्मान, गोयनका न्यास का 'वाग्देवी' सम्मान।

5.3.2 'जाँच अभी जारी हैं' कहानी का परिचय

'जाँच अभी जारी हैं' कहानी का परिचय 'जाँच अभी जारी हैं' यह ममता कालिया की एक प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी उनके 'जाँच अभी जारी है' इस कहानी संग्रह से ली गई है। यह कहानी सरकारी व्यवस्था में आयी दुरावस्था का चित्रण करती है। इस कहानी की प्रमुख पात्र अपर्णा जोशी है। एक राष्ट्रीयकृत बैंक में नौकरी करती है। वह अपने माता –पिता के साथ घूमने के लिए जगन्नाथपुरी जाने की तैयारी करती है। जिस दिन घूमने के लिए जाना था उसी दिन पिताजी की अचानक तबीयत बिगड जाती है। वह अस्पताल में पिताजी को लेकर जाती है। दस दिन बीत जाते है। घूमने के लिए न जाने की सूचना बैंक शाखा प्रबंधक मि. खन्ना को फोन पर देती है। जब नौकरी जॉईन करती है तब उसके हाथ में क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर की ओर से आया हुआ पत्र दिया जाता है। अपर्णा खन्ना साहब से मिलकर छुट्टी पर न जाने की बात फोन पर बता दी थी यह कहती है। तब वे इस बात को अस्वीकार करते है। अपर्णा की जाँच चलती है। वह एक स्थान से दूसरे स्थान चली जाती है। अपनी सफाई देती है, पर कोई असर नहीं होता है। बैंक में काम करने वालो में से कोई भी उसका साथ नहीं देता हैं। उससे बातचीत नहीं करता है। वह मि. खन्ना और सिन्हा के षड्यंत्र का शिकार बनती है। हर शनिवार, इतवार जाँच होती है। जाँच का यह सिलसिला शुरू रहता है। अपर्णा की समाज में बेईज्जती होती है। उसके जाँच का सिलसिला ख़त्म नहीं होता है। वह दर– दर की ठोकरे खाने के लिए मजबूर होती है वह जाँच होने के पूर्व ही सजा भुगत रही है।

5.3.3 'जाँच अभी जारी हैं' कहानी का कथानक

'जाँच अभी जारी हैं' यह ममता कालिया की ख्याति प्राप्त कहानी है। यह कहानी नारी के शोषण की कहानी है। नारी को झूठे केस में कैसे फँसाया जाता है? दर दर की ठोकरें खाने के लिए कैसे मजबूर किया जाता है? इसका जीता–जागता चित्रण मिलता है। यहाँ ईमानदारी काम के प्रति नहीं, अधिकारियों के प्रति होनी चाहिए दिखलाया गया है। अगर अधिकारियों की बात नहीं मानेंगे तब महिलाओं के प्रति यही रवैया

अपनाया जाता है। बैंक अधिकारियों का जूनिअर महिला अधिकारी के प्रति षडयंत्र स्षष्ट रूप से दिखाई देता है। जब किसी पर वक्त आता है तो कोई भी साथ नहीं देता है।

अपर्णा जोशी विद्यार्थी जीवन से ही बैंक की नोकरी के प्रति आकर्षित होती है। राष्ट्रीयकृत बैंक में नौकरी पाकर वह आनंदित होती है। बैंक की नौकरी से उसे नैतिकता, सच्चाई, शक्ति आदि मूल्यों के प्रति एहसास होता है। बैंक की नौकरी जैसी कोई नौकरी नहीं है यह अपर्णा का मानना हैं। बैंक की नौकरी एक तरह से अग्निपरीक्षा के समान ही है। हमेशा हाथ में नोट रहते हैं पर दिमाग कभी विचलित नहीं होता हैं। अपर्णा को बैंक में नौकरी मिलने से पूर्व छह महिने विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज में भी नौकरी मिल चुकी थी। वह बैंक की नौकरी के खातिर लेक्चररशिप को छोड देती हैं। अध्यापक की नौकरी उसे सीधी- सादी लगती है।

अपर्णा अपने बैंक का गुणगाण माता- पिता के सामने प्रस्तुत करती है। माता -पिता भी आनंदीत होते है। अपर्णा बैंक के बारे में बताते हुए कहती है कि कब से शुरू होती है? कहाँ तक चलती है? कितनी भीड रहती है। चार बजे तक कर्मचारियों को कैसे फुर्सत नहीं मिलती है। जब फुर्सत मिलती है, तब सभी लोग चाय पीते हैं, बातचीत करते हैं। अगर हिसाब में कोई गडबडी निकलती है तो स्टाफ को सात बजे तक रोक लिया जाता है। बैंक क्षेत्र में दस पैसे की गडबडी भी नहीं चलती है। चूक-भूल वाला मुहावरा बैंक में नहीं चलता हैं। यह मुहावरा बँकिंग क्षेत्र का शत्रू हैं। अपर्णा जिस बैंक में काम करती है, उसके प्रबंधक मि. खन्ना है। वे दिनभर केवल हस्ताक्षर करते रहते हैं। यह बैंक शहर के बीचों बीच है। यहाँ के ग्राहक सुबह से इंतजार करते रहते हैं। बैंक के काम करनेवाले कर्मचारियों के हाथ में ढेर सारे रुपये होते है फिर भी उनकी नीयत फिरती नहीं है। इसके लिए अपर्णा एक बैंक उदाहरण देते है कहते है कि उनके बैंक में एक कुली है, जो दस साल से काम कर रहा है। वह दस रुपये मजदूरी हर दिन पाता है फिर भी उसकी नीयत खराब नहीं होती है। बैंक में काम करने वाले लोगों की नीयत भी खराब नहीं होती है। इसी समय अपर्णा की सहेलियाँ यहीं कहती है कि अगर हम होते तो नोट लेकर भाग जाते। जिस किसी पर भी जिम्मेदारी आती है वह कभी भी ऐसा नहीं कर सकता है।

अपर्णा दिन में जिस बात को सोचती है वह रात में सपने में आने लगतां हैं। उसे लगता है कि वह उसी शाखा के किसी एक सहयोग की पत्नी बन चुकी है। दोनों साढे नऊ बजे एक साथ बैंक में जा रहे हैं। दोनों का जॉईंट एकाउण्ट है। दोनों भी अपनी अपनी मर्जी से काम कर रहे है। पर उस शाखा में काम करनेवाले सभी कर्मचारी विवाहित थे।

अपर्णा के दफ्तर में दो महिलाएँ हैं - एक नाम मिसेज श्रीवास्तव और दूसरी का फरीदा जमाल। मिसेस श्रीवास्तव अपर्णा को शादी-शुदा पुरुष वर्ग से सावधान रहने की सलाह देती हैं। अपर्णा को पहले तो सब कुछ सीधा नजर आता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, मिसेज श्रीवास्तव की सलाह सही थी ऐसा मालूम हो जाता है। मि. खन्ना अपर्णा की सहायता से शाम के वक्त आवर्ती जमा योजना का हिसाब चेक करना चाहते हैं। अपर्णा माँ को अस्पताल ले जाने का बहाना बनाती है।

'आज शाम क्या कर रही है?' यह सवाल बैंक में काम करनेवाला हर कोई अपर्णा से पूछता है। अपर्णा माँ की बीमारी, पिता का प्रवास आदि बातों को रक्षाकवच के रूप में इस्तेमाल करती हैं। अपर्णांने इस समय झूठ बोला था। पर झूठ कितनी बार बोल सकती थी। मिस्टर सिन्हा साहब ने उसे एक शाम रूकने के लिए कहा अपर्णा रूकती है। केक काट दिया जाता है। चपरासी अपने प्लेट में ढेर सारी बर्फ लेकर आता है। व्हिस्की की बोतल मेज पर रखी जाती है। व्हिस्की की बोतल देख कर मेहमानो के चेहरे पर स्फूर्ति आती है। अपर्णा माफी माँगते हुए वहाँ से निकल जाती है। अपर्णा को पहले लगता था कि बैंक में देर रात तक लाईट जलती है मतलब काम ही शुरू रहता है लेकिन वह इस अप्रत्याशित घटना से सब कुछ समझ जाती है। बैंक में ऐसी हरकते होती है। यह देख कर अपर्णा को गुस्सा आता है। पर वह कुछ भी नहीं करती है। अपने घर चली जाती है।

अपर्णा को बैंक में नौकरी करते एक साल पूरा हो गया। वह एल.टी.सी करने की हकदार बन चुकी है। वह एल.टी.सी के अंतर्गत 1800 रुपये लेती हैं। वह कुल्लू-मनाली जाना चाहती हैं। उसकी माँ जगन्नाथपुरी जाना चाहती है। माँ की बात स्वीकार करते हुए जगन्नाथपुरी जाने की तैयारी करती है। जिस दिन जाना था उसी दिन अपर्णा के पिताजी के सीने में अचानक दर्द शुरू हो जाता है। जगन्नाथपुरी के बजाय तीनों भी अस्पताल पहुँच गये। अपर्णा की दस दिन की छुट्‌टी पिताजी के बिमारी में ही चली गयी। अपर्णा ने अपने बैंक के अधिकारी मि. खन्ना से फोन पर छुट्‌टी में घुमने न जाने की बात कही थी। वह छुट्‌टी पूरी होने के बाद एल.टी.सी के अंतर्गत बैंक से लिए गये 1800 रुपये वापस करना चाहती है। जिस दिन अपर्णा बैंक में हाजीर होती है उसी दिन वह अठाहर सौ रुपये लेकर गयी थी। वह जमा करवाना चाहती है उसके पूर्व ही बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय से आया हुआ पत्र उसके हाथ में थमा दिया जाता हैं। उस पत्र में लिखा था कि आपने एल.टी.सी का झूठा बील बैंक में पेश कर बैंक के साथ धोकाधडी की है। धन का दुरुपयोग किया है। इस संबंध में अपना स्पष्टीकरण तुरंत दे, अन्यथा आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई होगी। यह पत्र लेकर अपर्णा खन्ना साहब के केबिन में चली जाती है। यात्रा के लिए न जाने की बात फोन पर आपको बताई थी यह कहती है। लेकिन खन्ना उसे कहते है कि मुझे आपका कोई फोन नहीं मिला। आपको जो कुछ भी कहना है लिखित में कह दें।

खन्ना साहब और सिंन्हा साहब दोनों मिलकर षड्‌यंत्र करते हैं। एक दूसरे से सलाह मशविरा करते है। एडवांस की रशीद हमारे पास है। उस पर अपर्णां ने खुद तारीख भी लिखी है। अपर्णा के साथ धोका हुआ है, यह वह समझ लेती है। वह साहस के साथ आगे बढने का प्रयास करती है। वह पिताजी को इस बात की जानकारी देती है। अपर्णा की बैंक का क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर में हैं।

अपर्णा कानपुर के क्षेत्रीय कार्यालय में पहुँचती है। जाँच अधिकारी से मिलना चाहती है लेकिन वे बाहर चले गये है। अपर्णा अधिकारी से मिलना चाहती है। ज्युनिअर अधिकारी सिनियर की तरह रोब जमाने का प्रयास करता है। वह बहुत देर तक फोन पर बातचीत करता है। अपर्णा अधिकारी के पास खडी रहती है, बाद में वह कुर्सी पर बैठ जाती है। वह अधिकारी फोन रखता है। अपर्णा अपनी हकीकत बताती है। विश्वसनीयता

पर संदेह प्रकट न करने की विनंती करती है। वह अधिकारी खन्ना और उनके सहयोगी के रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई करना चाहते हैं। अपर्णा के साथ अन्याय हो रहा है। अपनी सफाई में यही कहना चाहती है कि मैने रुपये ऍडव्हान्स बिल के अगेन्स्ट लिये थे। अपर्णा की पूरी बाते सुनाने के बाद वह कहते है कि आपने यात्रा रद्द करने की लिखित सूचना कार्यालय को क्यो नही दी? आपके बिल में कहीं भी एडव्हान्स जैसा शब्द नहीं है। अपर्णा विवेक से काम लेने की बात करती है। तब अधिकारी कहता है कि जूनिअर्स में अजीब तत्व घुस गये हैं, उसकी पडताल होनी चाहिए। वे अपर्णा को जाने के लिए कहते है।

अपर्णा बाहर आती है। डीलिंग क्लर्क अपर्णा की और देखता है। थ्रू प्रॉपर चैनल से जाने पर उसके केस को दबा सकता है। अपर्णा ने डीलिंग क्लर्क की ओर देखा भी नहीं, इसका उसे गुस्सा है। वह चपरासी से कहता है कि इसी तरह अपर्णा पिता के साथ आती रहेगी तो दस सालों तक इन्कायरी चलाऊँगा, उसे रोने के लिए मजबूर कर दूँगा।

अपर्णा की भागदौड शुरू होती है। कभी एक ऑफिस तो कभी दूसरे ऑफिस। कभी एक अधिकारी मिलता है तो कोई बाहर गया हुआ है, कभी दो दिन के बाद मिलने के लिए कहते है। वह दो दिन के बाद वापस चली जाती है। एक तरफ अपर्णा के मन में चिंता है दूसरी ओर भागदौड करना पडता है, जिससे वह दुबली पतली हो गई। अपर्णा की फाइल मोटी होती गई। अपर्णा की जाँच समिती में प्रीतमसिंह, युनियन प्रतिनिधि समीर सक्सेना और एक अन्य अधिकारी है। बैंक में उसे एक अभियुक्त के रूप में जाना पड रहा है उसके साथ कोई बातचीत नहीं करता हैं। कोई भी झंझट में नहीं पडना चाहता हैं। अपर्णा युनियन प्रतिनिधि समीर सक्सेनाजी से मिलने का प्रयास करती है। बडी मुश्किल से उनसे मुलाकात होती है। उसे समीर सक्सेना अच्छा आदमी लगता है। समीर सक्सेना जी अपर्णा को बताते है कि उनके पास सबूत है और आपके पास सबूत नहीं है। अपर्णा ईमानदारी पर भरोसा रखती है। समीर सक्सेना उसका साहस बढाने का प्रयास करते हैं।

समीर सक्सेना मि. खन्ना के बारे में पूछते है तब अपर्णा फरीदा जमाल के दराज में हर रोज अश्लील शेरो शायरी के कागज मिलने की बात कहती है। इस पर उसके लिखित जबाब लाने के लिए कहते है, तब अपर्णा फरीदा जमाल से जाकर मिलती है। अश्लील शायरी के कागज के बारे में लिखित रूप में देने के लिए कहती है। वह साफ साफ इन्कार कर देती हैं। अपर्णा उसे मनाती है पर वह मानती नहीं हैं। अपर्णा निराश होकर समीर सक्सेनाजी से मिलती है, सब हकिकत बताती है। समीर सक्सेना जी ने अपर्णा को समझाते हुए उसकी फाईल को गौर से देखने का आश्वासन दिया।

अपर्णा प्रीतमसिंह से भी मिलती है पर कुछ लाभ नहीं होता है। अपर्णा की जाँच खींचती चली गई। अपर्णा भी हताश और उदास होने लगी। अपर्णा वित्तमंत्री को पत्र लिखना चाहती है पर वे भी जाँच बिठा देंगे और क्या करेंगे? फाईल दर्जनों अधिकारियों के हाथों से गुजर जायेगी, लाभ कुछ भी नहीं होगा यह अपर्णा अच्छी तरह से जानती है।

वह नौकरी छोडने का मन बना लेती है। नौकरी छोडने का मतलब गलत आरोपों को स्वीकारना है। यह वह अच्छी तरह से जानती है। राष्ट्रीयकृत बैंक में चल रही सौदेबाजी, झूठे बिल लगाकर बैंक को कैसे चुना लगाया जाता है, यह अपर्णा समझती है। किसी कोई बडा कर्ज लेना है तो परसेन्टेज देना पडता है। उपर से नीचे तक परसेन्टेज चलता है। पर अपर्णा कुछ भी नहीं कर सकती हैं। जाँच अधिकारी अपर्णा का साहस बढाने का प्रयास करते है। उसे बेफिक्र रहने की सलाह देते है। इस केस को पूरा करके उसका कहीं दूर तबादला करवाने की बात करते है। अपर्णा अपने आपको अकेला महसूस करती है। वह दुनिया की नजरों में गुनहगार बन चुकी है। असली सजा तो उसने दर दर की ठोकरे खाकर पूरी की है। हर शनिवार इतवार को जाँच होती थी। जाँच का सिलसिला चलता ही रहा, चलता ही रहा। यही पर कहानी की कथावस्तु खत्म होती है।

5.3.4 'जाँच अभी जारी है' कहानी की अपर्णा जोशी का चरित्र –चित्रण–

प्रस्तावना:-जाँच अभी जारी है यह ममता कालियाजी की कहानी है।इस कहानी में नौकरी पेशा नारी की की व्यथा को प्रस्तुत किया है। इस कहानी में अपर्णा जोशी, मिसेज श्रीवास्तव और फरीदा जमाल आदि नारी पात्र है। अपर्णा इस कहानी का महत्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ है:-

1) प्रमुख नारी पात्र या नायिका:– 'जाँच अभी जारी है' कहानी का केंद्रीय पात्र अपर्णा है। अपर्णा का बैक में नौकरी हासिल करना, बैंक का वातावरण, मिसेज श्रीवास्तव द्वारा शादी शुदा पुरूष वर्ग के प्रति सचेत करना, मि खन्ना का बैंक में रूकने के लिए कहना अपर्णा का माँ को अस्पताल ले जाने का बहाना बनाना, सिन्हा के बेटे का जन्मदिन बैंक में मनाना, केक काटने के बाद निकल जाना, बैंक से एल.टी.सी के अंतर्गत पैसे लेकर घूमने के लिए जाने की योजना बनाना पिताजी का अचानक बीमार होना, पूरी छुट्टी निकल जाना, मि खन्ना को घूमने के लिए न जाने की बात फोन पर कर देना, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर का बैंक से धोखाधाडी का पत्र मिलना, मि खन्ना से अपर्णा का मिलना, खन्ना का फोन पर दी गई जानकारी को अस्वीकार करना, अपर्णा का जाँच समिति के प्रतिनिधियों से मिलना, सफाई देना, बैंक के अपने ही साथियों का बदला हुआ रूप, बोलना तक बंद होना, दर दर की ठोकरे खाना, जाँच खींचती चली जाना, आदि घटनाओं से जुडी हुई है। पूरे कहानी की कथावस्तु उसके आसपास ही घूमती है। इसी कारण वह इस कहानी की नायिका है।

2) प्रतिभासंपन्न :– अपर्णा प्रतिभासंपन्न नारी है। प्रतिभासंपन्न होने के कारण ही वह प्रारंभ में विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज में नौकरी हासिल करती है। उसे लेक्चरर की अपेक्षा बैंक की नौकरी अच्छी लगती है। बैंक में नौकरी मिलने पर लेक्चरर की नौकरी छोडती है। प्रतिभासंपन्न होने के कारण ही उसका दो दो जगहों पर सिलेक्शन होता है।

3) साहसी:–अपर्णा के चरित्र का यह सर्वोपरी गुण है। साहसी होने के कारण ही लेक्चरर की नौकरी छोडती है। साहसी होने के करण ही जाँच समिति के सामने जाती है। समिति के सदस्यों से मिलती, सफाई देती है। मि.खन्ना साहब को छुट्टी पर न जाने की सूचना फोन पर देने की बात कहती है। सिन्हा साहब के

बेटे के जन्मदिन पर वातावरण देखकर चली जाती है। सिन्हा साहब के रूकने लिए कहने पर भी नहीं रूकती है।

4) षड्यंत्र का शिकार:– अपर्णा मि. खन्ना, मि.सिन्ह के षड्यंत्र का शिकार बनती हैं। दानों भी उसके एल.टी.सी के बील पर अपर्णा के हाथों से लिखी तारीख का लाभ उठाकर झूठे इल्जाम लगाते है। दोंनों मिलकर षड्यंत्र बनाते हैं जिसका खामियाजा अपर्णा को भुगतना पडता है। अपर्णा षडयंत्र का शिकार बनती है।

5) ईमानदार :– अपर्णा ईमानदार है। बैंक में वह ईमानदारी से नौकरी करती है। ईमानदार होने कारण ही छुट्टी पर न जाने की बात बैंक के शाखा प्रबंधक मि.खन्ना को फोन पर बताती है। अपर्णा की दस दिन की छुट्टी पिताजी की बीमारी में चली गयी। वह जिस दिन बैंक में ज्वाइन होती है उसी दिन एल.टी. सी के अंतर्गत लिए गए 1800 सौ रूपये वापस कर देना चाहती है।

6) माता–पिता की सेवा करनेवाली :– अपर्णा अपने माता पिता की अकेली संतान है। माता पिता सेवा करना उसका फर्ज है। पिताजी की बीमारी में सेवा करती है। माताजी के मन के अनुसार वह जगन्नाथपुरी जाने के विचार को स्वीकारती है।

7) सहनशीलता :– अपर्णा में गजब की सहनशीलता है। उसे षड्यंत्र में फँसाया गया है। खन्ना साहब के कहने अनुसार अपर्णा पाँच बजने के बाद बैंक में नहीं रूकती है। सिन्हा साहब के बेटे जन्मदिन का केक काटने के बाद निकल जाती है। जिसके कारण दोंनों द्वारा षड्यंत्र रचा जाता है। अपर्णा पर षड्यंत्र रचा गया है यह मालूम होने पर किसी से कुछ भी नहीं कहती है। उसका अपनी ईमानदारी, सच्चाई पर भरोसा है। एक न एक दिन सफलता मिलेगी इस बात का उसे विश्वास है। वह जाँच समिती के सदस्यों के सामने सफाई देती। वह साहस से आगे बढ़ना चाहती। जाँच खींचती चली जाती है। उसकी बैंक में काम करनेवाले सहयोगी, समाज, सहेलियों में बेईज्जती होती है। जिस बैंक में अधिकारी के रूप में काम किया था उसी बैंक में अभियुक्त बनकर जाना पडता हैं। चपरासी तक बात नहीं करता है फिर भी वह किसी को कुछ भी नहीं कहती है।

8) समय के साथ साथ अच्छा बूरा समझनेवाली :– अपर्णा को बैंक में नौकरी करते समय मिसेज श्रीवास्तव सचेत करती है तब उसे सब लोग अच्छे लगते है। जैसे –जैसे समय बीतता गया वैसे –वैसे सभी लोगों को समझती है। अपर्णा के बूरे वक्त में कोई भी साथ नहीं देता है। इतना ही नहीं तो उससे बातचीत भी नहीं करते है। फरीदा जमाल भी साथ नहीं देती है। दर–दर की ठोकरे खाने के लिए मजबूर होती है।

9) बैंकिग व्यवस्था के भ्रष्टाचार की जानकारी होने पर चूप रहनेवाली:– अपर्णा बैंकिग व्यवस्था के भ्रष्टाचार को सझती है। मेडिकल बिल, यात्रा बिल, स्टेशनरी बिल कैसे पेश किए जाते है। छोटा मोटा कोई भी कर्ज हो बिना कमिशन नहीं दिया जाता है। उपर से नीचे तक परसेन्टेज ठहरा हुआ है। बैंक यह कारोबार की जगह है न कि पार्टी, जन्मदिन मनाने की। उपर्युक्त जानकरी होने के बावजूद भी आवाज नहीं उठाती। वह अपने ऑफिस में विश्वसनीयता खो चुकी है। वह यह भी जानती है कि कोई भी उसका साथ नहीं देगा। चूप

रहना अच्छा है। इसका मतलब कब क्या करना चाहिए और कब क्या नहीं करना चाहिए यह उसे अच्छी तरह से मालूम है। इसके लिए वह अपने विवेक का इस्तेमाल करती है।

10) सपने देखनेवाले अपर्णा :– अपर्णा दिनभर बैंक में काम करती है। रात में वहीं सपने आते है जो दिनभर देखती है। वह सपना देखती है कि उसके बैंक के एक सहयोगी की पत्नी बन चुकी है।साढे नौ बजे दोनों अपना अपना लंच बॉक्स लेकर स्कूटर से रवाना होते है। दोनों का जॉईण्ट एकाउण्ट है। घर में दोनों भी अपनी अपनी मर्जी से काम करते है। इस तरह के सपने देखती है।

निष्कर्ष : अपर्णा एक ईमानदार मेहनती, लडकी है। वह साहसी एवं जिद्दी लडकी है। समय के साथ साथ परिवर्तित होती है। षड्यंत्र का शिकार बनती है। पर अपने आचार विचारो को नहीं छोडती है। अपर्णा का चरित्र आधुनिक नारियों के लिए प्रेरणा देनेवाला है। विपरित परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखना चाहिए यह सीख अपर्णा के चरित्र से मिलती है।

5.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) 'जाँच अभी जारी है' कहानी की लेखिका .... है।

अ) कुसुम अंसल ब) ममता कालिया क) मन्नू भंडारी ड) मधु धवन

2) 'जाँच अभी जारी है' कहानी की नायिका .... है।

अ) श्रावणी जोशी ब) सुवर्णा जोशी क) संपदा जोशी ड) अपर्णा जोशी

3) एक सन्मानित राष्ट्रीयकृत बैंक में नियुक्ति पाकर........... फूली नहीं समायी।

अ) अपर्णां ब) सुवर्णा क) वैष्णवी ड) श्रावणी

4) अपर्णा की छः महिने पूर्व .... डिग्री कॉलेज में नियुक्ति हुई थी।

अ) विश्वात्मा ब) विश्वकर्मा क) विश्वविख्यात ड) विश्वविद्यालय

5) विद्यार्थी जीवन से ही .... को बैंक की नोकरी आकृष्ट करती थी।

अ) संपदा ब) चमेली क) सुवर्णा ड) अपर्णा

6) बैंक के शाखा प्रबंधक मि. .... थे।

अ) खन्ना ब) प्रीतमसिंह क)समीर सक्सेना ड)चिराग

7) .... वाला मुहावरा बैंकिंग के किसी काम का नही है।

अ) भूल–चूक ब) कोल्हू का बैल बनना

क) अंगूठा दिखाना ड) एडी चोटी एक करना

8) अपर्णा को सतर्क रहने की सलाह .... ने दी थी।

अ) फरीदा जमाल ब) मिसेज श्रीवास्तव क) साजिया खान ड) मिसेज अडवाणी

9) मिस्टर सिन्हा का बेटा अपनी मम्मी के साथ .... गया हुआ है।

अ) कानपुर ब) अमृतसर क) बनारस ड) विदेश

10) अपर्णा एल.टी.सी. प्राप्त कर .... जाने का सपना देखती है।

अ) महाबलेश्वर ब) हैदराबाद क) औरंगाबाद ड) कुल्लू मनाली

11) अपर्णा की माँ........... जाना चाहती है ।

अ) काशी ब) मथुरा क) आगरा ड) जगन्नाथपुरी

12) अपर्णा के राष्ट्रीयकृत बैंक का क्षेत्रीय कार्यालय .... में है।

अ) गंगापुर ब) सहारनपुर क) कानपुर ड) रामपुर

13) एल.टी.सी. के अंतर्गत अपर्णाने बैंक से........... रुपये लिये थे।

अ) अठारह सौ ब) पाँच हजार क) तीन हजार ड) दो हजार

14) अपर्णा .... को पत्र लिखना चाहती है।

अ) प्रधानमंत्री ब) रक्षामंत्री क) वित्तमंत्री ड) शिक्षामंत्री

15) ममता कालिया का जन्म......... गाँव में हुआ।

अ) आगरा ब) मथुरा क) काशी ड) रामपुर

5.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1) फूला न समाना-(मु)-अत्याधिक प्रसन्न होना, बहुत खुश होना
2) निरीह - सादा
3) लियाकत - योग्यता
4) गपबाजी - फालतू की गपशप में समय नष्ट करना
5) फारिंग- मुक्त, अवकाश प्राप्त, पूर्ण कर लेना, फुर्सत पाना
6) दराज - लंबा, विशाल, दीर्घ, मेज में सामान रखने का खाना या खंड।
7) हुलिया - शक्ल, सूरत।
8) अमानत - धरोहर, अपनी वस्तु को किसी दूसरे के पास एक नियतकाल तक के लिए रखना।
9) दंग रह जाना - (मु) आश्चर्यचकित होना।

10) यूटोपिया – एक आदर्श समुदाय या समाज के लिए एक नाम है। (आदर्श राज्य)

11) मुस्तैद – कटिबद्ध जो किसी काम के लिए तत्पर हो ,चालक।

12) अलबत्ता – बेशक, नि स:देह।

13) कदर – आरा, अंकुश, मान सन्मान, आदर, प्रतिष्ठा।

14) फिजूलकिसी – जो किसी काम का न हो, व्यर्थ, निरर्थक, बेमतलब ,बेकार।

15) आतुर – उतावला

16) कातर - भयभीत, चंचल।

17) शातिर – परमधूर्त, चालक, बच निकलने वाला ,चतुर।

18) मुँह लटकाना – निराश होना, लज्जित हो जाना।

19) आवर्ती – व्याजदर अर्जित करने के लक्ष्य के साथ वर्षो तक नियमित अंतराल पर जमा की गई राशि को आवर्ती जमा के रूप में माना जाता है।

20) चैन का साँस लेना – निश्चित हो जाना, आराम अनुभव करना।

21) दुश्चिंता – बूरी चिंता, घबराहट।

22) अकड – घमंड, अहंकार।

23) हकदार – हक या अधिकार रखने वाला ।

24) इत्तला – सूचना खबर जानकारी।

25) निगलना – गले के नीचे उतार देना, खाना।

26) तैश – आवेश पूर्ण क्रोध, अत्याधिक क्रोध आने पर होने वाला आवेश।

27) हेठी – मानहानी, अपमान, प्रतिष्ठा में कमी,गौरव नाश।

28) सातवे आसमान पर होना – बहुत/अधिक घमंड होना।

29) बिदक – कुछ डरते हुए पीछे हटना।

30) अवदान – बहुत बडा या महत्वपूर्ण कार्य, विजय, सफलता।

5.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) ब) ममता कालिया। 2) ब) अपर्णा जोशी। 3) क) अपर्णा।

4) ब) विश्वकर्मा। 5) अ) अपर्णा। 6) अ) मि खन्ना।

7) ब) भूल-चूक।	8) ब) मिसेज श्रीवास्तव।	9) क) बनारस।
10) ड) कुल्लू -मनाली।	11) ड) जगन्नाथपुरी।	12) क) कानपुर।
13) क) अठारह सौ।	14) ड) वित्तमंत्री।	15) ब) मथुरा।

5.7 सारांश

1) 'जाँच अभी जारी है' ममता कलिया ख्याति प्राप्त कहानी है।

2) अपर्णा का विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज की नौकरी छोडकर राष्ट्रीयकृत बैंक में नौकरी ज्वाइन करती है और आनंदित होती है।

3) अपर्णा माता- पिता की लाडली बेटी है। उसकी सफलता पर उन्हे गर्व होता है।

4) अपर्णा अपनी राष्ट्रीयकृत बैंक का गुणगान करते हुए कब शुरू होती है,कब बंद होती है। कितनी भीड रहती है। बैंक के वातावरण के बारे में बताती है।

5) एल.टी.सी के तहत 1800 रूपये एडवान्स लेकर घूमने के लिए जाने की तैयारी पूरी कर लेती है। यात्रा के लिए जाने के दिन पिताजी की तबियत खराब होती है। अपर्णा दस दिन पिताजी की सेवा करती है।

6) अपर्णा घुमने के लिए न जाने की बात शाखा प्रबंधक मि. खन्ना को फोन पर बताती है।

7) दस दिन के बाद अपर्णा बैंक में जाती है। उसके हाथ में क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर पत्र थमा दिया जाता है। जिसमें एल.टी.सी का झूठा बिल पेश कर बैंक से धोखाधाडी और धन के दुरूपयोग का आरोप लगाया था। अपर्णा मि खन्ना से मिलती है। फोन पर छुट्टी पर न जाने की बात आपको बताई थी यह कहती है। खन्ना साहब इस बात का इन्कार करते है।

8) मि. खन्ना और सिन्हा दोनों ने मिलकर अपर्णा को झूठे केस में फँसा दिया।

9) अपर्णा के ऊपर जाँच समिति की नियुक्ति की जाती है। उसमें प्रीतमसिंह, समीर सक्सेना और एक अधिकारी होते हैं। अपर्णा प्रीतमसिंह, समीर सक्सेना से मिलती है अपनी सफाई देती है। वे भी अपर्णा का साहस बढाने है। गहराई से फाईल को देखने का आश्वासन/भरोसा दिलवाते है।

10) अपर्णा को राष्ट्रीयकृत बैंक में घपले कैसे होते है? सौदेबाजी कैसे होती है? मेडिकल बिल, यात्रा बिल, स्टेशनरी बिल झूठे होते है। छोटा बडा कोई भी कर्ज हो बिना कमिशन के मंजूर नहीं होता। उपर से नीचे तक सबका कमिशन बँधा रहता है आदि की जानकारी अपर्णा को है।

11) फरीदा जमाल के दराज में अश्लील शेरो- शायरी वाला कागज हर रोज रखा जाता है इसकी जानकारी फरीदा जमाल अपर्णा को देती हैं। वक्त आने पर डर के कारण अपर्णा को सहायता नहीं करती है। उसके साथ कोई भी बातचीत नहीं करता हैं।

12) अंत में अपर्णा का साहस टूट जाता है। वह नौकरी छोड देना चाहती है। वित्तमंत्री से शिकायत करना चाहती है। वे भी जाँच समिति बिठाएँगे। फाईल दर्जनों लोगों के हाथ में चली जाएगी, हाथ में कुछ भी

नहीं लगेगा यह सोचकर चूप रहती है। जाँच का सिलसिला जारी रहता है। अपर्णा दर–दर की ठोकरे खाती है। सहेलियाँ, मेहमान, समाज में उसकी बेईज्जती हुई है। वह जाँच होने से पूर्व ही सजा भुगत रही है। वह पुरूष वर्ग से पीडित नारी है। वह सडी–गली सरकारी व्यवस्था शिकार बनती है। मानवरूपी भेडिए अपनी चाल चल चुके थे। शायद अपर्णा बैंक अधिकारियों का भंडाफोड कर सकेगी यह संदेह आया होगा। इसी कारण तो छोटी–सी बात का बतंगड बना दिया गया। एल.टी.सी के पैसे वापस लेकर मामला रफा–दफा कर सकते थे।

5.8 स्वाध्याय

5.8.1 अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1) अपर्णा की स्वभावगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
2) बैंक कर्मचारीयोंका षडयंत्र स्पष्ट कीजिए।

5.8.2 ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'जाँच अभी जारी है' कहानी की कथावस्तु लिखिए।
2) 'जाँच अभी जारी है' कहानी की नायिका अपर्णा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3) 'जाँच अभी जारी है' कहानी में नौकरी पेशा नारी को दर दर की ठोकरे खानी पडती है। इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

5.9 क्षेत्रीय कार्य

1) 'जाँच अभी जारी है' कहानी का नाट्यरूपांतर कीजिए।
2) 'जाँच अभी जारी है' कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए।
3) नौकरी पेशा नारी की मुलाकात लीजिए।
4) अपने पडोस के या जाने पहचाने नौकरी पेशा नारी का चरित्र –चित्रण कीजिए।
5) भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था पर अपने अनुभव को लिखिए।

5.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) ममता कालिया – यह जरुरी नहीं – कहानी
2) ममता कलिया – जिंदगी सात घंटे बाद की – कहानी
3) ममता कलिया – ईक्कीसवीं सदी – कहानी।
4) ममता कालिया – अनुभव – कहानी
5) ममता कालिया – निवेदन – कहानी

दास्ताने कबूतर (कहानी)

कुसुम अंसल

अनुक्रम

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 विषय विवेचन

6.3.1 कुसुम अंसल का परिचय

6.3.2 'दास्ताने' कबूतर कहानी का परिचय

6.3.3 'दास्ताने' कबूतर कहानी की कथावस्तु

6.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

6.6 स्वयंअध्ययन प्रश्न के उत्तर

6.7 सारांश

6.8 स्वाध्याय

6.8.1 ससंदर्भ वाक्यांश

6.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

6.9 क्षेत्रीय कार्य

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

6.1 उद्देश्य :-

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप...

1) कुसुम अंसल के रचना संसार से परिचित होंगे।

2) प्रस्तुत कहानी से महानगरीय समाज की मानसिकता को समझ सकेंगे।

3) मानव की अमानवीयता एवं संवेदनहीनता से परिचित होंगे।

4) धार्मिक स्थल के पंडित जी के घिनौने रूप से अवगत होंगे।

5) नजदीक के रिश्तेदारों से अपहरण की घटना से परिचित होंगे।

6) मोबाईल के दुष्परिणाम को समझ सकेंगे।

7) कबूतरों की मानव के प्रति संवेदना से परिचित हो जायेंगे।

6.2 प्रस्तावना

कहानी की परंपरा पुरानी है। प्रेमचंद पूर्व युग में कहानी का उतना विकास नहीं हुआ था। उस समय कहानी बाल्यावस्था में थी। कहानी के विषयों में विविधता अधिक मात्रा में नहीं थी। जैसे ही प्रेमचंद का आगमन हुआ कहानी का विकास तेजी से बढता गया। प्रेमचंद युग में विभिन्न विषयों पर, समस्याओं पर कहानियाँ लिखी गयी। प्रेमचंद के समकालीन कहानीकारों ने कहानी के विकास में अपना-अपना योगदान दिया, जिससे कहानी में मानवीय जीवन का सुंदर चित्रण मिलता है। कहानी विधा का विकास तेजी से हो रहा है। कहानी मनोरंजन के साथ साथ समस्याओं का चित्रण करती है। कहानी में चित्रित पात्र, घटनाएँ भले ही काल्पनिक हो पर अपने आस पास के लगते है। इसी कारण कहानी के प्रति पाठकों की रूची बढती हुई दिखाई देती है।

आधुनिक युग में हर दिन कहानियाँ लिखी जा रही है। आज अनेक लेखिकाएँ कहानियाँ लिख रही हैं। नारी जीवन की कथा व्यथा को प्रस्तुत कर रही हैं। समाज में फैली विकृत अवस्था का चित्रण भी कर रही हैं। कहानी विधा का भविष्य उज्ज्वल हैं।

कुसुम अंसल की 'दास्ताने कबूतर' कहानी उसमें से एक है। महानगरीय लोगों की आत्मकेंद्रित वृति का चित्रण करती है। मानव के प्रति संवेदनहीनता, अनैतिकता, का पर्दाफाश करती है। पंछियों को मानव के प्रति संवेदना दिखलाकर कुसुम अंसलजीने मानव को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है।

6.3 विषय विवेचन

6.3.1 कुसुम अंसल का परिचय

कुसुम अंसलजी का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ में 1 अगस्त 1940 को हुआ। उनका परिवार आर्य समाजी था। उनके पिताजी का नाम श्री सुरेंद्रकुमार सहगल और माताजी का नाम आशारानी था। उनके विनोद, सुबोध और अजीत नाम के तीन भाई हैं। कुसुम अंसलजी दस वर्ष की थी तब माताजी की मृत्यु हो जाती है। बुआ उसे गोद में लेती है। कुसुम जी बचपन से धार्मिक प्रवृत्ति की है सौतेली माँ की बेरहमी सहती है। उनकी मातृभाषा पंजाबी है। उनकी शिक्षा मुस्लिम अलीगढ युनिव्हर्सिटी में हुई। 1987 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि हासिल की। कुसमजी का विवाह सन् 1962 सुशील अंसल के साथ हुआ। उनके तीन संतान हैं।

कुसुजी का बचपन सामान्य ही रहा है। वह बचपन से ही साहित्य लेखन करती है। नाटक और अभिनय में रूची रखती हैं। हिंदी कथा साहित्य में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। वह एक प्रतिभासंपन्न लेखिका है। अपने विभिन्न रचनाओं के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं से पाठकों को परिचित किया है।

रचनाएँ

उपन्यास

उदास आँखे, नींव का पत्थर, उसकी पंचवटी, उस तक, अपनी- अपनी यात्रा, एक और पंचवटी, रेखाकृति, तापसी, खामोशी की गूँज

पंजाबी उपन्यास

किस पाता सच, राहों की भाल

कहानी संग्रह

स्पीड-ब्रेकर,पते बदलते हैं, इकतीस कहानियाँ, धुएँ की इमानदारी, वह आया था,।

पंजाबी कहानी संग्रह

हनेर का कारण

अंग्रेजी कहानी संग्रह

मँचमेकर अँण्ड अदर स्टोरीज

कविता संग्रह

मौन के दो पल, थुएँ का सच, विरूपीकरण, मेरा होना,

समय की निरंतरता में, ओन्ली स्टार्स साइन,

नाटक

रेखाकृति, उसके होंठो का चुप आत्मकथा

जो कहा नहीं गया

यात्रा वृत्तांत

स्मृतियों का अतीत

अनुवाद :

अंग्रेजी

सिंग मी नो सॉग्स, माय लवर्स नेम एण्ड अदर स्टोरीज

शोध

आधुनिक हिंदी उपन्यास और महानगरीय बोध

6.3.2 'दास्ताने कबूतर' कहानी का परिचय

मदास्ताने कबूतरफ कहानी कुसुम अंसल जी की है। यह कहानी महानगर की वास्तविकता, भागदौड, मानव की आत्मकेंद्रीत वृत्ति का चित्रण करती है। इसमें लेखिकाने मानव की संवेदनहीनता पर प्रकाश डाला है। प्राचीन काल से मानव में दिखाई देने वाले अच्छे गुण आज के भागदौड के जीवन में लुप्त होते जा रहे है। आज का मानव आत्मकेंद्रीत एवं संकुचित विचारधारावाला होता जा रहा है। उसमें व्यापकता नहीं है। 'दास्ताने कबूतर' कहानी में लेखिकाने कबूतरों माध्यम से मानव के स्वभाव का दर्शन करवाया है। घिनौने रूप का चित्रण किया है। दास्ताने कबूतर कहानी में तीन घटनाएँ है। तीनों भी घटनाएँ सोचने के लिए मजबूर कर देनेवाली है। एक जवान औरत प्रसव की वेदना से कराहती हुई पर मदद के लिए पुकारती है। फुटपाथ पर आने-जाने वाले उसे टकराते है पर उसकी और अनदेखा करते है। वह एक बच्ची को जन्म देकर इस जगत से विदा होती है। अपहृत लडके के पिताजी से पैसे न मिलने पर चाचा द्वारा बच्चे को मार कर गंदी नाली में फेंक दिया जाता है। इतना ही नहीं तो बच्चे के चेहरे को जूते से मरोड़ता है। इसमें लेखिका ने मानव की बेरहमी पर प्रकाश डाला है। पैसे के लिए कुछ भी करने वाली प्रवृत्ति पर प्रहार किया है। धार्मिक स्थलों पर हो रहे अनाचार का चित्रण करते हुए लेखकाने पंडित जी की घिनौनी करतूत को उजागर किया है। पंडित जी बारह- तेरह साल की लडकी के साथ घिनौनी करतूत करते हैं। मंदिर के विछवाडे के दरवाजे से धकेलकर तुरंत दरवाजा बंद कर देते है। खून से तरबतर लडकी बदहवासी में भागती चली जाती है। शायद उसका अंत भी विकास मार्ग के फुटपाथ पर होगा।

6.3.3 'दास्ताने कबूतर' कहानी का कथानक

कुसुम अंसल का हिंदी कथा साहित्य में अनूठा स्थान है। वे एक संवेदनशील लेखिका हैं। समाज का जीता जगता चित्रण करने वाली लेखिका है। मानवीय संवेदना महत्त्वपूर्ण है, जो कि आधुनिक युग में कम होती दिखाई दे रही है। लेखिका महानगर के लोगों की भागदौड तथा उनकी मानसिकता से परिचित कराती है। लेखिका अच्छी तरह से जानती है कि मानवीय संवेदना मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण है। मानवीयता धीरे धीरे आत्मकेंद्रीत होती जा रही है जिसका लेखिका को दुःख है।

प्रस्तुत कहानी में लेखिकाने तीन अलग अलग घटनाओं का चित्रण किया है। वह समाज को सुधारना चाहती है। प्रस्तुत कहानी के कबूतर हर दिन सुबह एक जगह पर आकर बैठते है। एक पात्र से पानी पीते है। वे आपस में बातचीत करते है। एक दिन पहला कबूतर नहीं आया था। जब दूसरे दिन पहला कबूतर आता है तब नीला धारी वाला उसे उदास देखकर पूछता है कि कल कहाँ थे? तब पहला कबूतर कहता है कि मैं कल विकास मार्ग के फुटपाथ पर चला गया था। वहाँ मैंने एक दृश्य देखा, एक जवान औरत फुटपाथ के एक कोने पर कराह रही थी। वह अपने पैरों को बार- बार सिकुड रही थी। हाथ उठाकर लोगों से मदद की गुहार लगाती थी। फुटपाथ से कई लोग आते जाते दिखाई देते है लेकिन व्यस्तता के कारण किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। जवान औरत से न जाने कितने पैर, जूते, चप्पले टकरा गयी होगी पर किसी को उसके दर्द, कराहने की चिंता नहीं थी। भागदौड में सभी चले जा रहे थे। इसी समय कोई भी नहीं रूका। कबूतर को लगता है कि

कितना समय लग सकता था उसके दर्द को पूछने में? उसका दर्द बाँट लेने में? क्या आदमी अपनी आदिम जाति के प्रति इतना उदासीन हो सकता है? उस जवान औरत में जितना सहने की शक्ति थी सह लिया। हार कर उसने पैर फैला दिए। उसके फटे सलवार पर एक नन्हा -सा बच्चा दिखाई देता है। यह बच्चा खून से भरा हुआ था। बच्चा रो रहा था पर कोई नहीं रुका, जिसने भी देखा वह तेज कदम को बढाकर निकल गया। उस जवान औरत के शरीर से खून बह रहा था। खून के कारण मक्खियाँ भिनभिना रही थी। सब लोग बेमानी और बेअसर थे। किसी को भी जवान महिला तथा बच्ची पर दया नहीं आती है। हर एक के कान के पास एक काली डिब्बी दिखाई देती है। अर्थात मोबाईल है बस! उसी पर बातचीत करते रहते है, हँसते रहते है। किसी को भी उस औरत तथा बच्ची की चीख सुनाई नहीं देती है। हर तीसरे आदमी के पास यह काली डिब्बी है- अर्थात मोबाईल है? वहीं उनका दीन और ईमान है। मोबाईल से किसी को फुर्सत नहीं है।

दोपहर तक पहला कबूतर फुटपाथ पर हलचल देखता रहा। पहला कबूतर उस औरत को पानी पिलाना चाहता है। अपने पंजों से सडक पर पडी पानी की बोतल को धकेलकर लाता है। उसके गले में पानी की दो बूँदे डालना चाहता हैं जिससे सूखे गले को राहत मिल सके यह उसकी भावना थी। पर कबूतर के पैरों में इतनी शक्ति कहाँ होती है? कि ये पानी की बोतल उठाकर पिलाये? चाहकर भी पहला कबूतर सफलता हासिल नहीं करता है।

कुछ समय के बाद उस औरत का कराहना बंद हो जाता है। आँखें बंद हो जाती है। उसका शरीर शिथिल हो जाता है। उसके शरीर से बहने वाला खून धीरेधीरे काला पडता गया। यही खून लोगों के जूतों के तलवों में चिपक कर न जाने कहाँ- कहाँ चला गया। किसी को भी उस पर दया नहीं आती है। सब लोग अपनी अपनी दिनचर्या में व्यस्त थे, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। महानगर की भीड का यहीं शाश्वत सत्य है कि चाहे कुछ भी हो जाये हमें कोई लेना देना नहीं है।

लेखिका यहाँ बताना चाहती है कि इंसानों की दुनिया में अब 'ईमान' को ग्रहण लग गया है। अर्थात आधुनिक युग में मानव का जमीर भी बदला हुआ है। जिस फुटपाथ पर औरत मर जाती है उसे महानगर का विकास मार्ग कहा जाता है। इस जगह से लोग जुलूस निकालते है, किसी खास आदमी के मरने पर मोमबत्तियाँ जलाते है। जनता के कुछ संवेदनशील लोग मंदिर-मस्जिद को तोड देते है। बेसहारा औरत को सहारा देना कोई नहीं चाहता है। इस काम के लिए समाज के पास समय नहीं है। बच्ची के पास पहला कबूतर बैठा रहता है। मक्खियों को उडाता रहता है। इसी समय फुटपाथ से जाने वाली एक लडकी रुकती है और बच्चे को उठाकर अपने दुप्पटे में लपेटकर सहलाती है। कोई तो उस बच्ची को उठाने वाला मिला गया इस आनंद में पहला कबूतर रहता है। यही पर पहली घटना खत्म होती है।

दूसरी घटना का उल्लेख करते हुए कुसुम अंसलजी ने बच्चे के अपहरण की कथा तथा व्यथा को प्रस्तुत किया है। चितकबरा अपने साथियों से बताता है कि एक दिन हम खंडहर के ऊपर से जा रहे थे तब हमें बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। उसके पास जाकर उसका हालचाल पूछा था तब उस लडके ने बताया था कि जिन लोगों ने मुझे बंद करके रखा है वे कोई और नहीं है। मेरे सगे चाचा है। वह लडका यह भी बताता है

कि मै स्कूल से आ रहा था। चाचा ने मुझे बुलाया और गाडी में बैठने के लिए कहा। वह मेरे अपने थे, जाने पहचाने थे इसीलिए मैं गाडी में बैठ गया। गाडी में बैठने के बाद मेरे ताऊ ने मेरे चेहरे पर रुमाल रख दिया। जब मुझे होश आया तब मैं खंडहर में था। कितने दिन उसे खंडहर रखा गया है इसका पता नहीं हैं। बच्चे को अपने माँ की याद आती है। वह गाडी में क्यों बैठ गया? यह सवाल चितकबरे के द्वारा पूछा जाता है तब वह लडका बता देता है कि वे मेरे अपने थे इसीलिए उन पर विश्वास रखा। पर अब मुझे लगता है कि यह विश्वास ही मेरा जुर्म हो गया है। पता नहीं अभी क्या करेंगे? मेरा अंजाम क्या होगा? वे उसके पिताजी से मुआवजा माँगते है। मेरे पिताजी गरीब है। सीधे –साधे इन्सान है, मामूली नौकरी करते हैं। इतने पैसे नहीं दे सकते है।

अपहरणकर्ता बच्चे के पास खाना रख देते है उसके पिताजी को फोन लगाते है। बच्चे को बोलने के लिए कहते है तब बच्चा कहता है कि पापा मुझे बचा लो! इस कोठरी में मेरा दम घुट जायेगा। माँ के बारे में पूछना चाहता है तब उसके हाथ से फोन छीन लिया जाता है। बेटे को दो चार चाटे मार दिए जाते है। बच्चा रोता बिलखता है। उनसे छोडने की विनंती करता है। अपने पिता की हैसियत को समझता है लेकिन वे मानने के लिए तैयार नहीं है। चितकबरा बच्चे को छोडाने के लिए प्रयास करना चाहता है। बच्चे से चिट्ठी लिखकर उसके माता पिता तक पहुँचाना चाहता है।

चितकबरा अपने साथियों के साथ बच्चे के कमरे तक पहुँचनेवाले ही थे तब उनके आँखों के सामने यही दृश्य दिखाई देता है कि एक आदमी मृत बच्चे के शरीर को घसीटकर ले जा रहा है। वे तीन चार बदसूरत लोग थे। बे लोग आपस में सलाह मशविरा करते हैं। बच्चे के चाचा ने बेरहमी से बच्चे के चेहरे को जूतों से कुचलकर सामने से बहती गंदी नाली में फेंक दिया। बच्चे के चाचा ने बच्चे को इसीलिए मारा कि वह जीवित रह गया तो अपना नाम बतायेगा। मजबूरी में ही उसने बच्चे को मार दिया। चाचा यही सोचते है कि सारी मेहनत बेकार चली गई पैसा भी नहीं मिला लडके का बाप कमिना निकला, पैसा जमा नहीं कर पाया। कोई देख न ले इसी कारण वहाँ से चले जाते है। बच्चे का खून गंदे पानी में मिलकर बहता है। आगे कुछ भी नहीं होता है अर्थात न पुलिस आती है न उस बच्चे की जात वाले आते है। चितकबरा तथा उसके साथी भूख से बेहाल हो चुके है इसीलिए उडकर चले जाते है।

लेखिका ने तीसरी घटना का चित्रण करते हुए धार्मिक स्थलों पर चल रहे अनाचार को दर्शाया है। तीन कबूतर मंदिर में खाना मिलेगा इस आशा से आते है। उन्हें मालूम है कि आज जन्माष्टमी है भगवान का भोग लगाया हुआ खाना मिलेगा। वे भगवान का दर्शन भी करना चाहते है। मंदिर का गुंबद देखते है। मंदिर के कगूरे पर बैठकर जायजा लेते है। मंदिर के मुख्य द्वार पर भक्तों की भीड थी। भक्त एक दूसरे को धक्का मार कर आगे निकलने की कोशिश कर रहे थे। मंदिर का प्रसाद बाहर फेका जा रहा था। कबूतर मंदिर के पिछवाडे में पहुँचते है।

मंदिर के पीछे वाला दरवाजा हमेशा बंद रहता था पर आज वह खुला दिखाई देता है। भक्त लोग पिछवाडे के दरवाजे से भी मंदिर में जाते हैं। यह मंदिर का प्रवेशद्वार नहीं है। मंदिर के पिछवाडे में मोठे पेट वाला पंडितजी रहता है, जो लोगों की जन्मपत्री बाचता है। सभी कबूतर खाने के लिए कुछ मिलेगा इस बात को

ध्यान में रखकर मंदिर के पास मँडराने लगे, तभी पंडित जी ने पीछे का दरवाजा खोला। पंडितजीने अखबार के कागज में कुछ लपेट कर बाहर फेक दिया और तुरंत दरवाजा बंद कर लिया। नीला धारी वाला महंतने फेंकी हुई पुडी को खोलता है। नीला धारी वाल उस चीज को अपने साथियों को दिखता है। गंदी चीज है यह मालूम होने पर वह अपनी चोंच धोने के लिए नल की और भाग जाता है। पहला कबूतर यह देखता है कि पंडित जी ने बारह-तेरह साल की कमसिन लडकी को दरवाजे से बाहर धकेल दिया। वह कमसिन लडकी खून से तरबतर हो गयी थी। वह भागती हुई जा रही थी। पहले कबूतर को लगता है कि उसका भी अंत विकास मार्ग के फुटपाथर पर होगा और यही पर इस कहानी की कथावस्तु खत्म होती है।

जहाँ कहानी की कथावस्तु खत्म होती है वहीं से पाठकों के मन में 88 विचार सुरू होता है कि आगे उस लडकी का क्या हुआ होगा? अंतिम हिस्से में कहानी पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करती है। उपर्युक्त तीनों घटनांओं से कहानीकार यहीं दिखलाना चाहती है कि मनुष्य कितना घिनौना बन चुका है। विवेक से काम नहीं ले रहा है। उसे केवल स्वार्थ ही स्वार्थ दिखाई देता है। तीनों घटना में मानव की संवेदनहीनता दिखाई देती है। पंछियों का मानव से कोई वास्ता नहीं है फिरभी वे मानव के प्रति हमदर्दी दिखलाते है। मानव का मानव से संबंध होने के बावजूद भी वह इन्सानियत को भूल गया है। आज का मानव संवेदनाहीन, स्वार्थी बन चुका है अपने ही रिश्ते के बच्चों का अपहरण कर मौत के घाट उतारना कहाँ तक जायज है? अपने बलबूतें, मेहनत से कमाना चाहिए। इस भौतिकतावादी, चकाचौंदवादी युग में विवेक से काम लेना चाहिए। बच्चे को छोड सकते थे लेकिन डर के कारण बच्चे को खत्म करना यह कहाँ तक सही है? जिस बच्चे ने अभी पूरी दुनिया नहीं देखी है। बच्चे के साथ मारपीट करना, बच्चे के गिडगिडाने पर भी दया न दिखलाना यह क्या दर्शाता है? अर्थात बेरहमी, संवेदनहीनता ही दिखाई देती है।

धार्मिक स्थलों में होने वाले अनैतिकता का पर्दाफाश भी लेखिकाने किया है। आधुनिक युग विज्ञापन का युग है यांत्रिकता का युग है, मोबाईल का युग है। हम मोबाईल से बाहर की दुनिया को भूल चुके है। महानगर में हर आदमी में व्यस्तता होती है। पर इतना भी व्यस्त नहीं होना चाहिए कि हम मानवता ही भूल जाए? एक जवान औरत प्रसव की वेदना को सहती है, सहायता के लिए पुकारती है। लोग उसे टकराते है और आगे बढ जाते है पर उसे अस्पताल में पहुँचाने का कष्ट नहीं उठाते है। अगर किसी ने उस पर दया दिखलाई होती तो बच सकती। उसकी बेटी अनाथ होने से बच जाती। मानवीय असंवेदनशीलता को खत्म कर संवेदना को जागृत करना लेखिका का उद्देश्य है।

6.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिये गये पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) 'दास्ताने कबूतर' कहानी की लेखिका .... है।

अ) ममता कालिया ब) शिवानी क) मन्नू भंडारी ड) कुसुम अंसल

2) .... कबूतर ने पहले कबूतर को सहलाना चाहा।

अ) दूसरे ब) तीसरे क) चौथे ड) पाँचवे

3) ‘दास्ताने कबूतर’ कहानी में.......... समस्या का चित्रण हुआ है।

अ) दहेज ब) भूखमरी क) तलाक ड) बेरोजगारी

4) पहला कबूतर .... गया था।

अ) गाँव ब) शहर क) विकास मार्ग के फूटपाथ पर ड) घर।

5) दास्ताने कबूतर कहानी में ममता कालियाजीने .... घटनांओं का चित्रण किया है।

अ) एक ब) दो क) चार ड) तीन

6) विकास मार्ग के फुटपाथ पर ....की मृत्यु हो गई।

अ) एक अधेड उम्र महिला ब) एक जवान औरत

क) एक लावारिस बच्ची ड) बच्चे

7) दास्ताने कबूतर कहानी का परिवेश .... का है।

अ) देहात ब) महानगर क) स्कूल ड) कालेज

8) अपहृत लडके को उसके .... ने खंडहर में छिपाकर रखा था।

अ) चाचा ब) भाई क) पिता ड) फूफा

9) अपहृत लडका .... से आ रहा था।

अ) घर ब) स्कूल क) गाँव ड) महानगर

10) अपहृत लडके की नाक पर .... ने रुमाल रख दिया।

अ) ताऊ ब) चाचा क) पिता ड) भाई

11) एक जवान औरत की बच्ची .... ने उठाया।

अ) पुलिस ब) लडकी क) माँ ड) पिताजी

12) अपनी चोंच धोने के लिए .... नल की और भागा।

अ) पहला कबूतर ब) दूसरा कबूतर क) नीली धारी वाला ड) चौथा कबूतर

13) दास्ताने कबूतर कहानी में वर्णित मंदिर में .... उत्सव था।

अ) रामलीला ब) जन्माष्टमी क) शिवलीला ड) हनुमान चालीसा

6.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

दास्ताने – बीती बातें, वृत्तांत, घटना बयान, बखान

तसले – कटोरे के आकर वाला बडा बर्तन।

जन्म की प्यास बुझाना(मु) – प्यास दूर करना, पानी की इच्छा पूरी करना।

जजबात – मन में उत्पन्न होने वाला भाव या कोई विचार।

निगलना - गले के नीचे उतार लेना, गटक जाना, खा जाना।

सहलाना - धीरे धीरे हाथ फेरना।

खचाखच- ठूँस-ठूँसकर भरा होना, किसी जगह पर निर्धारित मात्रा या आवश्यकतासे अधिक व्यक्ति या सामान होनाळ

ताज्जुबश्चर्य, आश्चर्य।

गुहार - रक्षा के लिए पुकार, जोर जोर से पुकारना या बुलाना।

बेईमानी- छल कपट या किसी प्रकार का अनाचार करने वाला। किसी बात का कोई भाव या असर न हो।

आला- गीला, भीगा।

अंजाम - रिणाम, अंत, समाप्ति।

गुम होना - खोया हुआ, छुपा हुआ।

कान तक जूँ न रेंगना(मु)- किसी बात पर ध्यान न देना।

जमीर- मन, हृदय, अंतरात्मा।

जुलूसउत्साह या समारोह के लिए यात्रा, जनयात्रा।

बेसहारा-असहाय, जिसका कोई सहारा न हो।

सीखचों- लोहे का लंबा पतला छड।

खंडहर - गिरे हुए मकान का अवशेष, भग्न अवशेष।

बेरहमी- निर्दयता, निष्ठुरता।

ठेलकर - धकेलना।

दम घुटना(मु) - साँस लेने में कष्ट होना, दिल घबराना।

तरकीब लडाना(मु) -उपाय, तरीका, युक्ति।

राहगीर- पथिक, यात्री, रास्ता चलता हुआ व्यक्ति।

बदसूरत कुरूप, भद्दी सूरतवाला, बेडौल।

परिंदा- चिडियाँ, पक्षी, पाखी।

फरियाद - शिकायत।

अहमियत - महत्त्व, गंभीरता, महिमा।

गुंबद - भवन की छत पर बना गोलाकर हिस्सा।

चढावा - मंदिर या किसी अन्य पूजा स्थल पर चढाई जाने वाली सामग्री।

कगूरे- चोरी शिखर।

जायजा – जाँच पडताल।

तोंद – बडा हुआ पेट, फुला हुआ पेट।

उत्फुल्लता – खिला हुआ, प्रसन्न।

गमछा– सूती चौलिया जैसा वस्त्र।

बदहवासी – मस्तिष्क का वह रोग जिसमें मन और बुद्धी का संतुलन बिगड जाता है।

खून से तर बतर – खून से भीगा हुआ।

कमसिन – अल्पवयस्क, छोटी उमर का।

6.6 स्वयं अध्ययन प्रश्न के उत्तर

1) ड) कुसुम अंसल। 2) अ) दूसरे। 3) ब) भूखमरी।

4) क) विकास मार्ग के फूटपाथ पर। 5) ड) तीन। 6) ब) एक जवान औरत।

7) ब) महानगर। 8) अ) चाचा। 9) ब) स्कूल

10) अ) ताऊ 11) ब) लडकी 12) क) नीली धारी वाला

13) ब) जन्माष्टमी

6.7 सारांश

1) दास्ताने कबूतर यह कुसुम अंसल की कहानी है।

2) दास्ताने कबूतर कहानी मानव की संवेदनहीनता पर प्रकाश डालती है।

3) इस कहानी में तीन में घटनाएँ है। तीनों घटनाओं का वर्णन लेखिकाने कबूतरों के माध्यम से किया है।

4) प्रस्तुत कहानी की प्रथम घटना में एक जवान औरत फुटपाथ पर प्रसव वेदना से कराहती है। मदद के लिए गुहार लगाती है। महानगरीय लोगो में व्यस्तता होने के कारण कोई भी उसकी चीख, पुकार नहीं सुनते है। वह औरत एक बच्ची को जन्म देती है उसके शरीर से खून बहता है। मक्खिया भिनभिनाती है। पहला कबूतर उसे पानी पिलाना चाहता है। रास्ते पडी बोतल को धकेलकर लाता है पर उसके पैरों में इतनी शक्ति नहीं कि पानी की बोतल उठाकर पिला सके। जवान औरत जितना सह सकती थी सह लिया। अंत में वह दम तोड देती है। उसकी बच्ची अनाथ हो गयी। फुटपाथ से गुजनेवाली एक लडकी बच्ची उठाती है और दुपट्टे में लेकर सहलाती है।

5) प्रस्तुत कहानी की दूसरी घटना अपहरण की है। बच्चे का चाचा और ताऊ स्कूल से आनेवाले बच्चे का अपहरण करते है। चाचा परिचित होने के कारण बच्चा गाडी में बैठता है। उसे खंडहर में रखते है।वे बच्चे के पिताजी से मुआवजा माँगते है। बच्चा अपने पिताजी की हैसियत को समझाता है। माँ की याद में रोता है। छोड देने लिए कहता है। चाचा और ताऊ को उसपर दया नहीं आती है।वे पैसे न मिलने के कारण बच्चे को मार देते। इतना ही नहीं तो मारने के बाद उसके चेहरे को पैरो के जूते से कुचल देते है और गंदे पानी के नाली में फेंक देते है। प्रस्तुत घटना से लेखिका मानव की बेरहमी, घिनौनी हरकत पर प्रकाश

डालती है। इस घटना से लेखिका यह कहना चाहती है कि अपहरण की अधिकतर घटनाएँ परिचित, जाने-पहचाने लोगों द्वारा की जाती है।

6) धार्मिक स्थलोंपर हो रहे आनाचार का वर्णन लेखिकाने तीसरी घटना के माध्यम से किया है। मंदिर के पंडित जी द्वारा अल्पवयस्क लडकी के साथ अनाचार किया जाता है। मंदिर के पीछवाडे के दरवाजे से उसे धकेल दिया जाता है और दरवाजा तुरंत बंद कर दिया जाता है। मानसिक संतुलन खोकर, खून से भीगी हुई लडकी भागती जा रही है। शायद उसका भी अंत फुटपाथ का विकास मार्ग ही होगा। जिस तरह से पहली घटना के जवान औरत का हुआ था।

7) उपर्युक्त तीनों घटनाओं से यही स्पष्ट होता है कि महानगरीय लोगों की संवेदशीलता दिन-ब-दिन खत्म होती जा रही है। दया, माया, ममता की जगह आज बेरहमी, घिनौने पन ने ले ली है आधुनिक युग में पैसों के लिए कुछ भी करने की प्रवृत्ति बढ रही है।

8.8 स्वाध्याय

6.8.1 अ) लघुत्तरी प्रश्न

1) बच्चे के अपहरण की कथा को स्पष्ट कीजिए।
2) पहले कबूतर ने फुटपथ पर देखे हुए दृश्य को स्पष्ट कीजिए।

6.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) दास्ताने कबूतर कहानी की कथावस्तु लिखिए।
2) ''दास्ताने कबूतर'' यह कहानी मानव की अमानवीयता, संवेदनहीनता एवं धार्मिक स्थलों पर किए जाने वाले अनाचार पर प्रहार करती है।'' इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

6.9 क्षेत्रीय कार्य

1) दास्ताने कबूतर कहानी का नाट्यरूपांतर कीजिए।
2) दास्ताने कबूतर कहानी का मराठी में अनुवाद कीजिए
3) महानगरीय जीवन की व्यस्तता पर निबंध लिखिए।
4) अपहरण के दुष्परिणामों दिखानेवाली कहानी लिखिए।
5) धार्मिक स्थलों के पाखंड एवं अनाचार पर निबंध लिखिए।

6.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) कुसुम अंसल - पानी का रंग -कहानी।
2) कुसुम अंसल- वह जिनावर- कहानी।
3) कुसुम अंसल- यादों के सहयात्री -कहानी।

❑❑❑

इकाई 3

कथेत्तर साहित्य – व्यंग्य

7. बहानेबाजी (व्यंग्य)

–भदंत आनंद कौसल्यायन

अनुक्रम

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 विषय विवेचन

7.3.1 भदंत आनंद कौसल्यायन का परिचय

7.3.2 'बहानेबाजी' व्यंग्य का कथानक

7.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

7.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

7.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

7.7 सारांश

7.8 स्वाध्याय

7.9 क्षेत्रीय कार्य

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

7.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- कथेत्तर साहित्य का अध्ययन कराना।
- व्यंग्य विधा से परिचित होंगे।
- हिंदी साहित्य परंपरा में व्यंग्यकारों का स्थान समझ सकेंगे।
- जन–जीवन में जागृति लाना।
- सामाजिक आचरण एवं मान्यताओं के जर्जर खोखलेपन को उजागर करना।

- मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके, उन्हें उभारना और सुधारना।
- भदंत आनंद कौसल्यायन के व्यंग्य साहित्य से परिचित होंगे।
- 'बहानेबाजी' व्यंग्य की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- समाज में चल रही बहानेबाजी से परिचित होंगे।
- प्रस्तुत व्यंग्य विधा से उचित बोध ग्रहण करेंगे।

7.2 प्रस्तावना :

'व्यंग्य' शब्द की उत्पत्ति विअंग से मानी जाती है। यह शब्द अंग्रेजी से 'सैटायर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसमें मानव चरित्र की दुर्बताओं की आक्षेपात्मक आलोचना की जाती है। अत: इसका उद्देश्य सुधार माना जाता है। कथेत्तर साहित्य के अंतर्गत व्यंग्य विधा का अपना एक विशिष्ट स्थान है। स्वतंत्रता के बाद समाज में काफी तेज रफ्तार से जीवन विषयक मूल्यों का पतन हो गया। इस बिमारी पर साहित्यिक इलाज के रुप में व्यंग्य ने जन्म लिया। एक प्रभावी दवा का कार्य व्यंग्य करती है।

वर्तमान जीवन एक प्रकार से असंगतियों से, विद्रुपताओं और विकृतियों से युक्त है। ऐसी स्थिती में व्यंग्य ही एक ऐसा सशक्त हथियार है जो यथार्थ को सबके सामने प्रस्तुत कर सकता है। व्यंग्य आज मानव-जीवन के सर्वांगिण रुप-स्वरुप को उद्घाटित करने में पूर्णत: समर्थ सिद्ध हो रहा है। मनोरंजन के साथ-साथ आम आदमी को सचेत और सावधान रहने का संदेश देता है, तथा कम शब्दों में अधिक से अधिक प्रभाव उत्पन्न करने अर्थात् गागर में सागर भर देने की क्षमता व्यंग्य में होती है। व्यंग्य एक प्रभावी शस्त्र है, जो सुधार लाता है। अत: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में व्यंग्य अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है।

7.3 विषय विवेचन :

7.3.1 भदंत आनंद कौसल्यायन का परिचय एवं साहित्यिक कृतियाँ

भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म सन 1905 में पंजाब प्रात के अंबाला जिले के सोहाना गांव में हुआ था। इनके बचपन का नाम हरनाम दास था। इन्होंने नेशनल कॉलेज से बी.ए.की पदवी हासिल की थी। हिंदी साहित्य में अनन्य रुचि रखनेवाले कौसल्यायन बौद्ध धर्म के अनुयायी होने के साथ-साथ बौद्ध भिक्षु भी थे। उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए देश-विदेश की बहुत सारी यात्राएं की और अपना सारा जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया।

भदंत आनंद कौसल्यायन लंबे समय तक महात्मा गांधीजी के साथ वर्धा में रहे। वे गाँधीजी के विचारों और कार्यों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सहयोग से हिंदी भाषा के उत्थान के लिए लगातार कार्य किया और विदेशों में भी उन्होंने हिंदी के महत्व को बढावा दिया। बौद्ध, पालि भाषा के मूर्धन्य विद्वान तथा लेखक थे। इसके साथ ही साथ उन्होंने पूरे जीवन

घूम-घूमकर समतामूलक समाज का प्रचार एवं प्रसार किया। दस सल तक वे राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधानमंत्री रहे।

सन 1988 में हिंदी साहित्य के महान लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन का निधन हो गया लेकिन वे अपने हिंदी साहित्य के कार्यों के माध्यम से अमर हो गए।

'भिक्षु के पत्र', 'जो भूल ना सका', 'आह! ऐसी दरिद्रता', 'बहानेबाजी', 'यादि बाबा ना होते', 'रेल का टिकट', 'कहाँ क्या देखा' आदि भदंत आनंद कौसल्यायन की प्रमुख साहित्यिक लेख एवं पुस्तकें है। उन्होंन 20 से आधिक पुस्तकें लिखी जिनमें बौद्धधर्म-दर्शन संबंधित कई ग्रंथ है। व्यंग्य के साथ -साथ उन्होंने निबंध, संस्मरण और यात्रा वृत्तांत बहुत ही सरल, सहज और बोलचाल की भाषा में लिखे जो काफी चर्चित रहे।

7.3.2 'बहानेबाजी' व्यंग्य का कथानक :

'बहानेबाजी' भदंत आनंद कौसल्यायन द्वारा लिखित व्यंग्य रचना है। प्रस्तुत रचना में उन्होंने समाज में चल रही बहानेबाजी पर गहरा प्रकाश डाला है। जहाँ कहीं भी देखो बहानेबाजी नहीं ऐसा कौनसा भी क्षेत्र नहीं है। मतलब बहानेबाजी से कोई भी क्षेत्र बच नहीं पाया है। जैसे कि आप भी एक विद्यार्थी हो या फिर एक अफसर। लेखक कहते है कि झूठ बोलने और बहानेबाजी में बहुत अंतर नहीं है। उनका मानना है कि जिस प्रकार जीवन में धातु का रुपया और कागज का नोट आया ठिक उसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में बहानेबाजी और झूठ दोनों का पर्याप्त चलन आया।

आप विद्यार्थी होने के कारण आपको बहानेबाजी के बारे में पता है कि आप किस प्रकार अपने मित्र के साथ बहानेबाजी करते है। उसी समय आप मजे में कहते है.... यार यह चीज मेंरी नहीं अमुक की है। असल में तो वह चीज खुद की होती है, इसे कहते है बहाने बाजी इस भाँति आप बहाने बाजी कर ही लेते है। लेखक कहते है कि .... केवल विद्यार्थी ही नहीं अपितु सब अलग-अलग तरीके से बहानेबाजी करते है। एक बार तो अंग्रेज अफसर भी बहानेबाजी कर बैठे और उन्हें मुँह की खानी पडी थी। लेखक के मित्र को मूर्तियाँ, चित्र और सिक्के संग्रह करने का बहुत शौक था। एक बार उनके परिचित मित्र अंग्रेज अफसर के पास सुंदर मूर्ति देखी तब उन्होंने सोचा किसी न किसी बहाने उसे प्राप्त करना चाहिए। अत: अंग्रेज अफसर के पास जाकर एक चित्र, जिसके उन्हें कतई जरुरत नहीं थी, माँग बैठे। इस पर साहब बहादुर ने कहा ''क्या करुँ, आपने ऐसी चीज मांगी है, जो मेरी नहीं है। उसने बडी चतुराई से कहा, यह चित्र आपका नही है, वह मूर्ति तो आपकी ही है, वही दे दिजिए साहब बहादुर बहानेबाजी के चक्कर में फँस गये। और मूर्ति हथियाँ ली।

विद्यार्थी जीवन में ऐसा एक भी विद्यार्थी जीवन काल में बहानेबाजी से काम न लिया हो। यदि स्कूल में लेट हो गये तो बहानेबाजी, गैरहाजिर हो गये तो बहानेबाजी, छुट्टी की जरुरत हुई तो बहानेबाजी, पाठ याद नहीं हुआ तो बहानेबाजी, पेट में दर्द से लेकर माँ की बीमारी तक सब बहानेबाजी में शामिल।

लेखक के मतानुसार झूठ और बहानेबाजी में सूक्ष्म अंतर है सीधे सरल यथार्थ के कथन का नाम झूठ है, टेढे-मेढे कलापूर्ण झूठ का नाम बहानेबाजी है। झूठ में यदि साहस की जरुरत है तो बहानेबाजी में चतुराई की! मुर्ख आदमी झूठ बोल सकता है किंतु बहाना नहीं बना सकता। झूठ बोलना किसी ग्रंथ का अनुवाद करने जैसा सरल कार्य है किंतु बहानेबाजी करना मौलिक रचना की तरह कठिन कार्य है। मतलब एक

आदमी के लिए एक काम आसान होता है और दूसरे के लिए कोई दूसरा झूठ और बहानेबाजी दोनों में पकडे जाने का खतरा निहित होता है और बुद्धिमान आदमी दोनों से परहेज करता है।

लेखक कहते है कि आज के युग में आप चाहे जो कुछ हो बहानेबाजी आपका पीछा करेगी ही। आपको यदि आपके संपादक मित्र ने लेख के लिए हैरान किया तो कौनसा भी कारण प्रकट न करके, आप व्यस्त रहने का बहाना बनाकर उससे छुटकारा पाते है। आप लेखक हो या चाहे आप संपादक हो, बहानेबाजी से आप मुकर नहीं सकते। केवल लेखक और संपादक परस्पर बहानेबाजी की आड में शिकार नहीं खेलते तो सभी खेलते है। घर में खेलते है घर के बाहर खेलते है।

लेखक ने इस पर आधारित बौद्ध वाङ्:मय में बडी रोचक कथा बताई है। पूर्व समय में वाराणसी में ब्राह्मदत्त नामक राजा राज्य करता था। उस समय ब्राह्मणकुल में पैदा हुए बोधिसत्व नामक आचार्य थे। इनके पास बनारस के एक ब्राह्मण जनपद-वासी ने तीनों वेद और अठारह विद्याएँ सीखी। वह दिन में दो-तीन बार बोधिसत्व के पास आता जाता था। एक बार वह एक सप्ताह के बाद बोधिसत्व के पास पहुँचा तो आचार्य ने पूछा बहुत दिनों से दिखाई नहीं दिये।

इस पर जनपद वासी ने कहा ...... मेरी पत्नी को वायु बाँधती है, सो मैं उसके लिए घी-तेल तथा अच्छे-अच्छे भोजन खोजता हूँ, उसका शरीर मोटा हो गया है, चमडी निकल आयी है लेकिन वात रोग समाप्त नही होता अत: मै उसकी सेवा करने के कारण यहाँ आने का अवकाश नही मिला। असल में उसकी पत्नी चिकने, मीठे, स्वादिष्ट यवागु भात खाकर बहाना बनाकर बडबडाती हुई आराम करती थी। पति के बाहर चले जाने पर मौज करती।

ये सभी बातें बोधिसत्व के समझ में आ गई कि इसे धोका देकर वह लेटी रहती है। इसलिए उन्होंने उसे कहा कि.......... अबसे उसे दूध-घी, रस आदि मत दो। गोमुत्र में त्रिफला और पाँच प्रकार के पत्ते डालकर काडा बनाओ। जब ये औषधि तैयार हो जाय तो नये बर्तन में रखकर हाथ में रस्सी या छडी लेकर कहना- 'भद्रे यह तेरे रोग की उचित दवाई है। या तो इसे पी, नहीं तो जैसा भोजन तू करती है उसके मुताबिक काम कर' और अगर न माने तो रस्सी या छडी से प्रहार कर केशों को पकडकर खिंचकर पीटना। उसी समय उठकर वह काम करने लगेगी।

बोधिसत्व के कथनानुसार उसने यह इलाज किया। उसने सोचा अब मैं इसे धोखा नहीं दे सकती उसकी पत्नी उठकर काम करने लगी।

आदमी समझता है कि बहानेबाजी से काम न करके काम करने का नाटक मात्र से काम चल सकता है लेकिन एक दिन ऐसे निकम्में आदमी की पोल खुल ही जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि आदमी के समझ में आना चाहिए कि हमारी कौनसी आवश्यकताएँ वास्तविक है और कौनसी फालतू! आपनी स्थिति, अवस्था इसके हिसाब से व्यावहारिक रेखा खिंचनी चाहिए। 'लोभ' के कारण यह सब घटित होता है। इस लोभ की तो कहीं भी इति नहीं है। एक के बाद दुसरी चीज के पिछे भागना इससे मानव कभी सुखी हो ही नहीं सकता। जब मानव को अपनी सीमा के अंदर 'न बहुत थोडी और न बहुत ज्यादा' आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने मात्र के सुख अनुभव करने की कला आयेगी तब बहानेबाजी की कला का -हास हो जायेगा।

इस प्रकार अज्ञान, लोभ और भ्रम तीनों कुछ ऐसे एक दूसरे पर निर्भर है कि उनमें कौन किसका मूल कारण है यह कहना कठिन है। तो भी बहानेबाजी का मूल कारण भय ही तो है। सच बोलने का हमेशा दंड मिलता है और झूठ बोलकर आदमी बहुदा दंड से बच ही जाता है। अगर नौकर को घर लौटने में और विद्यार्थी को स्कूल पहुँचने में देर हो गयी। दोनों की देरी का असल कारण अलग होता है अगर अपनी देरी का सच्चा कारण बता दे तो क्या दोनों को यह विश्वास हो सकता है कि दोनों को दंड या डाँट-डपट नहीं सुननी पडेगी। यदि इतना विश्वास हो जाय तो दोनों में से एक भी बहानेबाजी से काम नहीं चलायेंगे। बहानेबाजी तथा भय का पहला अक्षर 'ब' और 'ह'के संयोग से बना प्रतीत होता है। बहानेबाजी के मूल में ही 'भय' है। लेखक अंत में कहते है कि बहानेबाजी के बारे में इतनी देर तक कुछ कहना तथा सुनना यह भी एक तरह की बहानेबाजी ही है और इसे मै स्वीकार करता हूँ।

निष्कर्षत : यह कहा जा सकता है कि .... बहानेबाजी से सचमुच कुछ समय के लिए काम चलता है। अपनी स्थिति, अवस्था के हिसाब से अगर हम अपनी आवश्यकताओं सिमित करके सुख का अनुभव करेंगे तो बहानेबाजी की कला का -हास हो जायेगा। इसकी तरफ लेखक ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

7.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

प्रश्न. 1) निम्निलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए पर्यायों में से सही पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'बहानेबाजी' ....की रचना है।

   1) शरद जोशी 2) कृष्णा सोबती 3) भदंत आनंद कौसल्यायन 4) प्रेमचंद

2. भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म.......गांव में हुआ था।

   1) सोहाना 2) कानपुर 3) पुणे 4) मनाली

3. कौसल्यांयन ....धर्म के अनुयायी थे।

   1) जैन 2) मुस्लिम 3) बौद्ध 4) सिख

4. कौसल्यायन दस साल तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा के ....थे।

   1) अफसर 2) मुख्य 3) प्रधानमंत्री 4) प्रधानाचार्य

5. भदंत आनंद कौसल्यायन ने ....की उपाधि प्राप्त की थी।

   1) बी.ए. 2) एम.ए. 3) एल.एल.बी. 4) एम.कॉम.

6. कौसल्यायन ने सारा जीवन ....धर्म के लिए समर्पित कर दिया था।

   1) जैन धर्म 2) बौद्ध धर्म 3) ब्राहमण 4) मारवाडी

7. कौसल्यायन का बचपन का नाम.......था।

   1) नामदास 2) अंबादास 3) हरनामदास 4) रामदास

8. बोधिसत्व के पास ....ने तीन वेद और अठारह विद्याएँ सीखी।

1) जनपद-वासी 2) वनवासी 3) रामदास 4) रुपवासी

9. आचार्य ने जनपदवासी को उसकी पत्नी के लिए .... में त्रिफला और पाँच प्रकार के पत्ते डालकर काडा बनाने के लिए कहा।

1) पानी 2) शक्कर 3) गोमूत्र 4) गुड

7.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

बहानेबाजी	: (संज्ञा स्त्री) बहाना बनाने का काम या स्वभाव, टालमटोल, अनाकानी।
शौक	: किसी वस्तु की प्राप्ति।
चक्कर में फँसना	: मुसीबत में फंसना, गलत जगह या गलत संगत में फंसना।
हथिया लेना	: कब्जा कर लेना।
परहेज करना	: अंतर रखना, दूर रहना।
स्थानाभाव	: स्थान का अभाव।
मसिजीवी	: लेखन कार्य कर के आजीविका चलानेवाला।
वायु बाँधना	: शरीर में वात, पित्त और कफ के दोष।
औषधि	: रोग का उपचार करने वाला द्रव।
यवागु भात	: चावल का वह माँड जो सडाकर कछु खट्टा कर दिया है।
पोल खुलना	: रहस्य प्रकट होना।
अभ्यास	: आदत, किसी काम को बार-बार करना।
आश्रित	: सहारा दिया हुआ।
डाँट-डपट सुनना	: क्रोध पूर्वक डाँट कर कही जानेवाली बात,फटकार।
व्यंग्य	: किसी पर प्रहार करने के लिए कही गई तीखी बात, इसमें चोट करने की क्षमता होती है। इसे चोट से जख्म न होकर मीठा दर्द होता है।

7.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) भदंत आनंद कौसल्यायन 2) सोहाना 3) बौद्ध

4) प्रधानमंत्री 5) बी.ए. 6) बौद्ध धर्म

7) हरनामदास 8) जनपद-वासी 9) गोमुत्र

7.7 सारांश :

1. हिंदी साहित्य जगत में अनन्य रुचि रखनेवाले कौसल्यायन बौद्ध धर्म के अनुयायी होने के साथ–साथ बौद्ध भिक्षु भी थे। अपना सारा जीवन उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया। लंबे समय तक वे महात्मा गांधीजी के साथ वर्धा में रहे हिंदी भाषा के उत्त्थान के लिए लगातार वे कार्य करते रहे। उन्होंने विदेशों में भी हिंदी के महत्व को बढावा दिया।

2. भदंत आनंद कौसल्यायन द्वारा लिखित 'बहानेबाजी' व्यंग्य में समाज में चल रही बहानेबाजी पर प्रकाश डाला है। जहाँ बहानेबाजी नहीं ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं है। कभी–कभी बहानेबाजी से काम चलता है, लेकिन एक न एक दिन जरुर उसकी पोल खुलती है। बहानेबाजी का मूल कारण भय ही है। भय के कारण हम बहानेबाजी करते है ऐसा लेखक का मानना है। आगे चलकर लेखक कहते है कि अगर हम अपनी आवश्यकताओं को सीमित करके सुख का अनुभव करेंगे तो जरुर एक न एक दिन बहानेबाजी का –हास जरुर हो जायेगा।

7.8 स्वाध्याय :

अ) टिप्पणियाँ

1. बहानेबाजी को नष्ट करने के उपाय।
2. झूठ और बहानेबाजी में अंतर।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न –

१. 'बहानेबाजी' व्यंग्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

२. कौसल्यायन ने समाज में चल रही बहानेबाजी पर किस प्रकार व्यंग्यात्मक प्रहार किया है स्पष्ट कीजिए।

7.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'बहानेबाजी' व्यंग्य पर आधारित नाट्य रुपांतर कीजिए।

7.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. भदंत आनंद कौसल्यायन – 'यदि बाबा न होते'
2. सं.प्रो. जयमोहन एम.एस – गद्य के विविध आयाम

8. जैसे उनके दिन फिर (व्यंग्य)

– हरिशंकर परसाई

अनुक्रम

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 विषय विवेचन

8.3.1 हरिशंकर परसाई का परिचय

8.3.2 जैसे उनके दिन फिर व्यंग्य का कथानक

8.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

8.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

8.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

8.7 सारांश

8.8 स्वाध्याय

8.9 क्षेत्रीय कार्य

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

8.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य से परिचित होंगे।
2. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य के कथानक से परिचित होंगे।
3. प्रशासकीय व्यवस्था देखनेवाले नेताओं के अंदर कौन-कौनसे गुणों की आवश्यकता होनी चाहिए, इससे परिचित होंगे।
4. प्रस्तुत व्यंग्य विधा से उचित बोध ग्रहण करेंगे।
5. जीवन के नैतिक मूल्यों को पहचान सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना :

सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों की विसंगतियों को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने खोलकर रखना तथा समाज को परिवर्तन की दिशा दिखाना हरिशंकर परसाई की व्यंग्य विधा का प्रमुख उद्देश्य रहा है। हिंदी साहित्य में विशेषत: 19 वीं शताब्दी में व्यंग्य विधा को सशक्त बनाने के लिए हरिशंकर परसाई का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। उनका व्यंग्य लेखन पाठक को अंतर्मुख बनाने के साथ साथ मानवी जीवन की कुप्रवृत्तियों पर तीखा प्रहार करता है। विषमता भरे परिवेश का वे पर्दाफाश करते है।

8.3 विषय विवेचन :

8.3.1 हरिशंकर परसाई का परिचय :

हास्य-व्यंग्य विधा के अत्यंत लोकप्रिय रचनाकार हरिशंकर परसाई जन्म मध्य प्रदेश, इटारसी के जमानी नामक गाँव में 12 अगस्त, 1924 में हुआ। सन् 1949 में नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. होने बाद कई सालों तक वे महाविद्यालयों में प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहें। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, विसंगतियों, रिश्वतखोरी, विषमताओं पर अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने कठोर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है जो हिंदी साहित्य में विशेष उल्लेखनीय है। सामाजिक दुरावस्थाओं के प्रति सजगता दिखाना, सुधार लाना यह उनके लेखन का प्रमुख उद्देश्य है। अन्य रचनाकारों के सामने एक आदर्श रखा है।

अपने साहित्यिक जीवन में उन्होंने 'हँसते है और रोते है', 'तब की बात और थी', 'जैसे उनके दिन फिरे' आदि कहानियों का लेखन किया। 'अपनी अपनी बीमारी', 'पगडंडियों का जमाना', 'बेईमानी की परत', 'सदाचार का तावीज', 'भूत के पाँव पीछे', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' आदि उल्लेखनीय निबंध लिखे जो वैचारिक दृष्टि से सरस थे। 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल', 'रानी नागफनी की कहानी' आदि उपन्यास लिखे। इनकी सभी रचनाएँ समकालीन जीवन को समझने के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। स्पष्ट है हरिशंकर परसाई एक सक्षक्त गद्यकार है। साथ ही हिंदी गद्य के व्यंग्यकारों में काफी प्रशंसनीय है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से उच्च कोटि की है।

8.3.2 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य का कथानक :

'जैसे उनके दिन फिरे' हिंदी साहित्य के सफल व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना है। प्रस्तुत व्यंग्य रचना को बहुत रोचक कहानी के मध्यम से व्यक्त किया है। राजा अर्थात् प्रशासनिक व्यवस्था देखनेवाले नेताओं के, तथा अधिकारियों के गुणों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य में निहित कथा कुछ इस प्रकार है

एक राजा की अनेक पत्नियाँ और चार पुत्र थे। बडी रानी ने बाकी की रानियों के पुत्रों को जहर देकर मार डाला था क्योंकि वह अपने पुत्रों को राजगद्दी पर बैठाना चाहती थी। राजा उससे खुश थे क्योंकि वे चाणक्य की नीतियों का अनुसरण करनेवाले थे।

एक दिन राजा अपने चारों पुत्रों को बुलाकर अपने बुढापे के कारण किसी एक को राजगद्दी पर बैठाने हेतु उनकी परीक्षा लेना चाहता है। परीक्षा इस प्रकार थी कि उनके चारों पुत्रों को अपने राज्य से अधिक से अधिक धन सीमा से कही दूर जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी होगी, कमाना होगा, उसी के अनुसार राजा सुनिश्चित किया जायेगा। चारों पुत्र बिना श्रद्धा के राजा को प्रणाम करके चले जाते हैं और ठीक एक साल बाद फाल्गुन की पूर्णिमा को राजदरबार में हाजिर होते है। राजा के आदेशानुसार चारों पुत्र अपनी-अपनी योग्यता सिद्ध करते है।

राजा के संकेत के अनुसार पहले पुत्र ने कहा ....राजा के लिए ईमानदारी और परिश्रम ये गुण बहुत आवश्यक है अत: उसने पूरे एक साल तक व्यापारी के यहाँ परिश्रम और ईमानदारी से बोरे ढोने का काम किया और पाच सौ स्वर्णमुद्राएँ कमाई अत: वह कहता है कि, मै ही राजा बनने योग्य हूँ।

राजा के आदेश पर दूसरे पुत्र ने कहा कि उसके अनुसार साहसी, लुटेरा और अपने बाहुबल पर भरोसा होना चाहिए, तभी वह राज्य का विस्तार कर सकता है इसलिए मैने पडोसी राज्य में जाकर डाकुओं के गिरोह संगठन में लूटमार की। बडे भाई जहा काम करते थे वहाँ पर डाका डाला। एक साल में मैने पाँच स्वर्णमुद्राएँ हासिल की मुझे लगता है कि एक राजा साहसी और लुटेरा होना चाहिए। ये दोनों गुण मुझमे है अत: मै राजगद्दी का अधिकारी हूँ।

राजा के संकेत पर तीसरा पुत्र बोला, मैने दुसरे राज्य में जाकर घी में मूँगफली का तेल और शक्कर में रेत मिलाकर व्यापार किया। राजा से लेकर मजदूर तक को साल भर घी-शक्कर खिलाया। जिस सेठ के यहाँ बडे भाई बोरे ढोते थे, वह मेरा ही मिलावटी माल खाता था। तथा मँझले लूटेरे भाई को भी मूँगफली का तेल- मिलाकर घी तथा रेत- मिली शक्कर मैने खिलाई है। अत: मेरा विश्वास है कि राजा को बेईमान और धूर्त होना चाहिए तभी तो उसका राज टिक सकता है। ये दोनों गुण मुझमें विद्यमान है। मेरी एक वर्ष की कमाई दस लाख स्वर्णमुद्राएँ मेरे पास है। अत: गद्दी का अधिकारी मैं ही हूँ।

राजा ने सबसे छोटे कुमार की ओर देखा तब उसने कहा देव, मैं जब दूसरे राज्य में पहुँचा तब कई दिन भूखा-प्यासा ही भटकता रहा, चलते-चलते एक 'सेवा आश्रम' में पहुँचा। वहाँ तीन-चार आदमी बैठे ढेर सारी स्वर्णमुद्राएँ गिन रहे थे। उनसे मैंने पूछा ऐसा कौनसा धंधा है कि इतनी स्वर्णमुद्राएँ गिन रहे है। उनमें से एक ने उत्तर दिया 'त्याग और सेवा'। मैने उनसे कहा कि ये तो धर्म है, धंदा कैसे हो सकता है। मैने उनसे सब कलाएँ हासिल की और मानव सेवा संघ खोल दिया और मानव-मात्र की सेवा करने का बीडा उठाया। इस पुण्य-कार्य में हर एक ने मदत की। पिताजी उस देश के निवासी बडे भोले थे, उन्होंने भी चंदा दिया। मँझले भैया से भी मैने चंदा लिया था, बडे भैया ने भी पेट काटकर दो मुद्राएँ दी, लुटेरे भाई ने भी एक सहस्त्र मुद्राएँ दी थी। राज्य का आधार धन है, राजा को प्रजा से धन वसूल करने की कला आनी चाहिए। मुझमें ये गुण विद्यमान है इसलिए मै ही राजगद्दी का अधिकारी हूँ। मैने एक साल में चंदे से बीस लाख स्वर्णमुद्राएँ कमाई, जो मेरे पास है।

इस पर राजा ने मंत्री से पूछा आपकी क्या राय है इन चारों में कौन राजा होने योग्य है। राजा ने मंत्री की सलाह से छोटे राजकुमार को राजगद्दी दे दी जाय ऐसी सलाह दी। क्योंकि एक साल में बीस मुद्राएँ इकटठी की। तीनों कुमारों के गुण भी उसमें विद्यमान है ......बडे जैसा परिश्रम, दूसरे के समान साहस और लूटेरा तथा तीसरे के समान बेईमान और धूर्त भी है। अतएव उसे ही राजगद्दी दी जाए। मंत्री के कहने के अनुसार दूसरे दिन छोटे राजकुमार का राज्याभिषेक हो गया, तीसरे दिन पडोसी राज्य की गुणवती राजकन्या से उसका विवाह हो गया और छोटा राजकुमार चौथे दिन मुनि की दया से उसे पुत्ररत्न प्राप्त होता है और सुख से राज करने लगा।

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि लेखक ने एक बहुत रोचक कहानी ने माध्यम से प्रशासनिक व्यवस्था देखनेवाले नेताओं, अधिकारियों के गुणों को व्यंग्यात्मक शैली में चित्रित किया है। उसके साथ ही साथ योग्य राजा के गुणों को बडी सहजता से चयन किया है। अंत में यह सुझाव दिया है कि जैसे उनके दिन फिरे, वैसे सबके फिरे अत: इस व्यंग्य रचना का कथानक बेजोड है।

8.4 स्वयं अध्ययप के लिए प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित वाक्यों के निचे दिए गए पर्यायों में उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'जैसे उनके दिन फिरे' यह .... की रचना है।

   1) हरिशंकर परसाई 2) शरद जोशी 3) प्रेमचंद 4) मोहन राकेश

2. 'जैसे उनके दिन फिरे' यह .... विधा है।

   1) रेखाचित्र 2) कहानी 3) व्यंग्य 4) जीवनी

3. राजा के .... लडके थे।

   1) सात 2) चार 3) नौ 4) दो

4. राजा .... ने कान के पास के केश श्वेत होते ही राजगद्दी छोड दी।

   1) जयसिंह 2) विक्रम 3) दशरथ 4) चंद्रगुप्त

5. फाल्गुन की .... को राजसभा में चारों लडके हाजिर हुए।

   1) अमावस 2) पूर्णिमा 3) कालीरात 4) चाँदरात

6. चारों राजकुमार अपने पुरुषार्थ तथा .... को अजमाने चल पडे।

   1) भाग्य 2) किस्मत 3) सपने 4) नसीब

7. पडोसी राज्य में बडा राजकुमार व्यापारी के यहा .... काम करने लगा।

   1) बोरे ढोने का 2) चपरासी का 3) रसोई का 4) देखभाल

8. छोटे राजकुमार ने .... खोल दिया

1) सेवा सदन | 2) राजमहल | 3) मानव सेवा संघ | 4) आश्रम

9. छोटे राजकुमार ने चंदे से .... लाख स्वर्णमुद्राएँ कमाई।

1) दस | 2) बीस | 3) चालीस | 4) पचास

10. .... राजकुमार को राजगद्दी मिली।

1) बडे | 2) छोटे | 3) तीसरे | 4) दो नंबर के

8.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1. राजगद्दी : राजा के बैठने का आसन /राजसिंहासन
2. जहर : विष, गरल
3. खिजाब : बालों को काला करने की दवा, कल्प
4. पक्षपात करना : भेदभाव करना
5. बोरे ढोना : बोझ उठाना
6. मुनाफा : फायदा, लाभ, नफा
7. आँख फटी-की-फटी रहना : आश्चर्यचकित होना

8.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) हरिशंकर परसाई 2) व्यंग्य 3) चार 4) दशरथ

5) पूर्णिमा 6) किस्मत 7) बोरे ढोने का 8) मानव सेवा संघ

9) बीस 10) छोटे

8.7 सारांश :

'जैसे उनके दिन फिरे' हिंदी साहित्य के सफल व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचना है। इस व्यंग्य को इन्होंने बहुत रोचक ढंग से कहानी के माध्यम से व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। राजा अर्थात प्रशासनिक व्यवस्था देखने वाले नेताओ तथा अधिकारियों के गुणों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य में निहित कथा के अनुसार जैसे छोटे राजकुमार के दिन फिरे वैसे ही सबके फिरे यह बताना व्यंग्यकार का मुख्य उद्देश्य है।

8.8 स्वाध्याय :

अ) टिप्पणियाँ

1. छोटा राजकुमार
2. राजा का आदेश

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. जैसे उनके दिन फिरे व्यंग्य के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते है?

8.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'जैसे उनके दिन फिरे' व्यंग्य पर आधारित नाट्यरुपांतर कीजिए।
2. इस प्रकार की अलग-अलग व्यंग्य रचनाओं को अपने शब्दो में लिखिए।

8.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. हरिशंकर परसाई - पगडंडियों का जमाना।
2. सं. वीणा अग्रवाल - गद्य गाथा
3. सं.प्रो. जयमोहन एम.एस. -गद्य के विविध आयाम

9 जिसके हम मामा है (व्यंग्य)

– शरद जोशी

अनुक्रम

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 विषय विवेचन

9.3.1 शरद जोशी का परिचय

9.3.2 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य का कथानक

9.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

9.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

9.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

9.7 सारांश

9.8 स्वाध्याय

9.9 क्षेत्रीय कार्य

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

9.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1. रचनाकार शरद जोशी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2. शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य से परिचित होंगे।
3. 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य का आशय जान लेंगे।
4. भारतीय नेताओं के मनोभावों को समझ सकेंगे।
5. विद्यार्थी एक सजग वोटर बनेंगे।
6. विद्यार्थियों के अंदर भारतीय राजनीति की समझ उत्पन्न होगी।
7. ऐसे उम्मीदवार का चयन करेंगे जो कि देश हित में कार्य करे।

9.2 प्रस्तावना :

कथेत्तर साहित्य के अंतर्गत व्यंग्य विधा का अपना एक विशिष्ट स्थान है। स्वतंत्रता के बाद समाज में काफी तेजरफ्तार से जीवनविषय मूल्यों का पतन हो गया इस बीमारी पर साहित्यिक इलाज के रुप में व्यंग्य ने जन्म लिया। जहाँ भी कहीं विसंगतियाँ है, वहाँ व्यंग्य उस पर प्रहार करता है। विसंगतियों को दूर करना व्यंग्य का प्राधान्य रहा है। विरोधाभास की स्थितियों को लक्ष्य करके उनका सही विकल्प ढूँढ लेना व्यंग्य का काम है। शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य मनोरंजन के साथ पाठकों को चिंतन करने के लिए बाध्य करता है।

9.3 विषय विवेचन :

9.3.1 शरद जोशी का जीवन परिचय एवं साहित्यिक कृतियाँ

प्रबुद्ध, स्वतंत्र और बेबाक पत्रकार एवं व्यंग्यकार शरद जोशी का जन्म 21 मई, 1931 को मध्य प्रदेश के उजैन में हुआ। पत्रकारिता, आकाशवाणी और सरकारी नौकरी के बाद उन्होंने लेखन को ही अपना जीवन बना लिया। समसामायिक घटनाओं में व्याप्त विसंगतियों को सार्थकता के साथ प्रस्तुत करने का श्रेय शरद जोशी को दिया जाता है। हिंदी व्यंग्य को नई दिशा और अर्थवत्ता प्रदान करनेवाले वे महत्वपूर्ण साठोत्तरी व्यंग्यकार माने जाते है।

'जीप पर सँवार इल्लिया', 'रहा किनारे बैठ', 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ', 'पिछले दिनों', 'परिक्रमा' आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ है। उन्होंने 'दैनिक मध्य देश'-भोपाल, 'नवलेखन' मासिक-भोपाल, 'हिंदी एक्स्प्रेस'-मुंबई आदि पत्र-पत्रिकाओं का भी संपादन किया। साथ ही 'क्षितिज', 'छोटी सी बात', 'दिल है कि मानता नहीं' आदि फिल्मों का लेखन किया। उनके 'देवी जी', 'ये जो है जिंदगी', 'विक्रम और वेताल', 'वाह जनाब', 'ये दुनिया गजब की' आदि धारावाहिक काफी लोकप्रिय हुए। उनके साहित्यिक योगदान के फलस्वरुप 1989 में उन्हें भारत सरकारने 'पद्मश्री' इस सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया। ऐसे श्रेष्ठ साहित्यिक का 5 सितंबर, 1991 को मुंबई में निधन हो गया।

9.3.2 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य का परिचय :

'जिसके हम मामा है' यह शरद जोशी कृत व्यंग्य रचना है। प्रस्तुत रचना में लेखक शरद जोशी ने रुपक के सहारे हम सभी पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। इसमें एक सज्जन गंगा स्थान करने वाराणसी चले जाते है। स्टेशन पर उतरते ही एक मुन्ने नामक लडके ने नमस्ते मामाजी कहकर उनके चरण छुए और कहा, 'पहचाना नहीं क्या'? मै मुन्ना! बातचित के बाद मामाजी अपने भानजे के साथ बनारस घूमने लगे उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्होंने सोचा चलो कोई साथ तो मिला। मुन्नें को लेकर कभी इस मंदिर तो कभी उस मंदिर घूमने के बाद जब वे गंगा घाट पहुँचे। सोचा नहा ले। मुन्ना भी कहता है कि मामाजी जरुर नहाइए, बनारस आए है और नहाएँगे नहीं, यह कैसे हो सकता है! 'हर हर गंगे' कहकर मामाजी ने जब गंगा में डुबकी लगाईं बाहर निकले तो मामाजी का पूरा सामान गायब हो जाता है और मुन्ना भी गायब, मामाजी तौलिया लपेटकर मुन्ना-मुन्ना कहकर पुकारते है। मुन्ना को ईधर-उधर ढूँडते है, लोगों को पूछने लगे पर मुन्ना नहीं मिलता।

लेखक ने उपर्युक्त रुपक के सहारे हम सभी को जागृत करने का प्रयास किया है। हम सब भारतीय नागरिक और भारतीय मतदाता (वोटर) काशी गंगा स्नान करनेवाले सज्जन मामाजी की तरह होते है। लेकिन आम आदमी की समस्याएँ कभी हल ही नहीं होती। चुनाव नजदीक आते ही चुनाव के उम्मीद्वार आम जनता से जब वोट माँगने के लिए आते तब उनके पैरों पर आकर गिरते है। हम आपके होनेवाले एम.पी. है, पहचाना नही! ऐसा कहते है। प्रजातंत्र की गंगा में डुबकी लगाते है और जब हम बाहर निकलते है और

देखते है कि वह जो शख्स जो कल हमारे चरण छूता था आपका वोट लेकर गायब हो जाता है इतनाही नहीं तो वोंटो की पूरी पेटी लेकर भाग जाता है। और हम समस्याओं के घाट पर तौलिया लपेटे खडे रहते है। और हम सबसे पूछते है, क्या साहब, वह कहीं आपको नजर आया? अरे वहीं, जिसके हम वोटर है। वही, जिसके हम मामा हैं। और पाँच साल इसी तरह तौलिया लपेटे, घाट पर खडे बीत जाते है।

इस रचना के माध्यम से यह स्पष्ट है कि यह सिर्फ व्यंग्य न होकर आज समाज में चल रही राजनैतिक स्थिती का यथार्थ चित्रण है, जो बिल्कुल सच दिखाई देता है। प्रस्तुत रचना में आम आदमी को राजनेता किस प्रकार ठगा रहे है इसको व्यंग्यात्मक रुप से दर्शाने का सफलता पूर्वक प्रयास किया गया है।

9.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों के निचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'जिसके हम मामा है' यह .... विधा है।

   1) नाटक   2) कहानी   3) व्यंग्य   4) रिपोर्ताज

2. 'जिसके हम मामा है' यह विधा .... ने लिखी है।

   1) हरिशंकर परसाई   2) शरद जोशी   3) कमलेश्वर   4) प्रेमचंद

3. 'जिसके हम मामा है' इस विधा .... पर सटीक व्यंग्य किया है।

   1) राजनितिज्ञ   2) वैज्ञानिक   3) हिंदी सिनेमा   4) गायकोपर

4. शरद जोशी का जन्म .... में हुआ।

   1) भोपाल   2) उज्जैन   3) ग्वालियर   4) देवास

5. शरद जोशी हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ .... है।

   1) कहानीकार   2) संगीतकार   3) रचनाकार   4) व्यंग्यकार

6. बच्चे ने मामाजी! मामाजी! कहकर .... किया।

   1) नमस्कार किया   2) चरण छूए   3) हाथ मिलाया   4) सिर झूकाया

7. मुन्ना मामाजी को .... घूमाने ले गया।

   1) वाराणसी   2) गया   3) इलाहाबाद   4) मथूरा

8. सज्जन को .... का प्रतीक बताया गया है।

   1) आम जनता   2) प्राध्यापक   3) नेता   4) डॉक्टर

9. मामाजी ने .... घाट पर डुबकी लगाई।

   1) गंगा   2) यमुना   3) काशी   4) गोदावरी

9.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

1. भानजे : बहन का लडका।
2. डुबकी लगाना : पानी में डूबने में डूबने की क्रिया, नहाना
3. तौलिया : मोटा अँगोछा, टॉवेल।
4. वोटर : मतदाता
5. मौसम : ऋतु।
6. उम्मीद्वार : जो व्यक्ति चुनने हेतु अपने को प्रस्तुत करता है वह।
7. प्रजातंत्र : प्रजा के प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन व्यवस्था।
8. शख्स : व्यक्ति, आदमी

9.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1) व्यंग्य 2) शरद जोशी 3) राजनीतिज्ञ 4) उजैन

5) व्यंग्यकार 6) चरण छूए 7) वाराणसी 8) आम जनता

9) गंगा।

9.7 सारांश :

1. साठोत्तरी व्यंग्यकारों में शरद जोशी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। व्यंग्य को स्वतंत्र विधा बनाने के श्रेय में परसाई के साथ इनका नाम जुडा हुआ है। संवेदनशीलता, विनोदप्रियता, खुशमिजाजी, शालीनता, नम्रता और स्वाभिमान उनके व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलू रहे हैं। इन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं द्वारा समाज में व्याप्त विषमता, जीवनसंघर्ष, अनाचार, शोषण, भ्रष्टाचार आदि को वाणी दी है। इन्होंने विविध पत्र-पत्रिकाओं में स्तंभ लेखन का कार्य किया। इसके साथ ही कुछ पत्रिकाओं का संपादन, फिल्म-लेखन, दूरदर्शन धारावाहिक-लेखन तथा व्यंग्य नाटकों का लेखन कार्य किया है।

2. हिंदी के प्रथम कोटि के विख्यात व्यंग्यकारों में शरद जोशी का स्थान अग्रणी हैं। इनके समूचे साहित्य में व्यंग्य की ही अधिकता है। यह व्यंग्य केवल मनोरंजन के साधन के रुप में नहीं, बल्कि समाज सुधार के रुप में भी अपना एक विशेष महत्व रखता है।

3. 'जिसके हम मामा है' यह शरद जोशी की सशक्त व्यंग्य विधा है। हिंदी के प्रथम कोंटि के व्यंग्यकारों में शरद जोशी का नाम गौरव के साथ लिया जाता है। शरद जोशी ने अपनी रचना द्वारा राजनीति, समाज, साहित्य, शिक्षा और प्रशासन की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है। अत: शरद जोशी शीर्षस्थ व्यंग्यकार के रुप हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध है।

4. शरद जोशी द्वारा लिखित 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य में यह दर्शाया है कि भारतीय नागरिक, तथा आम आदमी वोटर के नाते आज हमारी स्थिती वाराणसी के तौलिया लपेटे हुए सज्जन की तरह है। शरद जोशी ने एक रुपक के सहारे व्यंग्यात्मक प्रहार किया है और यह भी सूचित किया है कि भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी यही स्थिति है। जब चुनाव नजदिक आता है तो यही नेतागण हमारे पैरों पर अर्थात वोटर के पैरों पर गिरकर वोट माँगते है, लेकिन जब जीत जाते है तो उनका दर्शन दुर्लभ हो जाता

है। उनसे मिलना तक संभव नहीं हो पाता। भारतीय वोटर उस सज्जन की भाँति ठगे महसूस करने लगते है। और इधर-उधर यही कहते दिखते है कि अरे भाई आपने उनको कही देखा है, जिसके हम वोटर है, जिसके हम मामा है। हमें अपना वोट नेता के संपूर्ण व्यक्तित्व का आकलन करने के पश्चात ही देना चाहिए। साथ ही वह कितना शिक्षित है यह भी देखना आवश्यक है तथा आम जनता की समस्याओं के समाधान कैसे करेगा इसकी तरफ ध्यान देना आवश्यक है। व्यंग्य शैली में लिखी गई यह रचना अपने आपको अंतर्मुख करती है। इस दृष्टि से प्रस्तुत रचना काफी अर्थपूर्ण है।

9.8 स्वाध्याय :

अ) टिप्पणियाँ

1. मुन्ना।
2. भारतीय मतदाता।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

२. 'जिसके हम मामा है' व्यंग्य के लेखक की दूरदृष्टि पर प्रकाश डालिए।

9.9 क्षेत्रीय कार्य :

'जिसके हम मामा है' व्यंग्य पर आधारित नाट्य रुपांतर कीजिए।

9.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. शरद जोशी के व्यंग्य नाटक - अनुपमा भोरे, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर-14
2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य में व्यंग्य - डॉ. हरिशंकर दुबे, विकास प्रकाशन, कानपुर- 27

❑❑❑

इकाई 4

1. ''लल्लू कब लौटेगो''

– बनारसीदास चतुर्वेदी

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 बनारसीदास चतुर्वेदी का परिचय

1.3.2 'रेखाचित्र' विधा का परिचय

1.3.3 'लल्लू कब लौटेगो' रेखाचित्र का आशय

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द/शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत पाठक ..

- कथेत्तर साहित्य से परिचित होंगे।
- रेखाचित्र विधा की विशेषताओं का ज्ञान होगा।
- बनारसीदास चतुर्वेदी के जीवन तथा साहित्य सृजन का परिचय प्राप्त होगा।
- 'लल्लू कब लौटेगो' रेखाचित्र का आशय समज पाएंगे।
- भिन्न -भिन्न प्रकार की बाजार संस्कृति से परिचित होंगे।

१.२ प्रस्तावना :–

अध्ययन की सुविधा हेतु निर्मित गद्य साहित्य के दो भेद है। पहला कथा साहित्य और दूसरा कथेतर साहित्य। कथेतर साहित्य भारतीय साहित्य की वह शाखा है, जिसमें दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति, घटनाएँ और सन्दर्भ पूर्णतः वास्तविकता पर ही आधारित होते हैं। इसके विपरीत कपोल कल्पना है, जिसमें कथाएँ कुछ

मात्रा में या पूरी तरह लेखक की कल्पना पर आधारित होतीं हैं। उनमें कुछ तत्व वास्तविकता से हटकर होते हैं। कथेतर गद्य की दस प्रमुख शैलियाँ हैं– निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, समालोचना, जीवनी, आत्मकथा, पत्र लेखन, साक्षात्कार, समीक्षा आदि।

रेखाचित्र शब्द अंग्रेजी के 'स्केच'शब्द का अनुवाद है। तथा दो शब्द रेखा और चित्र के योग से बना है। इस विधा में क्रम बंधुता को ध्यान में रखकर किसी व्यक्ति की आकृति उसकी चाल ढाल या स्वभाव का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया है वह रेखाचित्र कहलाती है। रेखा चित्र की विशेषताएं यह होती है कि इसमें साहित्यकार अपनी कल्पना या अनुभूति का अलग से कोई रंग नहीं भरता, जिस व्यक्ति, वस्तु या दृश्य का वर्णन करना है, उसका हू–ब–हू चित्र अंकित कर देता है। बनारसीदास जी ने जीवन को निकट से देखा था, इसीलिए उनके रेखाचित्र सजीव हैं। वे चलते–फिरते दिखाई देते हैं और बोलते से सुनाई पड़ते हैं। रेखाचित्रों के क्षेत्र में उनका कार्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 बनारसीदास चतुर्वेदी का परिचय

जन्म तथा शिक्षा :–

बनारसीदास चतुर्वेदी का जन्म 24 दिसम्बर, 1892 को फ़िरोजाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1913 में अपनी इंटर की परीक्षा पास की थी। इसके बाद उन्होंने कुछ समय तक फर्रूखाबाद के गवर्नमेंट हाईस्कूल में तीस रुपये मासिक वेतन पर अध्यापक नियुक्त हो गए। लेकिन अभी कुछ ही महीने बीते थे कि उनके गुरु लक्ष्मीधर वाजपेयी ने उन्हें अध्यापन छोड़कर आगरा आने और 'आर्यमित्र' संभालने का आदेश सुना दिया। लक्ष्मीधर जी उन दिनों आगरा से आर्यमित्र निकालते थे। फिर इंदौर के डेली कॉलेज में अध्यापक बन गए। उन्हीं दिनों इंदौर में गांधी जी की अध्यक्षता में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ। तभी बनारसीदास चतुर्वेदी जी को गांधी जी तथा प्रमुख साहित्यकारों के संपर्क में आने का अवसर मिला।

पत्रकारिता:–

बनारसीदास जी का पत्रकारिता जीवन 'विशाल भारत' के सम्पादन से आरम्भ हुआ। पत्रकार के रूप में वे गणेश शंकर विद्यार्थी को अपना आदर्श मानते थे। स्वर्गीय रामानन्द चटर्जी, जो 'मॉडर्न रिव्यू' और 'विशाल भारत' के मालिक थे, वे बनारसीदास जी की सेवा भावना और लगन से बहुत प्रभावित थे। कलकत्ता में रहते हुए उनका प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं से परिचय हुआ था। प्रवासी भारतीयों की समस्या में इनकी विशेष दिलचस्पी पहले से ही थी। इसके कारण ही महात्मा गांधी, सी. एफ़. एंड्रूज और श्रीनिवास शास्त्री के ये कृपापात्र बन गए थे। इन महानुभावों का प्रवासी भारतीयों की समस्या से विशेष सम्बन्ध था। बनारसीदास चतुर्वेदी जी सी. एफ. एड्रूज के साथ 'शांतिनिकेतन' चले गए। फिर वहाँ से गांधी जी के कहने पर 'गुजरात विद्यापीठ' के अध्यापक बन कर अहमदाबाद पहुँचे। वहाँ भी अधिक दिनों तक नहीं टिके। उन्होंने 1920 में अध्यापक कार्य त्याग दिया। बनारसीदास जी ने 'विशाल भारत' को एक साहित्यिक और सामान्य जानकारी से परिपूर्ण मासिक पत्रिका बना दिया। इसके स्तम्भों में प्राय: सभी प्रमुख लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

स्वभाव :– वे अपनी विशिष्ट और स्वतंत्र वृत्ति के लिए जाने जाते हैं। शहीदों की स्मृति का पुरस्कर्ता (सामने लाने वाला) और छायावाद का विरोधी समूचे हिंदी साहित्य में उनके जैसा कोई और नहीं हुआ। उनकी स्मृति में बनारसीदास चतुर्वेदी सम्मान दिया जाता है। कहते हैं कि वे किसी भी नई सामाजिक,

सांस्कृतिक, साहित्यिक या राष्ट्रीय मुहिम से जुड़ने, नए काम में हाथ डालने या नई रचना में प्रवृत्त होने से पहले स्वयं से एक ही प्रश्न पूछते थे कि उससे देश, समाज, उसकी भाषाओं और साहित्यों, विशेषकर हिंदी का कुछ भला होगा या मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्चतर मूल्यों की प्रतिष्ठा होगी या नहीं?

राज्य सभा सदस्य

बनारसीदास चतुर्वेदी बारह वर्ष तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे थे। यह सम्मान उन्हें अपनी हिन्दी सेवा के कारण ही मिला था। संसद सदस्य के रूप में दिल्ली निवास की अवधि में वे सभी साहित्यिक हलचलों के प्रमुख सूत्रधारों में रहे थे। 'संसदीय हिन्दी परिषद', 'हिन्दी पत्रकार संघ' आदि संस्थाओं के संचालन में रुचि लेने के साथ-साथ बनारसीदास जी को दिल्ली में 'हिन्दी भवन' खोलने का श्रेय भी प्राप्त है।

प्रमुख रचनाएँ :-

श्रमजीवी पत्रकारों को संगठित करने में भी बनारसीदास चतुर्वेदी ने अग्रणी काम किया। रेखाचित्रों की रचना में वे सिद्धहस्त माने जाते थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिख्त हैं-

1. 'राष्ट्रभाषा' - 1919
2. 'कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी' - 1906
3. 'संस्मरण' - 1952
4. 'रेखाचित्र' - 1952
5. 'फिजी द्वीप में मेरे 21 वर्ष' - 1918
6. 'प्रवासी भारतवासी' - 1928
7. 'केशवचन्द्र सेन'
8. 'फिजी में भारतीय'
9. 'फिजी की समस्या'
10. 'हमारे आराध्य'
11. 'सेतुबन्ध'
12. 'साहित्य और जीवन'

मृत्यु :-

अपनी पत्रकारिता और लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाले इस महापुरुष का 2 मई, 1985 ई. को देहांत हुआ्।

1.3.2 रेखाचित्र विधा का परिचय :-

'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के 'स्कैच' (sketch) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। तथा दो शब्द रेखा और चित्र के योग से बना है। जैसे 'स्कैच' में रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र प्रस्तुत किया जाता है, ठीक वैसे ही शब्द रेखाओं के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्त्व को उसके समग्र रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। ये व्यक्तित्त्व प्रायः वे होते हैं जिनसे लेखक किसी न किसी रूप में प्रभावित

रहा हो या जिनसे लेखक की घनिष्ठता अथवा समीपता हो। इस विधा में क्रम बंधुता का ध्यान में रखकर किसी व्यक्ति की आकृति उसकी चाल ढाल या स्वभाव का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया है। रेखाचित्र कहलाती है। रेखांकित शब्द चित्रकला का है जिसका अर्थ ऐसा खाका जिसमें क्रमबद्ध ब्योरे ना दिए गए हो। उसी के अनुकरण पर लिखना रेखाचित्र कहलाता है। इसी प्रकार थोड़े से शब्दों में किसी व्यक्ति घटनाएं स्थान या वस्तु को चित्रित कर देना कुशल रेखाचित्रकार का ही काम हैं। रेखाचित्र में लेखक कम से कम शब्दों में सजीवता भर देने का प्रयास करता है और उसके छोटे-छोटे पैने वाक्य एवं मर्मस्पर्शी होते हैं। महादेवी वर्मा ने अपने आश्रित सेवकों को ही नहीं बल्कि पशुओं को भी रेखाचित्र के माध्यम से अमर बना दिया है। रेखाचित्र गद्य साहित्य के आधुनिक विधा है। इस विधा में लेखक रेखा चित्र के माध्यम से शब्दों को ढांचा तैयार करता है। लेखक किसी सत्य घटना की वस्तु का या व्यक्ति का चित्रात्मक भाषा में वर्णन करता है। इसमें शब्द चित्रों का प्रयोग आवश्यक है।

रेखा चित्रकारों में महादेवी वर्मा, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, बनारसीदास चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी एवं डॉ नगेंद्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

1.3.3 'लल्लू कब लौटेगौ' रेखाचित्र का आशय :-

बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा रचित 'लल्लूकबलौटेगौ' रेखाचित्र लोधा जनजाति की करुण जीवनगाथा की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। फिरोजाबाद जिला आगरा के निकट स्थित गणेशपुर के 'सोनपाल लोधा' एक साधारण कृषक है जो थाने के सामने तरकारी बेचता है और कमाएं हुए चार आने से उनके परिवार का गुजरा होता है खगरीबी उनके दहलीज से चिपकी रहती है, फटे हुए कपडे, दुबला पतला शरीर, आँखों के निचे गड्ढे इस बात को स्पस्ट करतीं है ख छोटा बेटा विवाहित है, कुछ कमाता नहीं और जुआ भी खेलता है, बड़ा बेटा डालचंद आठ वर्ष पूर्व घर से चला गया है जो कभी लौट के नहीं पाया।

चौबे जी हमेश 'सोनपाल लोधा'से ही तरकारी खरीदते है क्यों की उस बूढ़े से मधुर छेड़-छाड़ करके थोड़ी खरी-खोटी सुनने में उन्हें आनंद मिलता है। अतः चौबे जी का 'सोनपाल लोधा'से परिचय बढ़ता जाता है और 'सोनपाल लोधा' एक दिन आपने मन की व्यथा को उनके पास प्रस्तुत करतें है। चौबे जी को लगता है की कोई महान पुरुष से बातचीत में सुकून मिलता हो निम्न जाति के इन्सान से बातचीत में शुद्रता का खयाल आता है। चौबे के अनुसार 'सोनपाल लोधा'को इस बातचीत से सन्मान प्राप्त होता है। 'सोनपाल लोधा' अज्ञानी है, उसे अपना जन्म वर्ष तक पता नहीं है पूछने पर बताते बताते है की ग़दर के वर्ष पैदा हुए है। अपने बड़े बेटे के आठ वर्ष से लापता होने का दुःख उसके मन में खोलता है वह हमेशा इसी प्रयास में दिखाई देता है की किसी की सहायता से अपने बेटे की खोज कर सके खचौबे जी से बातचीत के दौरान वह बिनती करता है की आप हमारे बेटे की तलाश कीजिए जो आठ वर्ष के किसी टापू पर चला गया है लौटकर नहीं आया। चौबे जी उसे विश्वास दिलाते है की मै आपके बेटे को खोज लूँगा तुम चिंता मत करो, तब से 'सोनपाल लोधा' चौबे जी से जब भी मिलता है एक ही सवाल करता है मेरा - 'लल्लू कब लौटेगौ'?

'सोनपाल लोधा' का बेटा डालचंद जो दो-तीन वर्ष मदरसा में पढता रहा उपरांत बमरैली कटार के लड़की के साथ विवाह कर वहीं बसगए, कुछ समय बाद वह 'सोनपाल लोधा' के भांजे के साथ पिपरमंडी आगरे में रुके फिर कहाँ चले गए ये पता नहीं, भांजे तो लौट आए पर बेटा नहीं आया। चीनीटाड टापू में कुली बनकर डालचंद जीवनभर आपनी आर्थिक दयनीयता के कारण संत्रास सहता रहा, घर नही लौट पाया, उसे वहां से लौटने के लिए एक सों पांच रूपये आवश्यक थे जो कभी मिले ही नहीं, परिणामतःडालचंद अपनी माता और पिता के देहांत पर भी नहीं पहुँच पाया यह कितनी पीड़ादायक स्थिति है।

डालचंद की माता जब अंतिम साँस ले रही थी तो आपने बेटे को देखने के लिए तरस रही थी, बार – बार एक ही इछा प्रकट करती रही की मरने से पहले मेरे लालू का चेहरा देखूंगी उसे बुलाइए पर बेचारा पति मजबूर था। आठ वर्ष से पल–पल राह देखतेहुए बेटे की चिंता में माँ ने दम तोड़ दिया। जब डालचंद का पता चला और उससे पत्राचार होने लगा तब उसके पिताजी ने उसे इस बात की खबर तक नहीं दी क्यों की उसे विश्वास था की बेटे को मालूम हो गया की उसकी माता गुजर गई है, तो वह सोचेगा की अब घर लौटने का कोई मतलब नहीं और ओ कभी गाँव नहीं लौटेगा। उस घर वापस लाने हेतु सोनपाल लोधा द्वार किये हर संभव प्रयास एक पिता के पवित्र प्रेम और जिम्मेदारी का एहसास करतीं है।

डालचंद की पत्नी आठ वर्ष पति के इंतजार में चटपटाती हुई अपनी जवानी और इछाओं की कुरबानी देतेहुए पतिवर्ता भारतीय नारी का प्रमाण देती रही। वह अपनी जातिगत पद्धति के अनुसार दूसरी शादी करके सुकूनभरी जिंदगी जी सकती थी पर उसने आपने पति के इंतजार में ही सुकून माना। पति के प्रति उसका पवित्र प्रेम ही है जो उसे इतनी शक्ति देती रही।

'सोनपाल लोधा'का छोटा बेटा हमेशा बीमार रहता था, उसकी शादी हुई थी वह कोई काम नहीं करता था, हमेश जुआ खेलता रहता। अतः पिता को बुढ़ापे में भी अपने परिवार के लिए परिश्रम करना पड़ता है।

चौबे द्वारा डालचंद की खोज की जाती है इस काम में उन्हें ट्रिनीनाड के रैपरेराड सी.डी.लाला की सहायता मिलाती है। परिवार से पत्र द्वारा संपर्क के दौरान डालचंद अपनी बुरी हालत को बयाँ करता है, लिखता है की वहां जीना मुश्किल बनपडा है, दो वक्त की रोटी मुनासिब नहीं होती, आटा महंगा हो गया है। सभी रिश्तेदार, परिवार के सदस्य, और खरगसिंह, शोभाराम आदि की खैरियत पूछता है और परिवार से मिलने की इछा व्यक्त करतेहुए लिखता है अगर परमेश्वर की मेहरबानी होगी तो तुम लोगों से आन मिलेंगेअगर नहीं होगी तो मै चटीनाड टापू पे पड़ा रहूँगा तुम हिन्दुस्थान में पड़े रहो। उसे चटीनाड टापू से अपने घर पहुंचने के लिए एक सों पाच रूपयों की आवश्यकता है जो उसे आठ वर्ष में नहीं मिलसके कितनी भयंकर पीड़ा है।

अपने बेटे की याद में तडपते हुए प्राण त्यागनेवाले सोनपाल लोधा की मृत्य की खबर सुनकर चौबे जी पश्चाताप करने लगते है, क्यों की अगर वह चाहते तो शिवप्रसाद गुप्त जीको पूरी कहानी बताकर उसकी सहायतासे सौ–दो सौ रूपये चटीनाड टापू पर फसे डालचंद को भेजकर घर लौटने हेतु किराये की व्यवस्था करते तो आज बुढा किसान सोनपाल लोधा अपने बेटे की याद में चटपटाते हुए नहीं मरते। बाप और बेटे के मिलन से उसे जिने केलिये शक्ति मिलता और डालचंद अपने परिवार से आ मिलते। किंतु आलश्य वश और संकोच के कारण चौबे जीने उनकी सहायता नहीं की परिणामतः पूरा परिवार दुःख की दरिया में फसता गया। चौबे जी खुद को अब गुन्हेगार मानते है पर अगर उन्होंने सहृदयता दिखाई होती तो सोनपाल लोधा आज जिंदा होते और उनके परिवार में खुशियाँ ही खुशियाँ होती। लेखक ने सोनपाल लोधा के द्वारा दिल को देह्लानेवाली हृदयद्रावक पीड़ा को वाणी दी है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. 'लल्लू कब लौटेगौ' बनारसीदास चतुर्वेदी लिखित .... है।

   अ) कहानी ब) रेखाचित्र क) आत्मकथा ड) उपन्यास

2. ‘लल्लू कब लौटेगौ’ .... का जीवन चित्रण है।

अ) सोनपाल लोधा ब) बनारसीदास क) डालचंद ड) कुमार

3. ‘लल्लू कब लौटेगौ’ के सोनपाल .... बेचने का काम करता है।

अ) फुल ब) तरकारी क) कपडे ड) ज्ञान

4. सोनपाल लोधा का छोटा बेटा...................... खेलता था।

अ) क्रिकेट ब) कुस्ती क) जुआ ड) शतरंज

5. बड़े लड़के डालचंद की चिट्ठी आठ वर्ष पहले .... से आई थी।

अ) चिनीताड ब) बिहार क) पाकिस्तान ड) दिल्ली

6. डालचंद लोधा चिनीताड...................... हे हैशियत से गया था ।

अ) नेता ब) कुली क) कलाकार ड) कृषक

7. डालचंद लोधा चिनीताड से लौठने के लिए .... रुपया किराया लगता था।

अ) चालीस ब) सों क) एक सों पांच ड) पचास

8. ....जी से सोनपाल लोधा हमेशा पूछा करते थे हमारा ‘लल्लू कब लौटेगौ’?

अ) चौबे ब) डालचंद क) पत्नी ड) खना

9. सोनपाल लोधा ने अपने बेटे से उसकी ....की मृत्यु की बात छुपाई थी।

अ) भाई ब) डालचंद क) माँ ड) चौबे

10. सोनपाल के गाँव गणेशपुर से चिनीताड...........................मिल दूर था।

अ) सों ब) पंद्रह हजार क) पचास ड) बीस

1.5 पारिभाषिक शब्द /शब्दार्थ

1. लोधा - भारत में रहने वाली एक प्राचीन हिंदू जाति है। प्राचीन वर्ण व्यवस्था में इस जाति को क्षत्रिय वर्ग का माना गया है।
2. लठा - घर की छांजन में लगा लकड़ी का बल्ला, कड़ी
3. ‘आटा महंगा होना’ - आर्थिक विपत्तियों में फसना
4. साग - तरकारी
5. टापू - ज़मीन का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो, द्वीप।
6. चार आना - 25 पैसे
7. तरकारी - सब्ज़ी
8. करुणोत्पादक- करुणा पैदा करने वाला।
9. औपनिवेशिक - उपनिवेश में रहनेवाला व्यक्ति। जैसे,- दक्षिण अफ्रिका के भारतीय औपनिवेशिक

10. सेर – सोलह छटाँक की एक तौल।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) रेखाचित्र	2) सोनपाल लोधा	3) तरकारी
4) जुआ	5) चिनीताड	6) कुली
7) एक सों पांच	8) चौबे	9) माँ
10) पंद्रह हजार		

1.7 सारांश

1. लोधा जनजाति की करुण जीवनगाथा को बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है।
2. फिरोजाबाद जिला आगरा के निकट स्थित गणेशपुर के 'सोनपाल लोधा' एक साधारण कृषक है, थाने के सामने तरकारी बेचकर दिनभर कमाएं चार आने से उनके परिवार का गुजरा होता है।
3. गरीबी उनके दहलीज से चिपकी रहती है, फटे हुए कपडे, दुबला पतला शरीर, आँखों के निचे गड्ढे इस बात को स्पस्ट करतीं है। छोटा बेटा विवाहित है, कुछ कमाता नहीं और जुआ भी खेलता है, बड़ा बेटा डालचंद आठ वर्ष पूर्व घर से चला गया है जो कभी लौट के नहीं आया।
4. चीनीटाड टापू में कुली बनकर गया डालचंद जीवनभर आपनी आर्थिक विपत्तियों के कारण घर नही लौट पाया, उसे वहां से लौटने के लिए एक सों पांच रूपये किराया आवश्यक है जो कभी मिला ही नहीं। परिणामतः डालचंद अपनी माता और पिता के देहांत पर भी नहीं पहुँच पाया यह कितनी पीड़ादायक स्थिति है।
5. बेटे डालचंद की आठ वर्ष से पल–पल राह देखती हुई बेटे की चिंता में दम तोडती माता का प्यार और डालचंद को घर वापस लाने हेतु सोनपाल लोधा के हर संभव प्रयास एक पिता के पवित्र प्रेम और जिम्मेदारी का एहसास करतीं है।
6. डालचंद की पत्नी आठ वर्ष पति के इंतजार में चटपटाती हुई जवानी और इच्छाओं की क़ुरबानी देतेहुये पतिवर्ता भारतीय नारी का प्रमाण देती है।
7. बेटे डालचंद की याद में तडपते हुए प्राण त्यागनेवाले सोनपाल लोधा के गुन्हेगार के रूप में खुद को महसूस करनेवाले चौबे जी की सहृदयता का चित्रण भी मानवीय संवेदना को उजागर करता है।

1.8 स्वाध्याय

अ) टिप्पणियाँ

1. सोनपाल लोधा।
2. डालचंद

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'रेखाचित्र' विधा की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. 'लल्लू कब लौटेगो' (रेखाचित्र) का आशय लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1. हिंदी और मराठी रेखाचित्रों की सूचि बनाइए।
2. महादेवी वर्मा लिखित 'अतीत के चलचित्र' रेखाचित्र को पढिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. बनारसीदास चतुर्वेदी का साहित्य पढिए।

2. बाजार दर्शन (निबंध)

– जैनेंद्र कुमार

2.1 उद्‌देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 जैनेंद्र कुमार का परिचय

2.3.2 निबंध विधा का परिचय

2.3.3 बाजार दर्शन निबंध का आशय

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्‌देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत पाठक ..

- कथेत्तर साहित्य से परिचित होंगे।
- निबंध विधा की विशेषताओं का ज्ञान होगा।
- महान निबंधकार जैनेंद्र कुमार के जीवन तथा साहित्य सृजन का परिचय प्राप्त होगा।
- 'बाजार दर्शन' निबंध का आशय समज पाएंगे।
- बाजार की भिन्न –भिन्न प्रकार की संस्कृति से आवश्य परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :–

अध्ययन की सुवुधा हेतु निर्मित गद्य साहित्य के दो भेद है। पहला कथा साहित्य और दूसरा कथेत्तर साहित्य। कथेतर साहित्य भारतीय साहित्य की वह शाखा है, जिसमें दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति, घटनाएँ और सन्दर्भ पूर्णतः वास्तविकता पर ही आधारित होते हैं। इसके विपरीत कपोल कल्पना है, जिसमें कथाएँ कुछ मात्रा में या पूरी तरह लेखक की कल्पना पर आधारित होतीं हैं। उनमें कुछ तत्व वास्तविकता से हटकर होते हैं। कथेतर गद्य की दस प्रमुख शैलियाँ हैं – निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, समालोचना, जवनी, आत्मकथा पत्र लेखन, साक्षात्कार, समीक्षा आदि।

सारी दुनिया की भाषाओं में निबंध को साहित्य की सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता आधुनिक युग में ही मिली है। आधुनिक युग में ही मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा है। इस मुक्ति से निबंध का गहरा संबंध है।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 जैनेंद्र कुमार का परिचय :–

जैनेंद्र कुमार बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। इन्होंने उपन्यास में प्रेमचंदोत्तर के रूप में एक विशिष्ट स्थान बनाया है। इनके उपन्यास इतिहास में मनोविश्लेषण परंपरा के प्रवर्तक के रूप में माने जाते है। इनके उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण आदि गध विधाओं के रूप में है। जैनेंद्र कुमार जी अपने साहित्य के पात्रों को अपने अनुसार और अपनी कुशलता अनुरूप प्रस्तुत करते थे।

- **जन्म एवं परिवार :–**

प्रेमचंदोत्तर युग के श्रेष्ठ कथाकार जैनेंद्र जी का जन्म 1905 ई० में उत्तर प्रदेश, अलीगढ़ के कोडियागंज नामक गांव में हुआ था। जैनेंद्र कुमार जी के पिता जी का नाम प्यारेलाल जी था। और उनकी माता जी का नाम श्रीमती रमादेवी जी था। इनके जन्म के दो वर्ष बाद ही इनके पिताजी का देहांत हो गया था। तब इनका पालन पोषण इनके मामा जी और इनकी माता जी ने किया था। जैनेंद्र कुमार जी गांधीजी की विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। इनके साहित्य में अहिंसावादी और दर्शनिकता का प्रभाव झलकता है। और अपने अंत समय तक जैनेंद्र कुमार जी साहित्य सेवा में लगे रहे और 24 दिसंबर 1988 में इनका स्वर्गवास हो गया।

- **शिक्षा तथा व्यवसाय :–**

जैनेंद्र कुमार जी की प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल ऋषि ब्रह्माचार्य आश्रम मैं हुई थी। सन 1912 में इन्होंने गुरुकुल आश्रम छोड़ दिया था और सन 1919 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया परंतु 1921 के आंदोलन में भाग लेने के कारण इनकी शिक्षा का क्रम टूट गया था। फिर इन्होंने सन 1927 से लेकर 1923 के बीच अपनी

माता की सहायता से अपना व्यापार शुरू किया जिसमें उन्होंने सफलता प्राप्त की। उसके पश्चात 1923 में व्यापार छोड़कर नागपुर चले गए और राजनीतिक पत्रों में संवाददाता के रूप में कार्य करने लगे उस समय उन्हें गिरफ्तार करके ३ महीने तक जेल में डाल दिया गया।

- **जैनेंद्र कुमार की रचनाएं**

जैनेंद्र कुमार की निम्नलिखित रचनाएं है। जिसमें उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्करण, आदि अनेक गद्य विधाओं का सृजन किया था।

निबंध संग्रह प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, मंथन, सोच विचार, काम, प्रेम और परिवार आदि।

उपन्यास परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, विवत्र, सुखदा, व्यतीत, जयवर्धन, मुक्तिबोध आदि।

कहानियां फांसी, जयसंधि, वातायन, नीलमदेश की राजकन्या, एक रात, दो चिड़िया, पाजेब आदि।

संस्मरण 'ये और वे' आदि।

अनुवाद मंदालीनी (नाटक), पाप और प्रकाश (नाटक), प्रेम में भगवान (कहानी संग्रह) आदि

- **जैनेंद्र कुमार के पुरस्कार**

➢ जैनेंद्र कुमार जी को सन 1971 में पद्मभूषण के सम्मान से सम्मानित किया गया था।

➢ जैनेंद्र कुमार जी को सन 1979 में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया था।

2.3.2 निबंध विधा का परिचय :–

निबंध (Essay) गद्य लेखन की एक विधा है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है। निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है। लेकिन साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध ही है। इसे अंग्रेजी के कम्पोज़ीशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृत में भी निबंध का साहित्य है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी। उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी। किन्तु वर्तमान काल के निबंध संस्कृत के निबंधों से ठीक उलटे हैं। उनमें व्यक्तित्त्व या वैयक्तिकता का गुण सर्वप्रधान है। इतिहास–बोध परम्परा की रूढ़ियों से मनुष्य के व्यक्तित्व को मुक्त करता है। निबंध की विधा का संबंध इसी इतिहास–बोध से है। यही कारण है कि निबंध की प्रधान विशेषता व्यक्तित्त्व का प्रकाशन है।

निबंध, निबंध इन दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है, किसी भी विषय पर सुव्यवस्थित, रचनात्मक, विचारपूर्वक और क्रमबद्ध रूप से लिखना। पंडित श्यामसुंदर दास जी के अनुसार ''निबंध वह लेख है, जिसमें किसी विषय पर विस्तारपूर्वक और पांडित्यपूर्वक तरीके से विचार किया गया हो।''

सारी दुनिया की भाषाओं में निबंध को साहित्य की सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता आधुनिक युग में ही मिली है। आधुनिक युग में ही मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा है। इस मुक्ति से निबंध का गहरा संबंध है। हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार– ''नए युग में जिन नवीन ढंग के निबंधों का प्रचलन हुआ है वे व्यक्ति की स्वाधीन चिन्ता की उपज है।'' इस प्रकार निबंध में निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्त्व है।

निबंध के चार प्रकार होते है, वर्णनात्मक निबंध, विचारात्मक निबंध, विवरणात्मक निबंध, भावात्मक निबंधप्रमुख हिंदी निबंधकार, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह, महावीर प्रसाद द्विवेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, जैनेंद्र कुमार महादेवी वर्मा, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, नंददुलारे वाजपेयी आदि।

2.3.3 बाजार दर्शन निबंध का आशय :–

'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक–ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक–दमक में फेंसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज में तो कहीं किस्सागो की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में इन्होंने केवल बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

लेखक बाजार दर्शन पाठ में अपने मित्र की बात बताता है कि उसका मित्र बाज़ार में एक सामान लेने जाता है लेकिन लेकर बहुत कुछ आ जाता है। बाज़ार हमें आकर्षित करता है हमें जो चीज़े नहीं लेनी वह भी ले लेते है। लेखक अपने दूसरे मित्र की बात बताते है कि वह बाज़ार जाता है और खाली हाथ वह वापिस आ जाता है। उसे समझ नहीं आता की कोन सी चीज़ खरीदूं और रहने दूँ। अपनी चाह का पता न हो तो ऐसे ही होता है कि क्या सामान खरीदें। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक–ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक–दमक में फेंसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। बाजार में रूप का जादू है। बाज़ार का असर हमें हमेशा होता है चाहे जेब खाली हो या भरी हो। बाज़ार हमारे मन को भटकता है।

लेखक के मित्र बाजार में मामूली चीज लेने गए, परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है, परंतु उसे प्रदर्शित करने के लिए बैंक–बैलेंस, मकान–कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर के प्रयोग से

पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी, न कि जरूरत की। लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह ऐसा सजा होता है कि बेहया ही इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व ईर्षा से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था, परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना। अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है। जादू उतरते ही फैंसी चीजें आराम नहीं, खलल ही डालती प्रतीत होती हैं। इससे स्वाभिमान व अभिमान बढ़ता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता है-आवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का निरोध नहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है, बल्कि लोभ की जीत है।

मन को बलात बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए। लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे।

उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है, परंतु यह व्यंग्य चूरन वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। एक दिन बाजार के चौक में भगत जी व लेखक की राम-राम हुई। उनकी आँखें खुली थीं। वे सबसे मिलकर बात करते हुए जा रहे थे। लेकिन वे भौचक्के नहीं थे और ना ही वे किसी प्रकार से लाचार थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा था किंतु उनको मात्र अपनी जरूरत की चीज से मतलब था। वे रास्ते के फैंसी स्टोरों को छोड़कर पंसारी की दुकान से अपने काम की चीजें लेकर चल पड़ते हैं। अब उन्हें बाजार शून्य लगता है। फिर चाँदनी बिछी रहती हो या बाजार के आकर्षण बुलाते रहें, वे उसका कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। सद्भाव नष्ट होने से ग्राहक और बेचक रह जाते हैं। वे एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं, शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :–

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. .... बाज़ार दर्शन के रचयिता हैं।

   अ) महादेवी वर्मा ब) फणीश्वर नाथ रेणु क) धर्मवीर भारती ड) जैनेंद्र कुमार

2. 'बाज़ार दर्शन .... का प्रतिपाद्य है।

   अ) बाज़ार के उपयोग का विवेचन ब) बाजार से लाभ

   क) बाज़ार न जाना ड) बाजार जाना

3. लेखक का मित्र ....के साथ साथ बाज़ार गया था।

   अ) अपने पिता ब) मित्र क) पत्नी ड) प्रेमिका

4. लेखक का मित्र फालतू सामान खरीदने के लिए ....को दोष देता है।

   अ) अपने पिता ब) मित्र क) पत्नी ड) प्रेमिका

5. लेखक के अनुसार पैसा .... है।

   अ) पावर है ब) हाथ की मैल है क) माया का रूप है ड) पैसा व्यर्थ है

6. भगत जी .... व्यक्ति हैं।

अ) लोभी ब) संतोषी क) ईर्ष्यालु ड) मूर्ख

7. जब ग्राहक का मन .... होता है तब बाज़ार के जादू का प्रभाव पड़ता है।

अ) खाली ब) गरीब क) मन भरा ड) मूर्ख

8. जब मन ....हो तो हमें में बाजार जाना चाहिए।

अ) खाली ब) बंद क) में नकार ड) खाली न

9. बाज़ार ....को देखता है।

अ) लिंग ब) जाति क) धर्म ड) क्रय–शक्ति

10. 'बाज़ारूपन' से अभिप्राय है बाजार से..................... खरीदना।

अ) सामान ब) अनावश्यक वस्तुएँ

क) आवश्यक वस्तुएँ ड) ख्वाब

2.5 शब्दार्थ :–

1. आशय – अर्थ, मतलब।
2. महिमा – महत्ता।
3. प्रमाणित – सिद्ध।
4. माया – आकर्षण।
5. ओट – सहारा।
6. मनीबैंग – पैसे रखने का थैला।
7. पावर – शक्ति, ताकत।
8. माल–टाल – सामान।
9. यचज़िंग यावर – खरीदने की शक्ति।
10. फिजूल – व्यर्थ।

2.6 स्वयं अध्ययन के उत्तर :–

1) जैनेंद्र कुमार 2) बाज़ार के उपयोग का विवेचन

3) पत्नी 4) पत्नी

5) पावर है　　　　6) संतोषी

7) खाली　　　　8) खाली न

9) क्रय-शक्ति को　　　　10) अनावश्यक वस्तुएँ

2.7 सारांश :-

1. 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है।

2. लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह ऐसा सजा होता है कि बेहया ही इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष, तृष्णा व ईर्ष्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

3. अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है।

4. मन को बलात बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है

5. लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है ।

6. लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं, वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

2.8 स्वाध्याय :-

अ) टिप्पणियाँ

1) बाजारूपन

2) बाजार का जादू

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) बाजार, आदमी की सोच को बदल देता हैं इस निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए?
2) बाजार के जादू की पकड़ से बचने का सीधा–सा उपाय क्या हैं?

2.9 क्षेत्रीय कार्य :–

1) आप बाजार की भिन्न –भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य बाजार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? जानकारी प्राप्त करें।
2) पर्चेसिंग पावर आपको किस तरह के बाजार में नजर आती हैं? चर्चा कीजिये।
3) बाजार के जादू की पकड़ से बचने का सीधा–सा उपाय क्या हैं? चिंतन कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) प्रभा खेतान लिखित 'बाजार के बीच बाजार के खिलाप' किताब पढ़िए।

इकाई 4

1. 'हम हशमत – भीष्म सहानी' (संस्मरण)

– कृष्णा सोबती

3.1 उद्‌देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 कृष्णा सोबती का परिचय

3.3.2 'निबंध' विधा का परिचय

3.3.3 'हम हशमत' संस्मरण का आशय

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द / शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्‌देश्य :–

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत पाठक..

- हिंदी कथेत्तर साहित्य से परिचित होंगे।
- संस्मरण विधा की विशेषताओं का ज्ञान होगा।
- हिंदी के प्रमुख हस्ताक्षर कृष्णा सोबती के जीवन तथा सृजनात्मक दृष्टि का ज्ञान प्राप्त होगा।
- 'हम हशमत' संस्मरण का आशय समज पाएंगे।
- भीष्म सहानी की साहित्यिक दृष्टि से परिचित होंगे।

3.2 प्रस्तावना :–

स्मृति के आधार पर किसी विषय या व्यक्ति के संबंध में लिखित किसी लेख या ग्रंथ को संस्मरण कहते हैं। संस्मरण लेखक अतीत की अनेक स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कल्पना भावना या व्यक्तित्व की विशेषताओं से अनुरंजित कर (युक्त कर) प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करता है, उसी का वर्णन करता है, उसके वर्णन में उसकी अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं का समावेश रहता है। संस्मरण लेखक के लिए यह नितांत आवश्यक है कि लेखक ने उस व्यक्ति या वस्तु का साक्षात्कार किया हो, जिसका वह संस्मरण लिख रहा है। वह अपने समय के इतिहास को लिखना चाह रहा है परंतु इतिहासकार की भांति वह विवरण प्रस्तुत नहीं करता।

भारतीय साहित्य के अग्रणी नामों में एक कृष्णा सोबती की याद में राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा 'हम हशमत की याद में' (स्मृति सभा) का आयोजन किया गया। जहां जाने माने पत्रकार, लेखक और कई बुद्धिजीवी शामिल हुए। कृष्णा सोबती आधुनिक हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। वह अपनी रोचक क़िस्सागोई और विलक्षण देशज भाषा शैली से लैस प्रयोगशील रचनाकार रहीं हैं। 'हम हशमत' हमारे समकालीन जीवन–फलक पर एक लंबे आख्यान का प्रतिबिंब है। इसमें हर चित्र घटना है और हर चेहरा कथानायक। 'हशमत' की जीवंतता और भाषायी चित्रात्मकता उन्हें कालजयी मुखड़े के स्थापत्य में स्थित कर देती है। इसमें भीष्म सहानी की दृष्टी का अंकन हुआ है।

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 कृष्णा सोबती का परिचय :–

- **जन्म :–**

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती का जन्म पाकिस्तान के गुजरात प्रांत में 18 फरवरी 1925 को हुआ था। भारत विभाजन के समय गुजरात का वह हिस्सा पाकिस्तान में चले जाने के बाद उनका परिवार दिल्ली आकर बस गया। इनके परिवार के कुछ लोग औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के मुलाजिम थे।

- **शिक्षा :–**

कृष्णा सोबती ने तीन भाई बहनों के साथ स्कूल में अपनी शुरुआती शिक्षा की पढ़ाई शुरू की। उनकी शुरूआती शिक्षा दिल्ली और शिमला में हुई थी। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा 'फतेहचंद कॉलेज', लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) में शुरू की थी लेकिन भारत के विभाजन होने पर वह लोग दिल्ली लौट आए। विभाजन के तुरंत बाद इनका परिवार 2 साल तक 'महाराजा तेज सिंह' के संरक्षण में भी रहा था जो सिरोही, राजस्थान के महाराजा थे। कृष्णा सोबती 23 वर्ष की आयु से ही लेखन में सक्रिय रही हैं।

- **विवाह :–**

उन्होंने अपने जिंदगी के 70 वें जन्मदिवस के बाद डोंगरी लेखक शिवनाथ जी से विवाह किया था।

- **साहित्य सृजन :–**

कृष्णा सोबती के कहानी संग्रहों जैसे 'डार से बिछुड़ी', 'बादलों के घेर', 'तीन पहाड़ व 'मित्रों मरजानी' में इन्होंने नारी को अश्लीलता की कुंठित राष्ट्र को अभिभूत कर सकने में सक्षम अपसंस्कृति को इतने बेहतर तरीके से उभारा है कि इससे साधारण पाठक हतप्रभ हो जाता है। इनका 'सिक्का बदल गया', 'बदली बरस गई' जैसी कहानियां भी काफी प्रसिद्ध है। इनके उपन्यास 'डार से बिछुड़ी' और 'मित्रों मरजानी' को नामवर सिंह ने उल्लेख मात्र किया है। नामवर सिंह ने सोबती को उन उपन्यासकारों की पंक्ति में गिनाया, जिनकी रचनाओं में कहीं वैयक्तिक और कहीं सामाजिक–पारिवारिक विषमताओं का विरोध मिलता है। नारी की मुक्ति की छटपटाहट एवं घर की चहारदीवारी से बाहर जाने की हसरतें कृष्णा जी के कथा साहित्य में ऐसे ही नहीं आती है, बल्कि उन्होंने उसे एक पारदर्शी भाषा द्वारा महिलाओं की कल्पना के सांचे में ढ़ाला है। कृष्णा जी हिंदी साहित्य सागर का ऐसा मोती हैं जिसकी चमक हमेशा बरकरार रहेगी।

उपन्यास:

1. डार से बिछुड़ी
2. यारों के यार
3. तीन पहाड़
4. मित्रो मरजानी
5. सूरजमुखी अंधेरे के
6. ऐ लड़की
7. समय सरगम
8. सोबती एक सोहबत
9. जिंदगीनामा
10. जैनी मेहरबान सिंह

कहानी संग्रह :–

1. बादलों के घेरे

संस्मरण, शब्दचित्र : शब्दों के आलोक में, हम हशमत।

सम्मान और पुरस्कार :–

1. सन 1980 में उन्हें 'जिंदगीनामा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
2. सन 1996 में कृष्णा जी साहित्य अकादमी की फेलो बनाई गई थीं, जो कि अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है।
3. सन 1981 में उन्हें शिरोमणी पुरस्कार मिला।
4. सन 1982 में कृष्णा सोबती को हिंदी अकादमी पुरस्कार मिला ।
5. इन्होंने यूपीए सरकार में पद्मभूषण लेने से इंकार कर दिया था ।
6. सन 2015 में असहिष्णुता के मुद्दे साहित्य अकादमी पुरस्कार वापस कर दिया था।
7. सन 2017 में इन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

- **मृत्यु :**

कृष्णा सोबती जी का निधन 25 जनवरी 2019 को हुआ था। एक लंबी बीमारी के बाद सुबह साढ़े आठ बजे उन्होंने एक निजी अस्पताल में दम तोड़ा।

3.3.2 संस्मरण विधा का परिचय :–

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है। यात्रा साहित्य भी इसके अन्तर्गत आता है। संस्मरण को साहित्यिक निबन्ध की एक प्रवृत्ति भी माना जा सकता है। ऐसी रचनाओं को 'संस्मरणात्मक निबंध' कहा जा सकता है। व्यापक रूप से संस्मरण आत्मचरित के अन्तर्गत लिया जा सकता है। किन्तु संस्मरण और आत्मचरित के दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है। आत्मचरित के लेखक का मुख्य उद्देश्य अपनी जीवनकथा का वर्णन करना होता है। इसमें कथा का प्रमुख पात्र स्वयं लेखक होता है। संस्मरण लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है। संस्मरण में लेखक जो कुछ स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है। लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनायें संस्मरण में अन्तर्निहित रहती हैं। इस दृष्टि से संस्मरण का लेखक निबन्धकार के अधिक निकट है। वह अपने चारों ओर के जीवन का वर्णन करता है। इतिहासकार के समान वह केवल यथातथ्य विवरण प्रस्तुत नहीं करता है। पाश्चात्य साहित्य में साहित्यकारों के अतिरिक्त अनेक राजनेताओं तथा सेनानायकों ने भी अपने संस्मरण लिखे हैं, जिनका साहित्यिक महत्त्व स्वीकारा गया है।

- **हिन्दी भाषा में संस्मरण**

हिन्दी के प्रारंभिक संस्मरण लेखकों में पकृ सिंह शर्मा हैं। इनके अतिरिक्त बनारसीदास चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा तथा रामवृक्ष बेनीपुरी आदि हैं। चतुर्वेदी ने ''संस्मरण'' तथा ''हमारे अपराध'' शीर्षक कृतियों में अपने विविध संस्मरण आकर्षक शैली में लिखे हैं। हिन्दी के अनेक अन्य लेखकों तथा लेखिकाओं ने भी

बहुत अच्छे संस्मरण लिखे हैं। उनमें से कुछ साहित्यकारों का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। श्रीमती महादेवी वर्मा की ''स्मृति की रेखाएँ'' तथा ''अतीत के चलचित्र'' संस्मरण साहित्य की श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। रामबृक्ष बेनीपुरी की कृति ''माटी की मूरतें'' में जीवन में अनायास मिलने वाले सामान्य व्यक्तियों का सजीव एवं संवेदनात्मक कोमल चित्रण किया गया है।

सन् 1950 के आस-पास का समय संस्मरण लेखन की दृष्टि से विशेष महत्त्व का है। कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने अपनी कृतियों 'भूले हुए चेहरे' तथा 'दीप जले शंख बजे' के कारण इस समय के एक अन्य महत्त्वपूर्ण संस्मरण लेखक हैं। लगभग इसी समय उपेंद्रनाथ अश्क का 'मंटो मेरा दुश्मन' प्रकाशित हुआ जिसका साहित्यिक और गैर-साहित्यिक दोनों स्थानों पर भरपूर स्वागत हुआ। जगदीशचंद्र माथुर ने 'दस तस्वीरें' और 'जिन्होंने जीना जाना' के माध्यम से अपने समय की महत्वपूर्ण संस्मरणात्मक चित्र प्रस्तुत किए।

समकालीन लेखन में आत्मकथात्मक विधाओं की भरमार है। वर्तमान समय के संस्मरण लेखकों में काशीनाथ सिंह, कांतिकुमार जैन, राजेंद्र यादव, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया अखिलेश, कृष्णा सोबती का नाम काफी प्रमुखता से ले सकते हैं।

अपने से जुड़े चुनिन्दा पात्रों के जीवन के महत्त्वपूर्ण अंशों को उनकी वैचारिकी के साथ कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' के चार भागों में लिपिबद्ध किया है। 'हम हशमत' प्रथम 1977 में, द्वितीय 1999 में, तृतीय 2012 में प्रकाशित हुए। इस शृंखला का अंतिम और चौथा भाग हाल ही में प्रकाशित (2019) हुआ है। कृष्णा सोबती ने 'हशमत' को सिर्फ़ एक उपनाम के रूप में ग्रहण नहीं किया था, बल्कि वह अपने आप में एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व है। कृष्णा जी ने स्वयं कहा है कि जब वे 'हशमत' के रूप में लिखती हैं तो न सिर्फ़ उनकी भाषा, और शब्दचयन कुछ अलग हो जाते हैं, इनका हस्त-लेख तक कुछ अलग हो जाता है।

3.3.3 'हम हशमत' संस्मरण का आशय :-

कृष्णा सोबती आधुनिक हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। वह अपनी रोचक क़िस्सागोई और विलक्षण देशज भाषा शैली से लैस प्रयोगशील रचनाकार रहीं हैं। एक सशक्त कथा वाचक थीं, उनकी कथन शैली तीखी धारदार और चुनौती भरी हुआ करती थी। उन्होंने अपनी लंबी साहित्यिक यात्रा में हर नई कृति के साथ अपनी ही क्षमताओं का अतिक्रमण किया है। कृष्णा सोबती जी ने अपने समकालीन साहित्य कर्मियों के साथ उनके प्रत्यक्ष एवं परोक्ष संबंधों को व्याख्यायित एवं विश्लेषित करने के लिए उन्होंने एक नई साहित्य विधा को आविष्कृत किया जिसमें वैचारिक चिंतन मौजूद है और साथ ही उन साहित्यकारों के साथ वाद, विवाद और संवाद उपलब्ध हैं। अपने से जुड़े चुनिन्दा पात्रों के जीवन के महत्त्वपूर्ण अंशों को उनकी वैचारिकी के साथ कृष्णा सोबती ने 'हम हशमत' के चार भागों में लिपिबद्ध किया है। 'हम हशमत' प्रथम 1977 में, द्वितीय 1999 में, तृतीय 2012 में प्रकाशित हुए। इस शृंखला का अंतिम और चौथा भाग हाल ही में प्रकाशित (2019) हुआ है। कृष्णा सोबती ने हमहशमत को सिर्फ़ एक उपनाम के रूप में ग्रहण नहीं किया था, बल्कि वह अपने आप में एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व है। कृष्णा जी ने स्वयं कहा है कि जब वे

'हशमत' के रूप में लिखती हैं तो न सिर्फ़ उनकी भाषा, और शब्दचयन कुछ अलग हो जाते हैं, इनका हस्त-लेख तक कुछ अलग हो जाता है।

प्रस्तुत संस्मरण द्वारा अभिव्यक्त भीष्म सहानी जी के पास जीने के स्तर पर एक सुथरा, सुरक्षित, मजबूत चौखटा है जिसने भीष्म के समूचे लेखन और काफी हद तक जीवन-दृष्टि को भी प्रभावित किया है। उनकी अपनी राजनीतिक आस्थाएँ हैं, 'इंटलेक्चुअल कमिटमेंट' है। मोटे तौर पर भीष्म को अपने कितने ही साथियों से कहीं ज्यादा सुविधा और समग्रता जिन्दगी में मिली है। छोटी-मोटी सुविधाएँ- अच्छा घर, पढ़ी-लिखी बीवी, किताबों से भरी शेल्फें और रवनाओं को एकसार करती एक बँधी-बँधाई जिन्दगी। जीवन के इस सुरक्षित पैटर्न ने जहाँ भीष्म को पनपने में मदद दी है वहाँ लेखन के लिए जमने की जो जमीन सिर्फ चुनौतियों से बनती है- भीष्म के आगे से दूर कर दी है, हटा दी है। यही वजह है कि लेखन के स्तर पर भीष्म को यह लड़ाई कुछ दूसरे ढंग से लड़नी पड़ती है। हशमत इतना जरूर कहना चाहेंगे कि जिस मध्यमवर्गीय खोखलेपन को भीष्म का लेखन उघाड़ता है, उसे देखने की आँख भी उसे उसी वर्ग से मिली है। 'चीफ की दावत' से लेकर 'भगवान के आदमी' तक की कहानियों में परिवेश के यथार्थ को भीष्म ने अपनी साहित्यिक मान्यताओं से परे नहीं जाने दिया। यही वह बिन्दु भी है जो भीष्म की रचनाओं को उसके मानसिक घनत्व के बराबर जोड़े रखता है।

इंटलेक्चुअल तल पर दर्जा-व-दर्जा उड़ानों या गहराइयों में खो जाने के साथ जिन्दगी के यथार्थ से हट जाना, प्रतिभा के बल पर अपने को विभाजित कर लेना। अपने पर खुद लीक लगाकर समाज से कट जाना, किसी भी लेखक के लिए विभाजन से बड़ी ट्रैजडी है। भीष्म ने इस विभाजन से अपने को बचाया है। उसकी नजर कटी नहीं। उसका सोचना अँधेरे और उजाले में डगमगाया नहीं।

भीष्म की तारीफ में यह कहना जरूरी है कि उसके दोस्तों का बड़ा गुच्छा उसके मिजाज का सबूत है। अंग्रेजी साहित्य पढ़ाने वालों की अमलदारी वाली ऊँची अदा भीष्म में कतई नहीं।

भीष्म का पेशा है अंग्रेजी पढ़ाना और अपनी मादरी जबान हिन्दी में साहित्य-सृजन करना। अंग्रेजी साहित्य के शिक्षकों और पाठकों को हिन्दी की हवा से हो जाने वाले जुकाम से भीष्म ने अपने को आजाद रखा है। ओफ्फो, किस खतरनाक नुकते को छू लिया हशमत ने! अभी भी अंग्रेजी पर फिदा दोस्तों की बहुत बड़ी कतार है जो मानकर चली है कि हिन्दी पिछड़ेपन की जबान है। इसमें कुछ लिखा भी जा सकता है- इसमें भी उन्हें शक है। अकादमी पुरस्कार प्राप्त 'तमस' का पहला अध्याय पढ़कर भाषा और शिल्प के स्तर पर हिन्दी न बिचारी लगती है, न पिछड़ी। हिन्दी समर्थ है, सुथरी है और जो चाहे व्यक्त कर सकती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :-

नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. लैम्प के नारंगी शेड में दिखा चेहरा लेखिका को भीष्म साहनी का .... लगा।

   अ) भाई ब) माता क) बेटा ड) दोस्त

2. कृष्णा सोबती .... जी की मुलाखत लेने हेतु रेश्तरा में पहुँचती है।

अ) सुरेश वर्मा ब) कवी क) भीष्म सहानी ड) नेता

3. भीष्म के आगे कॉफी का प्याला और हाथ में............ था।

अ) सिगरेट ब) लेखनी क) किताब ड) प्रेमिका का हाथ

4. लेखिका के अनुसार 'भीष्म सहानी' कोई परदा नहीं, वह............... इन्सान है।

अ) गुसेल ब) सहमी क) बुढा ड) सादामिजाज

5. भीष्म .... की खरोंचें, जख्म, उसके दर्द और उसके ऊपरी खोल को छू-छूकर, अपने को उस भीड़ से अलग खड़ा कर लेते हैं।

अ) मध्यम वर्ग ब) हाथ की क) समाज ड) सोच

3.5 पारिभाषिक /शब्दार्थ :-

1. बरामदा - ओसारा, दालान।
2. हशमत - गौरव, बड़ाई।
3. गर्मजोशी - जोश।
4. नोक - ए- पलक - चेहरे की गठन या बनावट।
5. सादगी पसंद - दिखावे और बनावटी साज-सज्जा से दूर भागने वाला, साधारण आचरण वाला।
6. इंटलेक्चुअल कमिटमेंट' - वह व्यक्ति होता है जो समाज की वास्तविकता के बारे में महत्वपूर्ण सोच, अनुसंधान और प्रतिबिंब में संलग्न होता है।

3.6 स्वयं अध्ययन के उत्तर :-

1) बेटा 2) भीष्म सहानी 3) सिगरेट 4) सादामिजाज 5) मध्यम वर्ग

3.7 सारांश :-

1. 'हम हशमत' में संकलित संस्मरणों को पढ़ते हुए एक तिलिस्म की-सी गिरफ़्त में कुछ परिचित, कुछ अल्प-परिचित या अपरिचित व्यक्तियों के साथ नए सिरे से पहचान क़ायम करने का सुख होता है।
2. 'हम हशमत' हमारे समकालीन जीवन-फलक पर एक लंबे आख्यान का प्रतिबिंब है। इसमें हर चित्र घटना है और हर चेहरा कथानायक। 'हम हशमत' की जीवंतता और भाषायी चित्रात्मकता उन्हें कालजयी मुखड़े के स्थापत्य में स्थित कर देती है।

3. कृष्णा सोबती की क़लम वह तुर्श और तीखी भंगिमा है, जो समय के पेचोख़म में सिर छुपाए बैठे मामूलीपन की आँख में सीधी जाकर लगती है।

4. संस्मरण द्वारा अभिव्यक्त भीष्म सहानी जी के पास जीने के स्तर पर एक सुथरा, सुरक्षित, मजबूत चौखटा है जिसने भीष्म के समूचे लेखन और काफी हद तक जीवन–दृष्टि को भी प्रभावित किया ।

5. अंग्रेजी साहित्य पढ़ाने वालों की अमलदारी वाली ऊँची अदा भीष्म में कतई नहीं। भीष्म मध्यम वर्ग की खरोंचें, जख्म, उसके दर्द और उसके ऊपरी खोल को छू–छूकर, अपने को उस भीड़ से अलग खड़ा कर लेते है।

3.8 स्वाध्याय :–

अ) टिप्पणियाँ

1) भीष्म का पेशा
2) इंटलेक्च्युअल कमिटमेंट

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) संस्मरण विधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2) 'हम हशमत' संस्मरण की समीक्षा कीजिए।
3) 'हम हशमत' संस्मरण के जरिए भीष्म सहानी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
4) हिंदी साहित्य में कृष्णा सोबती का योगदान स्पस्ट कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :–

1) हिंदी और मराठी भाषा में लिखे गए संस्मरणों की सूची बनाइए।
2) अपने प्रदेश के किसी महान साहित्यकार का हिंदी में संस्मरण लिखिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) कृष्णा सोबती लिखित संस्मरण 'हम हशमत' के सभी खंडो को पढ़िए।

❑❑❑

इकाई 1
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय

1.3.2 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यक्तित्त्व

1.3.3 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का कृतित्त्व

1.3.4 नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के जीवन से परिचित होंगे।
2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित हो जाएंगेठ।
3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाट्य साहित्य से परिचित हो जाएंगे।
4. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक कालजयी होने के कारण वर्तमान समस्याओं को जान सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक सफल कवि, नाटककार, उपन्यासकार, पत्रकार, अनुवादक, संपादक, और बाल साहित्यकार रहे है। प्रतिभाशाली नाटककार के रुप में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना चिरपरिचित है। आधुनिक कवियो में सक्सेनाजी अनूठे व्यक्तित्त्व के लिए विशेष रूप से प्रसिध्द है तथा नई कविता के आंदोलन में उभरे सशक्त हस्ताक्षर है। उनके साहित्य में आज की व्यवस्था पर व्यंग्य है। उनके नाट्य साहित्य में आम आदमी के जिंदगी की त्रासदी के दर्शन होते है। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदी विविध विधाओं को उन्होने समृध्द किया है।

सर्वेश्वर जी के नाटक समय की यथार्थता का दस्तावेज है और एक जिवंत व्यंग्य भी है। उन्होने अपने नाट्य साहित्य के द्वारा सामाजिक विसंगतियों और अमानवीय प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया है।

1.3 विषय विवेचन

विषय विवेचन के अंतर्गत हम सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व का परिचय प्राप्त करेंगे। नाटककार के रूप में सर्वेश्वर जी की जानकारी प्राप्त करेंगे।

1.3.1 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय

सर्वेश्वरजी के साहित्य का अध्ययन करने से पहले उनके व्यक्तिगत जीवन तथा उनके जीवन से जुडी घटनाओं का अध्ययन करना जरुरी है। आधुनिक हिंदी साहित्य के सप्तक कवियो में से एक सर्वेश्वरजी है। गद्य और पद्य पर समान अधिकार रखनेवाले सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है।

1.3.1.1 जन्म

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म गुरुवार दि.15 सितम्बर, 1927 ई. को बस्ती जिले के पिकौरा नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वेश्वर दयाल सक्सेना था, जो व्यावसायिक थे तथा माता का नाम श्रीमती सौभाग्यवती सक्सेना था, जो सरकारी स्कूल में अध्यापिका थी। सुशिक्षित और संस्कारी परिवार में जन्मे सर्वेश्वर हमेशा ग्रामीण संस्कारो से जुडे रहे। उनकी जन्मभूमि और वहाँ का ग्रामीण वातावरण उनकी ईश्वरदत्त प्रतिभा के विकास में पर्याप्त सहायक सिद्ध हुआ है।

1.3.1.2 बाल्यकाल

सर्वेश्वर का बाल्यकाल कस्बे में बिता। उनके घर के पास अनाथाश्रम था। प्रकृती तथा खेतों के बीच सर्वेश्वर का बचपन प्रभावित हुआ। बचपन से हि सर्वेश्वर के व्यक्तित्त्व में निर्भयता, करुणा, आस्था, मानवता आदि विशेषताएँ थी जो बाद में उनके साहित्य संसार की आधार बन गई।

1.3.1.3 शिक्षा

सर्वेश्वर ने अपनी प्राथमिक शिक्षा सन 1942 ई.में बस्ती के एंग्लो संस्कृत हायस्कूल में की। सन 1944 में इंटरमिडीएट हो गए। उन्होंने सन 1946 में बी.ए. और सन 1949 में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इंटर पास होने तक वे कहानीकार और कवि के रूप में ख्यातनाम हो चुके थे।

1.3.1.4 पारिवारिक जीवन

सर्वेश्वर का परिवार आर्थिक स्थिति से जुझने वाला निम्न मध्यवर्गीय था। माता पिता के मृत्यु के बाद उनके हालात और बिगड गए। आर्थिक तंगी, पारिवारिक कलह और अनाथ बच्चो के साथ उनका बचपन बीता। पढाई के वक्त भी सर्वेश्वर अपनी आर्थिक जरुरतों का प्रबंध स्वयं करते थे। बचपन से ही उन्होने आत्मनिर्भर बनना सीख लिया था। अपनी आर्थिक स्थिति खराब होने पर भी वे दूसरे असहाय बच्चों के लिए फीस, पुस्तके और भोजन के लिए कुछ न कुछ कर दिया करते थे।

सर्वेश्वर सबसे अधिक प्रेम जिसे करते थे वह उनकी पत्नी विमला की मृत्यु के बाद उनके जीवन में उदासी छा गई। जीवन संगिनी के चिरवियोग के बाद अपनी दोनो बेटियाँ शुभा और विभा की सारी जिम्मेदारी उनपर आ गई। दोनो बेटीयों के साथ ही उनके दु:ख-दर्द, समाज के दु:ख-दर्द और गरीबो के दु:ख-दर्द बाँटने में ही उनका जीवन व्यतीत हुआ। परिश्रम, कर्तव्यनिष्ठा और निरंतर संघर्ष से भर उनका पारिवारिक जीवन अंत तक संघर्षमय ही रहा।

1.3.1.5 जीवनयापन

जीविकोपार्जन के लिए सर्वेश्वर ने अध्यापक, क्लर्क, आकाशवाणी में सहायक प्रोड्युसर की नौकरी की। 'दिनमान' पत्रिका के प्रमुख उपसंपादक और कुछ समय तक बच्चो की पत्रिका 'पराग' के संपादक रहे। सन 1967 में दिनमान के मुख्य संपादक बने। प्रयाग में स्थायी रूप से रहने के विचार से सर्वेश्वरजी ने चीफ अकौंटंट के आफिस में क्लर्क की नौकरी की।

1.3.1.6 निधन

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का निधन 23 सितम्बर 1983 में दिल का दौरा पडने से हुआ। उन्हें मरणोपरांत ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

1.3.2 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यक्तित्व

सर्वेश्वर का व्यक्तित्व तेजस्वी था। साँवले चेहरे पर लंबी नोकदार नाक उनके भीतर के पैनेपन को एक निगाह में हि बता देती थी। सर्वेश्वर का चेहरा हँसता हुआ और आकर्षक था। चिर युवा मन के सर्वेश्वर को हर सुंदर चीज के प्रति आसक्ती थी। फिर भी चमक दमक की दुनिया से वे दूर रहते थे। उनके व्यक्तित्त्व में एक मिठास भरी सहजता थी। सर्वेश्वर के व्यक्तित्त्व में निम्नलिखित विशेताएँ दिखाई देती है।

1.3.2.1 निष्पक्षता

गहन चिंतन, विनम्र, सौजन्यशील और कर्म साधना से परिपूर्ण सर्वेश्वर निष्पक्ष स्वभाव के थे। अपनी लीक पर चलना और किसी की परवाह न करना यह उनका स्वभाव था। फिर भी सामान्य आदमी के साथ एकदम मुक्त, स्नेहयुक्त व्यवहार, प्यार बाँटने की ललक उनमें थी। किसी व्यक्ती की समस्या से वे इतने जुड जाते थे जैसे वह समस्या उनकी खुद की हो। सर्वेश्वर भीड-भाड तथा चकाचौंध की दुनिया से दूर ही रहते थे। अपनी अलिप्ततावादी नीति को स्पष्ट करते हुए वे कहते ह ''मै स्वभाव से मिलनसार आदमी हूँ लेकिन लोगों से बहुत कम मिलता जुलता हूँ, क्योंकी मेलजोल रखने लायक लोग दिखते ही नही। और यदि गलती से मेलजोल बढता भी है तो जल्दी टूट जाता हैं। क्योंकी मै स्वयं को संस्कार, रुचि, विचार आदि में दूसरों से इतना भिन्न पाता हूँ कि साथ चलना मुश्कील हो जाता है। अपना कोई सही अर्थो में साथी नही होने का रोना भी मै नही रोता क्योंकी, मै मानता हूँ कि अपने को मिटाकर ही आप दुसरो के हो सकते है और अपने को मिटाकर दुसरों का होना मेरी दृष्टी में कोई मतलब नही रखता।''

सर्वेश्वर के व्यक्तित्व में एक मिठास भरी सहजता है। मन का असंतोष और मित्रों का सहयोग उनकी संपत्ती थी। कोई द्वेष, ईर्ष्या नही, क्योंकि भीतर से खूब भरापुरा मन अनलिखी पन्नों की तरह साफ है।

1.3.2.2 प्रेरक व्यक्तित्व

सर्वेश्वरजी का व्यक्तित्त्व एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व होने के कारण वे युवा पीढी के प्रिय कवि है। उन्होने युवा कवियों को नए ढंग से काव्य सृजन की प्रेरणा दी है। सर्वेश्वर जी में ऐसा कुछ रहा है, जिससे किशोर कल्पना को उत्तेजित तथा नई अंत:दृष्टि और युवा वर्ग को नई ज्ञानात्मक शक्ति की स्फूर्ती मिलती रही। आज के अधिकांश युवा कवियों की कविताओं पर सर्वेश्वर द्वारा किए गए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यंग्य का प्रभाव दिखाई देता है। सर्वेश्वर के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यंग्य ने युवा मानस को आंदोलित करते हुए झकझोरा है।

1.3.2.3 विद्रोही व्यक्तित्त्व

सर्वेश्वर जी विद्रोही व्यक्तित्त्व के साहित्यकार थे। उनके मन में सामाजिक, राजनीतिक, विसंगातियों के प्रति घृणा थी। अत्यंत सहजता से उन्होने अपने अंदर की अभिव्यक्ति अपने साहित्य में की है। सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए लोकतंत्र और राजतंत्र की व्यवस्था पर चोट करते है। बचपन में विद्रोही व्यक्तित्त्व के बीज उनमें बो दिए थे। सर्वेश्वर की कविता तथा नाटकों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ढाँचे में परिवर्तन के लिए विद्रोह है। आक्रोश और विद्रोह ही उनकी कविता की शक्ति और सृजन की प्रेरणा है।

1.3.2.4 कलाप्रेमी एवं रसिक

सर्वेश्वरजी कला प्रेमी एवं रसिक थे। संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला और साहित्य का ऐसा शायद ही कोई कार्यक्रम होता हो जहाँ वे मौजूद न रहते हो और अपनी मौजूदगी से उसे भरापुरा न करते हो। सर्वेश्वर जी को नए कवियों में सर्वाधिक कालबोध के पारखी कहा जाता था।

1.3.2.5 विरक्त वृत्ति

सर्वेश्वरजी का जीने का अंदाज ही निराला था। वे भीड–भाड तथा चकाचौंध की दुनिया से दूर ही रहते थे। स्वभाव से मिलनसार आदमी होने के बावजुद भी वे लोगों से बहुत कम मिलते थे। आम आदमी का दु:ख दर्द वो अपना दु:ख दर्द समझते थे। सर्वेश्वर अपने इस अलिप्ततावादी गुण के कारण किसी राजनीतिक दल से बंधे नही। कोई राजनीतिक दल उन्हें ऐसे दिखा नही जिसका वे समर्थन करे।

1.3.2.6 ग्राम्य जीवन से लगाव

सर्वेश्वर के जीवन का अधिक काल अपने गाँव बस्ती में बिता था। देहात के सहज, सरल जीवन के संस्कार बचपन से होने के कारण उनके मन में बस्ती और उसके परिवेश के प्रति अत्यंत प्रेम था। ग्रामीण जीवन के संस्कारो की प्रबलता ने सर्वेश्वरजी को महानगरीय सभ्यता के भीतर बेचैन रखा था। शहर से वे कभी समझौता नही कर सके। तभी तो उन्हें दिल्ली की सडके कुआनो नदी जैसी दिखाई देती थी। ग्रामीण जीवन से उन्हें लगाव था। गाँव के छल रहित जीवन को वे अधिक चाहते थे।

1.3.2.7 अनूठे शैलीकर–व्यंग्यकार

सर्वेश्वरजी एक अनुठे शैलीकार एवं व्यंग्यकार थे। तिखी और सिधी चोट करनेवाले उनके अधिकांश व्यंग्य एक सच्चे और जन हितैषी कवि के व्यंग्य है। व्यंग्य करना सर्वेश्वरजी का एक सहज गुण था। वे व्यंग्य करते थे व्यक्तीपर, समाज पर, समाज के ढाँचे पर और दुनिया के तौर पर। उनका व्यंग्य कभी हास्य से मिलकर हलका हो जाता है, तो कभी इतना चुटिला कि कथ्य को स्पष्ट करता हुआ पाठक के ह्रदय के आरपार हो जाता है।

1.3.2.8 मानवतावादी एवं लोकमंगल की भावना

आर्यसमाजी सर्वेश्वर की मूर्तिपूजा में जरा भी आस्था नही थी। मानवतावादी स्वर उनके साहित्य की मुख्य प्रेरणा थी। गरीबों और शोषितों के प्रति उनके मनमें आस्था थी। दीन– हीन, गरीब, पीडित, परंपरा में जकडी नारी और असहाय विवश मनवों के कल्याण के लिए उनका मन सदैव करूणा भरा रहता था। युवा वर्ग की मदद करने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। लोकमंगल की भावना उनके साहित्य में सर्वत्र दिखाई देती है।

1.3.2.9 गरीबों के हमदर्द

सामान्य लोगों के प्रति आस्थावान होने के कारण उनकी समस्याओं तथा दयनीय स्थिति के बारे में सर्वेश्वरजी अधिक सोचते थे। उनके मन में गरीबों के प्रति आत्मीयता थी। असहाय गरीब बच्चो को फीस, पुस्तके और भोजन की सामग्री भी देते थे। गरीबों का दर्द देखकर वो दुःखी होते थे। जितनी हो सके उतनी मदद वो गरीबों को करते थे।

इस प्रकार सर्वेश्वरजी का व्यक्तित्त्व अत्यंत सीधा सरल था। सर्वेश्वरजी की व्यंग्य रचनाएँ राजनीतिक नेताओं पर, पूँजीपतियों पर, फॅशन पर, कृत्रिम प्रदर्शनों पर, सामाजिक तथा धार्मिक रूढियों पर, साधू के रूप में बैठे शैतानों पर और नारी की पराधीनता पर प्रधानता से दिखाई देता है।

1.3.3 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का कृतित्व

गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार रखनेवाले सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार थे। कवि, कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकार, प्रखर पत्रकार, यात्रा वर्णनकार, संस्मरणकार, निबंधकार और संपादक सर्वेश्वरजी का कृतित्त्व बहुमुखी है। साहित्य के सभी क्षेत्रो में अपनी लेखनी के कारण वे प्रख्यात है।

1.3.3.1 कविता

सर्वेश्वर के बालमन पर ग्रामीण वातावरण का, अभावों का ऐसा प्रभाव पडा, जिससे उन्हें काव्य लिखने की प्रेरणा मिली। सर्वेश्वरजी तीसरा सप्तक के प्रमुख कवि थे। लखनऊ से प्रकाशित होनेवाली आर्यामित्र पत्रिका में उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई थी। सर्वेश्वरजी के अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चूके है, जो निम्न प्रकार है

(1) काठ की घंटियाँ (2) बाँस का फुल (3) एक सूनी नाँव (4) गर्म हवाएँ (5) कुआनो नदी (6) जंगल का दर्द (7) खुँटियो पर टंगे लोग (8) कोई मेरे साथ चले

1.3.3.2 कहानी संग्रह

सर्वेश्वरजी के प्रकाशित कहानी संग्रह (1) कच्ची सडक (2) अँधेरे पर अँधेरा (3) बदलता हुआ कोण। सर्वेश्वर द्वारा लिखित कहानियो का विश्लेषण निम्न प्रकार किया जा सकता है –

(1) सामाजिक व्यंग्य प्रधान कहानियाँ (2) शोषण के विरुद्ध प्रबल आक्रोश की कहानियाँ (3) आर्थिक समस्याप्रधान कहानियाँ (4) उपदेश परक कहानियाँ (5) बाल कहानियाँ

1.3.3.3 उपन्यास

सर्वेश्वर ने उपन्यास विधा में भी बडा योगदान दिया है। उनके कुल मिलाकार तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके है। उनके उपन्यासों में तत्कालीन समाज का पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है। सर्वेश्वरजी के प्रकाशित उपन्यास निम्न प्रकार है

(1) सूने चौखटे (2) सोया हुआ जल (3) पागल कुत्तों का मसीहा

1.3.3.4 नाटक

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह नाटक में भी सर्वेश्वर का योगदान महत्त्वपूर्ण है। उनके नाटक प्रभावशाली होने के साथ कालजयी है। जीवन की नाटकीय संवेदना के प्रती उनके कवि मन में गहरा लगाव था। उनके नाटक निम्न प्रकार है

(1) बकरी (2) लडाई (3) अब गरिबी हटाव (4) हवालात (5) हिसाब–किताब

एकांकी – (1) कल भात आएगा (2) रूपमती बाजबहादूर

नुक्कड नाटक – मर गया ले जाओ

नृत्यनाटिका (1) होरी धूम मच्योरी (2) सावन घन आए (3) रक्षाबंधन

बाल नाटक – (1) हाथी की पों (2) अनाप शनाप (3) भों–भों – खों–खों। (4) लाख की नाक

1.3.3.5 बाल कविता

सर्वेश्वरजी ने बाल साहित्य में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी बाल कविता की रचना इस प्रकार है

(1) बतुता का जूता (2) महंगु की टाई (3) बिल्ली के बच्चे (4) नन्हा ध्रुवतारा

यात्रा संस्मरण – कुछ रंग कुछ गंध

पत्रकारिता – चरखे और चमचे

संपादन – (1) शमशेर (2) नेपाली कविताएँ और रक्तबीज

1.3.3.6 अनुवाद

सर्वेश्वरजी ने विश्व की विभिन्न भाषाओं की कविताओं का अनुवाद किया है। उन्होंने कुछ देशी विदेशी नाटकों के गितों का अनुवाद किया है। 'इवो आंद्रिय' के उपन्यास 'अनीका का जमाना' और बोरिस पास्तनार्क के उपन्यास डॉ. जीवागो का संक्षिप्त अनुवाद एवं सोविएत कहानियों का अनुवाद 'सोविएत कथा संग्रह' के नाम से सन 1978 ई.में प्रकाशित किया है।

1.3.3.7 सम्मान एवं पुरस्कार

साहित्य, पत्रकारिता, संपादन आदि क्षेत्र में सर्वेश्वरजी ने जो कार्य किया, उसके लिए उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है

1. जंगल का दर्द (काव्य संग्रह) पर सन 1976 ई. में उत्तर प्रदेश संस्थान का 'स्तरीय पुरस्कार' और मध्य प्रदेश सरकार का 'तुलसी पुरस्कार'।

2. मार्च 1981 ई. में साहित्य कला परिषद द्वारा सम्मान।

3. सितम्बर 1981 शब्द्लोक अहमदाबाद (गुजरात) द्वारा सम्मान।

4. खुन्टियो पर टंगे लोग (काव्य संग्रह) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (मरणोपरांत)।

1.3.4 नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना –

सर्वेश्वर मूलत: कवि होने पर भी एक प्रतिभाशाली नाटककार भी थे। कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार इन सबके साथ वे कवि व्यक्तित्त्व को सहयात्री रूप में ही रखकर अपने लोकधर्मी व्यक्तित्त्व का विकास करते है। गद्य और पद्य दोनो पर समान अधिकार रखनेवाले सर्वेश्वर प्रतिभाशाली नाटककार के रूप में चिरपरिचित है। साहित्यकार समाज में वास करता है। समाज में घटित घटनाओं का उसके मन पर प्रभाव पडता है। यही प्रभाव उनके साहित्य में दिखाई देता है।

सर्वेश्वरजी के नाटक समय की यथार्तता का दस्तावेज है और एक जीवंत व्यंग्य भी। उन्होंने अपने नाट्य साहित्य द्वारा सामाजिक विसंगतियों और अमानवीय प्रवृत्तियो का पर्दाफाश किया है। वास्तविक जीवन की लोकधर्मिता उनके यथार्थ पक्ष को जिस रूप में उद्घाटित करती है उससे वे अपने लोकनाट्यों की सृष्टि कर सके है।

नाटक क्षेत्र में सर्वेश्वर का योगदान 1948 ई.से प्रारंभ होता है। सर्वेश्वर के नाटकों का मंचन भी 1948 में इलाहाबाद में 'इंडियन नैशनल थियेटर' में किया गया था। यही से उनका झुकाव नाट्य की लोकधर्मिता के साथ संपृक्त हुआ है। उन्होंने जितने सारे नाटक लिखे है, वे मील का पत्थर माने जाते है। अपने नाटको में उन्होंने पारसी और नौटंकी रंग शैलियो का प्रयोग किया है। नौटंकी में जिस तरह नगाडा बजाना, गायन और नृत्य, गजल कव्वाली और फिल्मी धुनों का उपयोग किया है।

1.3.4.1 सर्वेश्वर का नाट्य साहित्य

(1) बकरी (2) लडाई (3) अब गरीबी हटाव (4) हवालात

(5) हिसाब– किताब (6) मर गया ले जाओ (नुक्कड नाटक)

(७) होरी धूम मच्यो री (नृत्य नाटिका)

1.3.4.2 सर्वेश्वर के नाटको का संक्षिप्त परिचय –

(1) **बकरी**

यह नाटक अपने रूपबंध में नया सार्थक समकालीन परिस्थिति का नाटक है। गांधी के नाम पर राजनीति करने वालो पर यह व्यंग्य नाटक है। 'बकरी' बदलते ढंग का सीधा सादा प्रभावशाली नाटक है। जिसमे समसामायिक का तीखा व्यंग्य है। राजनीतिक का भी व्यंग्य है। विदेश से हमने छुटकारा पा लिया उनसे मुक्ती

मिल गई, परंतु स्वतंत्रता के बाद अपने ही नेताओ ने देश की गरीब जनता को छलना आरंभ किया। पूरे नाटक में सत्ता के इसी इष्ट, स्वार्थी, महत्वाकांक्षी राजनीतिक चरित्र को सामने लाया गया है।

'बकरी' नाटक में गांधीजी के सिद्धान्तों का दुरुपयोग बतलाया है। गांधीजी की 'बकरी' का गाँवो में इस्तेमाल हो गया है। बकरी के नाम पर जनता की लुट हो रही है। ग्रामीण जनता भोली-भाली है। उनको लूटने का काम नेता कर रहे है। गांधीवादी सिद्धान्तों को स्पष्ट करते है, गरीब जनता से वोट प्राप्त करते है। गांधी के 'बकरी' का दर्शन कराते है। रुपये गहने आदि के माध्यम से जनता की लूट हो रही है। जनता को अंधविश्वास की ढकेल देने का प्रयास किया गया है। 'बकरी' को वोट न दिया तो रोग फैल जाएगा, अकाल हो जाएगा, लोगो की मृत्यु हो जाएगी ऐसा कहकर आम जनता को नेतागण लूट रहे है। 'बकरीफ गरीब का प्रतीक है।

(2) **लडाई –**

सर्वेश्वर का दूसरा नाटक 'लडाई' पहले कहानी के रूप में लिखा गया था। हिंदी जगत में इस नाटक की बहुत चर्चा हुई थी। आकाशवाणी की विशेष माँग पर इसको रेडियो नाटक के रूप में तैयार किया गया था। सर्वेश्वर ने इसे और व्यापक बनने के लिए नाट्य रूप में परिवर्तित किया। इस नाटक में उन्होंने जन समाज के चारो ओर व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाप छेडी गई लडाई को आधार बनाया है। नायक सत्यव्रत जिस प्रकार से न तो कोई गलत कार्य करता है और न दूसरो को करने देता है, उसे राजनेता किस प्रकार निगळ जाते है इसका चित्रण किया है। इस यथार्थवादी नाटक में भ्रष्टाचार का नग्न रूप हमारे सामने उपस्थित होता है। लडाई नाटक की कथावस्तु छोटे-छोटे खंडो में विभक्त है। प्रारंभ में भूमिका दृश्य के अंतर्गत यह घोषणा की जाती है कि देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद लडाई खत्म नही हुई है बल्कि आलस्य, जहालत, बेमानी, गरिबी, सामन्ती स्वभाव, भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद आदि से लडाई अभी जरी राखनी होगी।

अपने अन्य नाटकों की तरह सर्वेश्वर ने लडाई नाटक में भी ध्वनि और संगीत योजना पर विशेष बळ दिया है। कवि हृदय सर्वेश्वर के नाटको में प्रसाद की तरह गीतो की अधिकता है और उनके गीत संगीत से संश्लिष्ट भी है। नेपथ्य में लाउडस्पीकर पर भाषण की आवाज पुलिस की सिटियो की आवाज और स्वामी महेश्वरानंद के परलोक में 'स्वाहा स्वाहा' की आवाज नाट्य प्रभाव के उत्पन्न होने में विशेष सहायक है। दृश्य के अंत में गायक की योजना से नाटक का कथ्य अगले दृश्य से जुडणे में विशेष सहायक सिद्ध हुआ है।

(3) **अब गरीबी हटाव**

सर्वेश्वर का तीसरा नाटक 'अब गरीबी हटाव' का प्रकाशन 1981 ई.में हुआ। इस नाटक की कथावस्तु देश में व्याप्त गरीबी की समस्या पर आधारित है। सर्वेश्वर गरीबी को अनादिकाल के पारंपरिक रूप से ही स्वीकार करते है और यह मानते है कि गरीबी को कभी शासन नही हटा सका बल्कि गरीबी के खिलाफ सदैव गरीब को ही लडना पडा है। आज भी गरीब को उबरने के लिए स्वयं कमर कसना होगा। इस नाटक की भूमिका में सर्वेश्वर ने इसे व्यापक दृष्टिकोण से देखते हुए लिखा है 'अब गरीबी हटाओ' कोई नारा नही है, न यह शीर्षक किसी नारे से जुडा हुआ है। इसका संदर्भ एक व्यापक मानवीय नियति है और उसी संदर्भ में इसे ग्रहण किया जाना चहिए। यह नाटक व्यवस्था विरोध का नाटक नही है, जन समर्थन का नाटक है। उस जन

के समर्थन का है जो सदियों से आज तक एक व्यापक अपमान और शोषण का शिकार बना हुआ है। यह नाटक उसकी आकांक्षाओं और घुटन को, उसकी यातना और उसके संघर्ष को उस चट्टान के नीचे दिखाने की कोशिश करता है जो हार बार व्यवस्था की सुरक्षा के नाम पर उसके ऊपर राख दी जाती है। उस चट्टान के नीचे से कैसे मानवीय संकल्प का बिरवा तिरछा होकर जीवन की रोशनी की खोज के लिए निकलता रहा है, यह इसमे दिखाने का प्रयत्न किया गया है। बास इतने हि अर्थ में वह अस्तित्व की रक्षा के सवाल से जुडा है। उस अर्थ में नहीं, जिस अर्थ में वह किसी महत्वाकांक्षा से जुडने का सवाल बनता है।

सर्वेश्वर के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि वे इस नाटक को गाँव तक पहुँचाना चाहते थे। साहित्य का सामाजिकीकरण का यह उद्देश्य निश्चय ही उन्हें लोकधर्मी बना सका है इसमे विवाद की गुंजाइश हो ही नही सकती। नाटक का प्रारंभ हि नट- नटी के संवाद से होता है और नट पाठकों को यह बोध कराता है कि जीवन के नाटक में नेता, विदूषक और सूत्रधार बंकर सारे देश में डंडे का घोडा चला रहे है, जिसके कारण देश में गति नही आ पा राही है। नाटक मंडली में नेता ही सूत्रधार है और उसके सांस्कृतिक महोत्सव का उदघाटन मुख्यमंत्री करते है। 'सत्यमंडली' गरीबी हटाओ नाटक का मंचन करती है। इसके माध्यम से वह स्पष्ट करती है कि आज जो लोकतंत्र में हो रहा है वही कुछ वर्ष पूर्व राजतंत्र में भी हो रहा था। इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए नेतारूपी सूत्रधार आकर नाटक बंद करा देता है। नट यह स्पष्ट करता है कि राजतंत्र और लोकतंत्र गरीबी नही हटा सकते अब तो गरीब ही मिलकर अपनी गरीबी दूर कर सकते है। सर्वेश्वर नाटक को समाप्त करते हुए लिखते है 'यह नाटक आगे तभी हो सकता है, जब आप में इतनी ताकत आ जाए कि आप हम मिलकर, इनकी ताकत का मुकाबला कर सके, नाटक आगे चलवा सके। अंत में समवेत गान

''न अब ढोंग हमसे ये बरदास्त होगा
हम अपनी भुजाएँ उठाने चले है।
गरीबी तमाशा नही अब बनेगी
इस नाटक पे परदा गिराने चले है।

'अब गरीबी हटाओ' नाटक सात दृश्यों में विभक्त है। हर दृश्य नट-नटी के संवाद से शुरू होता है जिसके माध्यम से वस्तु का परिवेश दर्शको के सामने स्पष्ट कर दिया जाता है। वस्तु तीन पक्षों से संबदध है गाँव की गरीबी, लोकतंत्र की मानसिकता और राजतंत्र की वृत्ति। नाटक के अंत में सर्वेश्वर गरीबों को उत्प्रेरित करने के प्रयत्न में सफल लगते है। इस नाटक में औरत की चीख और 'नही नही' की आवाजें सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश उत्पन्न करती है। इस नाटक के कव्वाली और आल्हाह गीत में अपूर्व संगीत योजना है।

(4) **हवालात**

इस नाटक की व्यवस्था की भ्रष्ट मनोवृत्ति का चित्रण है। नाटक में चार पात्र है तीन लडके और एक सिपाही। सिपाही व्यवस्था का प्रतिक, लडके भूख, गरीबी और बेकारी के प्रतीक है। व्यवस्था का सिपाही युवा पीढी के लडको को निरर्थक घूमा रहा है। सिपाही स्वार्थी है। लडके चाहते है कि सिपाही उन्हें पक्डकर

बंदी बनाए ताकि जाडे की रात कट जाए। सिपाही भ्रष्ट मनोवृत्ति का है, जो लडको से सबूत माँगता है। लडके सिपाही के जेब में रहने वाला पर्स, उंगली में पहनी अंगूठी तथा बम का सबूत देते है। लेखक नकाबपोश शासन का पर्दाफाश करना चाहता है। सिपाही और लडके दोनो ही कुचले हुए है   कोई सिपाही का गला घोट रहा है तो कोई लडको का। लडको से रिश्वत नही मिलती अत: उन्हें हवालात में बंद नही (5)

हिसाब–किताब –

बाल कल्याण केंद्रों में बच्चो पर होनेवाले अत्याचार, बच्चोंकी विवशता, पूँजीपातियों का शोषण, सरकारी पैसा बटोरना आदि है। पूँजीपति के रंग में रंगी नौकरशाही का प्रतीक माना जाता है। नोकर बुद्धिजीवि का प्रतीक है वह मनोरंजन के बदले बच्चों को हिसाब लिखाता है। नाटक के पात्र पूँजीवादी, सत्ताधारी से दबे हुए है। समाज कल्याण संस्थाओं का पर्दाफाश किया है। यही नाटक का उद्देश्य है।

(6) **मर गया ले जाओ**

यह नुक्कड नाटक है। यह नाटक बोली में लिखा है। एक औरत की लाचारी में उसके पति के भरने की व्यथा का बिंब है। गरीब आदमी के लिए मरना तो जिंदा रहने से भी अधिक महंगा है। विवश औरत प्रधानमंत्री को व्यथा सुनाना चाहती है पर कौन सुनता है। यह पूरा नुक्कड नाटक गरीबी की 'हाय .....हाय' पर केंद्रित है।

(7) **होरी धूम मच्यो री**

इस नृत्य नाटिका में कृष्ण, मनसुखा, राधा, ललित तथा अन्य गोप–गोपिया है। नाटिका का आरंभ उल्लासमय मादक संगीत से होता है। रीतिकालीन कवियो के कवित्त सवैया का रंग नृत्य नाटिका में उमडता है और राधा– कृष्ण की रंग लीला का प्रगाढ संसार पाठकों के चित्त में आनंद राग का संचार करता हैं। पूरी नाटिका में गीत–गायन का अद्भुत थिरकता लोक है। सर्वेश्वर ने हिंदी में नृत्य नाटिका को नए रूप में सँवारा है और इस परंपरा को आगे बढाने का संकेत भी दिया है।

नाट्य परंपरा से थोडा हटकर सर्वेश्वर ने एकांकी और बाल नाटको की भी रचना की है। उनके दो एकांकी 'कल भात आयेगा' और 'हवालात' तथा चार बाल नाटको भौ भौ, खौ खौ, लाख की नाक, हाथी की पौ, अनाप शनाप की रचनाएँ यथार्थवादी मनोवृत्ति को प्रमाणित करनेवाली रचनाएँ है। इन रचनाओ में सर्वेश्वर का बहुआयामी व्यक्तित्त्व सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश तो प्रकट करता ही है, लोकतंत्र और राजतंत्र की उन व्यवस्थाओ पर भी चोट करता है। जहाँ मानवीय अस्मिता अन्याय और शोषण का शिकार हुई है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1) सर्वेश्वर का जन्म ....में हुआ।

अ) 15 सितम्बर 1927   ब) 15 सितम्बर 1928

क) 15 सितम्बर 1930   ड) 14 सितम्बर 1927

2) सर्वेश्वर मूल रूप से ....थे।

अ) नाटककार ब) कवि क) कहानीकार ड) उपन्यासकार

3) सर्वेश्वर के पिता का नाम ....था।

अ) रामेश्वर ब) परमेश्वर क) विश्वेश्वर ड) ईश्वर

4) सर्वेश्वर के पत्नी का नाम ....था।

अ) शामला ब) कमला क) निर्मला ड) विमला

5) सर्वेश्वर का ....जीवन से लगाव था।

अ) ग्राम्य ब) शहरी क) नागरी ड) विलायती

6) बचपन से ही सर्वेश्वर ने ....बनना सीख लिया था।

अ) निर्भर ब) आत्मनिर्भर क) अमीर ड) साधारण

7) सर्वेश्वर का निधन ....में हुआ।

अ) 23 सितम्बर 1983 ब) 23 सितम्बर 1985

क) 23 सितम्बर 1980 ड) 23 सितम्बर 1988

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. सृजन – निर्माण
2. कालजयी – सदैव प्रासंगिक
3. लोकतंत्र – जनता तंत्र (शासन)
4. राजतंत्र – राजा का शासन
5. जहालत – अशिक्षा

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

(1) 15 सितम्बर 1927 (2) कवि (3) विश्वेश्वर (4) विमला (5) ग्राम्य

(6) आत्मनिर्भर (7) 23 सितम्बर 1983

1.7 सारांश

सर्वेश्वरजी का बचपन साधारण परिवार में संघर्ष और विपत्तियों के बीच बीता। पिताजी के विरोध के बावजूद भी वे साहित्य साधना में मग्न रहे। माता– पिता की मृत्यु के बाद अनेक कठिनाइयों का उन्हें सामना

करना पडा। ऐसी अवस्था में भी वे साहित्य सृजन में जुडे रहे। शिक्षा के दौरान अपने बलबुते पर खडे रहे और आर्थिक दृष्टि से सक्षम बने।

सर्वेश्वरजी के व्यक्तित्त्व के अनेक पहलू उजागर होते है। अपने जीवन में उन्होने कई समस्याओ का सामना किया। एक ओर आत्मविश्वास, दृढता, स्पष्टता, ओज, जोश, उत्साह, प्रतिभा संपन्नता आदि गुणों के कारण हिंदी साहित्य जगत में उन्होने अपना अस्तित्व सिद्ध किया है। तो दूसरी तरफ समाज के प्रति अपनी कर्तव्य भावना को समझकर समाज सुधार का कार्य किया है।

अत: सर्वेश्वरजी एक नवरुमानी कवि है। उन्हें असाधारण प्रतिभा के धनी साहित्यकार माना जाता है। जीवन की निरर्थकता, खोखलापन, समाज के प्रति अविश्वास आदि उनकी कविताओं का स्वर रहा है। अत एव साहित्य की प्रत्येक विधा में सहयोग देने के कारण सर्वेश्वरजी को प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों की पंक्तियों में बिठाया जाता है।

1.8 स्वाध्याय

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जीवन परिचय लिखिए।
2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का व्यक्तित्व स्पष्ट कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का कृतित्व स्पष्ट कीजिए।
2. नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना परिचय दीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य –

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के समान मराठी के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नाटककार की जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. सर्वेश्वर के नाटकों की तरह भ्रष्टाचार पर आवाज उठाने वाले मराठी नाटक देखिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – संपूर्ण गद्य रचनाए

खंड 1 , 2, 3 , 4

❑❑❑

इकाई 2
‘लड़ाई’ – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

2.3.1 ‘लड़ाई’ नाटक की कथावस्तु

2.3.2 ‘लड़ाई’ नाटक का पात्र और चरित्र-चित्रण

2.3.3 ‘लड़ाई’ नाटक के संवाद

2.3.4 ‘लड़ाई’ नाटक का देश-काल वातावरण

2.3.5 ‘लड़ाई’ नाटक में अभिनेयता

2.3.6 ‘लड़ाई’ नाटक की भाषा-शैली

2.3.7 ‘लड़ाई’ नाटक का उद्देश्य

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढने पर आप :

1) ‘लड़ाई’ नाटक को पढने के बाद आजादी के बाद की सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में सत्यव्रत, निर्भिकता और सत्यान्वेषी व्यक्तित्त्व मूल्यों से परिचित होंगे।

2) नाटक की कथावस्तु की सामान्य जानकारी आपको मिलेगी।

3) नाटक के पात्र प्रयोजन एवं संवाद योजना से आप अवगत हो जाएंगे।

4) नाटक का वातावरण, नाटक की अभिनेयता तथा नाटक की भाषा आदि से परिचित हो जाएंगे।

2.2 प्रस्तावना:

हिंदी के प्रयोगशील समकालीन नाटककारों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का अपना एक विशिष्ट स्थान है। युगीन समस्याओं और स्थितियों के प्रति वे बड़े सजग है। वे जितने सफल नाटककार है उतने ही सफल कवि भी है। हिंदी नाट्य साहित्य में जो जड़ता आ गई उसे सर्व प्रथम मोहन राकेश ने तोड़ा और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने उसी परंपरा को आगे बढाया। उन्होंने अपने विशिष्ट व्यक्तित्त्व से न केवल नाट्य जगत में हलचल पैदा की बल्कि लोक-नाट्य परंपरा को भी प्राणवान बनाने का प्रयास किया।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'लड़ाई' यह नाटक सन् 1979 ई. में प्रकाशित हुआ है। यह नाटक पहले कहानी के रूप में लिखा गया था। बाद में यह रेडियो नाटक और रंगमंच के नाटक के रूप में बहुचर्चित हुआ। कथावस्तु समसामायिकता पर आधारित है। इस नाटक की कथावस्तु 'बकरी' नाटक से मिलती-जुलती है। स्वतंत्रता के बाद विभाजन, संघर्ष में विभाजित हुई ताकत और राजनीति से खड़ी हुई प्राणहीन 'लड़ाई' का चित्रण किया गया है। 'लड़ाई' यह व्यंग्यप्रधान नाटक है। उदासीनता, जहालता, बदनियती, धर्मांधता, क्षेत्रीयता, जातिवाद, हिंसा, आगजनी, दलितों, आदिवासियों के शोषण आस्था एवं विश्वास का टूटना एवं धनलोलूपता के प्रति लड़ाई है।

आजादी के उपरांत जो परिवर्तन हुआ है उससे हमारा सामर्थ्य और ताकत का ऱ्हास ही हुआ है। आज़ादी के अमृत काल में भी लड़ाई जारी है। पर अब हम सब अपने स्वार्थों को ध्यान में रखकर मोर्चे बना रहे हैं। लेकिन सामूहिक 'लड़ाई' की बारी आती है तो हमारे स्वार्थ उभरकर आते हैं और 'लड़ाई' की ताकत ही क्षीण हो जाती है। शक्ति टूटकर बिखरती जा रही है। इस बिखराव के मूल मे हमारा राजनीतिक और सामाजिक वातावरण है। इस लड़ाई को कमजोर बनानेवाले अनेक दल भी हैं। यह स्थिति हमारे देश के लिए और वैचारिक स्तर पर व्यक्ति के लिए भी घातक है। हमने चाँद के दक्षिण ध्रूव को तो छू लिया लेकिन मानसिक गुलामी, जड़ीय परंपरा, धर्मांधता, अंधभक्ति, उग्र राष्ट्रवाद, द्वेष, घृणा, सांप्रदायिकता से आज भी हमारी लड़ाई जारी है। सर्वेश्वर जी ने इन्हीं स्थितियों का चित्रण लड़ाई में किया है। नाटक का नायक सामान्य व्यक्ति सत्यव्रत है, जो सत्य के मार्ग पर चलकर भ्रष्ट स्थितियों को सुधारने का प्रयास करता है। महात्मा गांधी जी ने कहा था, 'सत्य ही ईश्वर है'। लेकिन सत्य कहाँ है? ईश्वर कहाँ है? सत्यव्रत भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई छेड़ देता है। वह खुद कोई गलत करता ही नहीं और न ही दूसरों को करने देता है। पर भ्रष्ट राजनीति अंतत: उसे किस प्रकार से पराजित करती है, इसी को आधार बनाकर नाटककार ने 'लड़ाई' का चित्रण किया है। हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार के यथार्थ नग्न रूप को 'लड़ाई' नाटक में चित्रित किया है।

2.3 विषय विवेचन:

2.3.1 'लड़ाई' नाटक की कथावस्तु:

आजादी के 75 वर्ष के बाद भी देश को हम भ्रष्टाचार से मुक्त नही कर सके हैं। हमने ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य में प्रगति की परंतु भ्रष्टाचार के खिलाफ हमारी आज भी 'लड़ाई' जारी है। 'लड़ाई' नाटक यथार्थवादी है। नाटक का प्रथम प्रस्तुतिकरण 'दिशांतर' के द्वारा सन 1970 को 'त्रिवेणी कला संगम' नई दिल्ली में खेला गया। इसका निर्देशन ओम शिवपुरी ने किया। इसमें चौदह दृश्य हैं और हर दृश्य में नायक सत्यव्रत एक नई समस्या का सामना करता दिखाई देता है। इसमें कुल पात्रों की संख्या सैंतालीस (47) हैं, जिसमें कुल पुरुष पात्र इकतालिस है और महिला-पात्र मात्र छः है।

'लड़ाई' नाटक दो दिन के घटनाओं को अंकित करता है। नाटक की शुरुआत भूमिका दृश्य से होती है, जिसमें उद्‌घोषक गत बत्तीस वर्षों (बल्कि अब कहना होगा 75 वर्ष) का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। देश में निर्माण उदासीनता, जहालता, गंदगी, बदनियति, बेईमानी से लड़ाई जारी है। आज़ादी के उपरांत भी हम मानसिक गुलामी, औपनिवेशिक संस्कार, सामंती स्वभाव, भाषावाद, जातिवाद, वंशवाद, धर्मांधता, क्षेत्रीयता से लड़ाई जारी है। इन सभी परिस्थितियों में हर व्यक्ति अकेला दिखाई देता है। आस्था, विश्वास, नैतिक मूल्यों का ऱ्हास होता हुआ दिखाई देता है। महात्मा गांधी जी ने जिस सत्य को ईश्वर कहा था, वह सत्य कहीं दिखाई नहीं देता। सत्ता के मदमस्त हाथी किसी की सुनने को तैयार नहीं है। ये समय के साथ अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए सांप्रदायिक दंगें करवाते हैं, लाखों की संपत्ति को जलाया जाता हैं। सूखे की चपेट के कारण आम जनता पेड़ की छाल खाकर भूख मिटाने को मजबूर हैं। केंद्र सरकार सत्ता के बलबूते राज्य सरकारे बरखास्त करती है। दलित, आदिवासियों को आज भी जिंदा जलाया जाता है। नक्सलवाद, आतंकवाद, बम-विस्फोट, विद्यार्थियों पर आँसू गैस छोड़ना, विश्वविद्यालय, स्कूल, कॉलेज में पुलिस का दाखिल होना इन सारे घटना क्रम पर हमारे संसद में मात्र हंगामा खड़ा किया जाता है। इसे भूमिका दृश्य में उद्‌घोषक के द्वारा हिंसा, हंगामा, झगड़े-फसाद, झूठ और फरेब, बेईमानी, धोखाधड़ी, मक्कारी पर प्रश्न निर्माण करता है।

नाटक के प्रारंभ में ही गायक अपने हाथ में इकतारा लेकर गाना गाता है-

''इसी परेबी दुनिया में है
एक सत्यव्रत का भी नाम।
जिसने सोचा, नहीं आज से
गलत करूँगा कोई काम।
खुद भी नहीं करूँगा, औरों
को न हालत करने दूँगा।
शुरू लड़ाई हुई अभी से,

हो, जो होना हो अंजाम।

सत्यव्रत जब सुबह का अखबार खोलकर बैठता है तो उसे बहुत सारे भ्रष्टाचार के समाचार पढने को मिलते हैं और वो अखबार को जला डालता है। इससे सत्यव्रत की पत्नी घबरा जाती है और कहती है- ''(घबराकर) यह क्या कर रहे हो? अखबार क्यों जला रहे हो? सत्यव्रत सत्य की लड़ाई लड़ना चाहता है, जो भी झूठ है, उसे समाज के सामने लाना चाहता है। वह अपने बच्चों को सत्य की राह पर चलना सिखाता है। सत्यव्रत यह बताना चाहता है कि घर, परिवार, समाज व्यवस्था, राजनीति हर जगह पर झूठ पल रहा हैं। उस झूठ के खिलाफ सत्यव्रत लड़ना चाहता है। सुबह जब वो मंझन करने के लिए दंतमंझन लेता है, तब उस शीशी पर लिखा होता हैं कि 'मसूड़ों की रक्षा करता है' सत्यव्रत सोचता है, मैं तो बरसों से इस्तेमाल करता हूँ, फिरी भी मेरे मसूड़े ढीले हो गए हैं। सत्यव्रत मंझन कंपनी पर जालसाजी का मुकदमा चलाकर केस करना चाहता है। सत्यव्रत डबल रोटी खाने बैठता है, तो वो उसे सूँघता है, उसमें भी उसे बदबू आती हैं, वो फेंक देता है। कहता है- ''अभी इस आदमी को दिखाता हूँ। उन्हें लेकर बेकरीवाले के पास जाता है।''(पृ.54) सत्यव्रत की इस सत्य की लड़ाई में उसके बीवी-बच्चे कोई साथ नहीं देता, वह अकेला ही इस लड़ाई में निकल पड़ता है। वह पत्नी से कहता है- ''तुम इस लड़ाई में मेरा साथ नहीं दोगी?

स्त्री : यह लड़ाई नहीं पागलपन है। मैं पागल नहीं हूँ।

सत्यव्रत : तो फिर तुम जाओ। मैं अकेला लडूँगा।'' (पृ. 51)

सत्यव्रत की पत्नी उसका साथ नहीं देती वह पागलों की तरह अकेला ही असत्य के विरूद्ध लढने के लिए निकल पड़ता है। आस-पड़ोस के लोग अपने राशनकार्ड में अधिक के आठ-दस नाम लिख लेते हैं। नतीजा यह होता है कि उन्हें ज्यादा राशन मिलने लगता है। सत्यव्रत इस घटना को चोरबाज़ारी कहता है। दृश्य के अंत में गायक आकर सारे दृश्य को हमारे आँखों के सामने गायन के माध्यम से खड़ा करता है। गायक कहता है-

''घर से निकल सड़क पर आया।
X X X X X
बीवी-बच्चे साथ न देंगे
हो जाएगा अकेला वह,
बेगानी दुनिया में खाएगा
रेल पर धक्कम-धक्का रेला वह। (पृ.54)

सत्यव्रत घर से निकलकर सत्य की लड़ाई लढने के लिए सबसे पहले डबलरोटी वाले से जो टकराता है। 'बेईमान' कहे जाने पर डबलरोटी वाला उससे झगड़ा करने लगता है। सत्यव्रत कहता है- ''..ओहो, तुम ही हो। अच्छा हुआ इसी वक्त मिल गए। तुम कल बासी रोटी दे आए मेरे घर यह कहकर कि ताजी है। बेईमानी की भी हद होती है।'' (पृ.54)

रोटीवाला : ''अगर आपको बासी लगती हैं तो मत लीजिए, मगर बेईमानबेईमान कहने की जरूरत नहीं है।'' (पृ. 54)

डबलरोटी वाले को बेईमान कहने पर सत्यव्रत को मार खानी पड़ी और एक बुजुर्ग के बीच पडने पर यह मामला खत्म हुआ। इस दृश्य में सत्यव्रत के सत्य कहने पर भी मार खानी पड़ती है। गलत को आज गलत नहीं कहा जा सकता जो व्यक्ति सच्चाई का पक्ष लेता है, उसकी आवाज दबा दी जाती है। इकतारा वाला आकर गायन करने लगता है–

''गलत को गलत कहने में भी दुनिया यहाँ रोकती है,
दुर्बल होकर सच्ची बात
कहो तो तुम्हें ठोकरती है।
आगे चले सत्यव्रत तो वह
जा पहुँचे स्कूल में,
सोचा, सभी बुराई की जड़
है शिक्षा के मूल में।'' (पृ. ५५)

दृश्य तीन में सत्यव्रत अपने बच्चे अतुल शर्मा के स्कूल जाता है, जो दूसरी क्लास में पढता है। वहाँ के स्कूल के प्रिंसिपल से लड़ाई करता है। तब प्रिंसिपल कहते हैं कि शिक्षा की बात आपकी समज में नहीं आएगी, सत्यव्रत अमीर और गरीब बच्चों में हो रहे अन्याय की बात प्रिंसिपल को समझाते हैं। सत्यव्रत कहता है कि– ''स्कूल में अपनी किताबें चोरी किए जाने की शिकायत मेरे बच्चे ने आपसे की। आपने उसको शिकायत सुनने से इनकार कर दिया। कहा कि अंग्रेजी में कहो तब तुम्हारी बात सुनी जाएगी। यह कौनसा तरीका है? शिकायत तो अपनी भाषा में आप सुन ही सकते थे।'' (पृ. ५५) सत्यव्रत देखता है, जिन बच्चों के माता–पिता की आय कम है। उनका भविष्य अंधकार में है। सत्यव्रत सोचता है कि बच्चों तथा समाज की बुनियादी बातों की ओर भी अनदेखी की जाती है। गायक आकर अपनी बात कहता हैं–

''बहरे कान सभी के
कोई नहीं सत्य सुनने वाला।
लेकिन बुनियादी बातों को
कैसे जा सकता टाला।'' (पृ.५७)

चौथे दृश्य में सत्यव्रत बस में सफर करता है और वह देखना चाहता है कि कंडक्टर एक आदमी से पैसे ले लेता है, लेकिन टिकट नहीं देता, सत्यव्रत इस बात का विरोध करता है–

सत्यव्रत : टिकट दो उसे।

कंडक्टर : टिकट दे दिया।

सत्यव्रत : नहीं दिया, मैं देख रहा था।

कंडक्टर : खाक देख रहे थे आप।

सत्यव्रत : तुमने टिकट नहीं दिया पैसे लिए हैं।

सत्यव्रत के विरोध करने पर भी बस में बैठे हुए लोग उसका साथ देने की अपेक्षा कंडक्टर का साथ देते हैं। पुलिस अफसर भी उसीको खरीखोटी सुनाता है। सरकारी कर्मचारियों के काम में बाधा डालना और उनसे लड़ना भी जुर्म है, यह आप जानते है।'' पृ. 58 पुलिस अफसर उल्टा सत्यव्रत को झूठा साबित करता है। इस प्रकार यहाँ भी सत्यव्रत सत्य होकर भी झूठा साबित होता है।

पाँचवें दृश्य में सत्यव्रत राशन के दफ्तर में जाता है, वहाँ कर्मचारी अपना काम नहीं करते। जो चपरासी है वह अपना काम छोड़कर कुर्सी पर ऊंघ रहा हैं, सत्यव्रत को चपरासी यह कहता है कि अंदर मिटिंग शुरू हैं, लेकिन अंदर कर्मचारी गप्पे लगा रहे होते हैं। चपरासी सत्यव्रत को कहता है– ''कायदे से बात कीजिए, इतनी जोर से बोलने की जरूरत नहीं है।'' (पृ. 59) इन दोनों की आवाज सुनकर कर्मचारी बाहर आते हैं, तो सत्यव्रत को शिकायत पेटी में शिकायत डालने को कहते हैं, तो सत्यव्रत बड़ी सूखी, कड़वी चोटदार और यथार्थवादी बात करता हुआ कहता है– ''शिकायत की पेटी वह ताबूत है जिसमें हर चीज जाकर दफनाने के लिए लाश में बदल जाती है। लेकिन मैं कुछ दफन नहीं होने दूँगा।'' पृ. 60 सरकारी दफ्तर में समस्या से निजात पाने का अच्छा तरीका शिकायत पेटी होती है, जिसे खोला तो जाता है लेकिन उसपर कोई कार्यवाही होती नहीं।

छठे दृश्य में सत्यव्रत अखबार के कार्यालय में पहुँचता है। अखबार सामान्य लोगों की आवाज होते हैं। उसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। जनता पर हो रहे अन्याय, अत्याचार के खिलाफ निष्पक्षता से सामने लाने की कोशिश करता है। इसी सोच को लेकर सत्यव्रत अखबार के संपादक के पास जाता है। अखबार का नाम 'सत्यपथ' था लेकिन अखबार का संपादक सत्यव्रत से कोई लेख लिखवाना चाहता है, इसलिए सत्यव्रत ही हर बात काटकर अपनी बात सत्यव्रत से कहता हैं और गलत फायदा उठाना चाहता है। संपादक महोदय उसे कहते हैं– ''स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की प्रगति पर तुम्हारा एक लेख चाहिए।'' पृ. 60 सत्यव्रत राशन दफ्तर के अधिकारियों के खिलाफ छापने को कहता है तब संपादक वो छापने से इनकार करता है। तब सत्यव्रत कहता है कि पत्र-पत्रिका बिक गई है। उसके जवाब में संपादक उत्तर देता है-''यहाँ बिका कौन नहीं है? आप भी बिके हैं, हम भी बिके हैं, सारा देश बिका है। बिकना ही टिकना है।'' पृ. 61

अत: सत्यव्रत संपादक से भी नाराज़ होकर निकल पड़ता है। वह आपने-आप को अकेला महसूस करने लगता है। गायक सत्यव्रत की हालत का चित्रण करते हुए कहता है–

''बहुत तिलमिलाकर निकला वह
लेकिन हुई न डगमग चाल,

लोकतंत्र के पहरेदारों का

देखा है बहुत कमाल।'' पृ. 62

सातवें दृश्य में सत्यव्रत 'सत्यपथ' अखबार के बाहर निकलकर अस्पताल के पास से गुजरता है तो एक व्यक्ति को चारपाई पर लेटा पाता है और उसके पास से सारी जानकारी प्राप्त करता है। सरकारी अस्पताल में गरीब लोगों के लिए बेड खाली न था और ना तो अंदर कोई उसके लिए साथ निकाल पाए, ऐसा व्यक्ति था। लेकिन एक मंत्री का फोन जैसे ही उस डॉक्टर को आता है, वो एक बिस्तर भी खाली करवा देता है और उसे भरती भी कर लेता है। सत्यव्रत डॉक्टर से बात-बहस करते हुए कहता है- ''पहले यह आदमी भरती होगा, मिनिस्टर का नहीं। मैं देखता हूँ आप उसे कैसे भरती करते हैं।'' पृ. 63 तभी बाहर उस ग्रामीण की मौत हो जाती है। ग्रामीण के साथ आए लोग उसे ले जाने की तैयारी करते हैं और डॉक्टर के शिकायत पर सत्यव्रत को पुलिस थाने में ले जाते हैं। पुलिस कहती है- ''बकवास बंद कर। X X X तेरी सत्यवादी की...याने चल। फसाद खड़ा करता है।'' पृ. 64 अस्पताल में हो रहे सामान्य व्यक्ति की पीड़ा को गायक अपने इकतारा के माध्यम से व्यक्त करते हुए कहता है-

''छोड़ा नहीं पुलिस ने उसको

बांध ले गई थाने पर,

गर्व उसे था इस गरीब की

पीड़ा को अपनाने पर।

हैं आराम सभी फरमाते

दीन-हीन की लाशों पर,

फिर भी आँच नहीं आती है

क्यों इनके विश्वासों पर? पृ. 64

दृश्य आठ में दरोगा सत्यव्रत को बिना कुछ जुर्म किए थाने ले आता हैं और उसे आगे कोई हंगामा न खड़ा करने के लिए समझाता है, तब सत्यव्रत कहता है कि मैं सिर्फ सत्य के लिए लड़ता हूँ, मैं कोई गलत काम नहीं करता। अगर सत्य के लिए लड़ना गलत हैं तो हाँ मैं गलत काम करता हूँ। ''सत्य के लिए बोलना यदि हंगामा खड़ा करना है तो मैं हज़ार बार करूँगा। तुम लोग झूठ का साथ देते हो।'' पृ. 15

सत्यव्रत को हंगामा न खड़े करने की शर्त पर छोड़ने को पुलिस तैयार होती है, परंतु सत्यव्रत पुलिस की तानाशाही पर खामोश नहीं रहता। परिणाम स्वरूप उसे इक्कीस-इक्कीस बेत लगाकर थाने से बहार फेंक दिया जाता है। वह बेहोश हो जाता हैं और वह कराहता है-

''मार पुलिस की तन पर खाई

मन पर पड़ी सड़क की मार,

जहाँ गरीबों, बदमाशों का

चलता है विचित्र व्यापार।'' पृ. 65

दृश्य आठ में गायक द्वारा जो गान प्रस्तुत किया है, उसके द्वारा सत्यव्रत की हालत हमारे सामने आ जाती है। सत्यव्रत पहले एक बदमाश के साथ लड़ाई में उतरता हैं, तो वहाँ भी उसे उस अफीम बेचने वाले भिखारी का धक्का खाना पड़ता है। और एक भिखारियों का समूह होता हैं वो भी उसे दुत्कार देते हैं, तब सत्यव्रत भिखारियों को मुफ्त की रोटी खाने से मना करता है, तब कोई उसकी बात नहीं मानता। चाटवाले को चाट ढकने कहता है तो वो कहता है कि ''आपको खाना हो तो बोलिए, कानून मत बताइए। आप जैसे खाने वाले बहुत देखे हैं। खाने वाला खाता हैं, सफाई गंदगी नहीं देखता। मिर्च-मसाला देखता है।'' पृ. 68 चाटवाले के अनुसार दुनिया का पेट बहुत बड़ा है, वह सब कुछ हजम कर जाते हैं। चाटवाले के माध्यम से नाटककार ने सामान्य व्यक्ति की वास्तविकता को रेखांकित किया है। सत्यव्रत का यहाँ सभी लोग विरोध करते दिखाई देते हैं।

दसवाँ दृश्य में शिक्षा से संबंधित बाते दिखाई देती है। सत्यव्रत कॉलेज के बाहर से निकलता है, तो उसे पता चलता है कि लड़के-लड़कियाँ पढाई करने से ज्यादा अन्य बातों में जैसे कि हड़ताल, घेराव, परीक्षा का बहिष्कार और बातों पर ध्यान देना ज्यादा योग्य समझते हैं। लड़का-4 कहता है- ''मैं तरकीब बनाऊं? हड़ताल करवा दे या परीक्षा का बहिष्कार। बस, यह साल तो निकल ही जाएगा किसी तरह।'' पृ. 69 सत्यव्रत छात्रों को समझाने की कोशिश करता है। परंतु उसे ही वहाँ से भगा दिया जाता है।

ग्यारहवाँ एवं बाहरवाँ दृश्य एक दूसरे के साथ ही चलता हैं। बुद्धिजीवी सत्यव्रत को बैठक में जाने को कहता है लेकिन सत्यव्रत उसके साथ जाने से इनकार कर देता है। सत्यव्रत बुद्धिजीवी के समारोह को ढोंगियों की बैठक कहता है। बुद्धिजीवी सांप्रदायिकता की बातें करता हैं और सत्यव्रत इन सब बातों को बेकार कहता है-''मैं पुस्तक नहीं केवल एक पँक्ति लिखना चाहता हूँ, ''तुम बुद्धिजीवी निकम्मे और घटिया लोग हो।'' पृ. 71 धर्म के नाम पर चंदा इकट्ठा करके पैसे हासिल करते हैं, यह गलत बात है। सत्यव्रत धर्म के नाम पर ढोंग करने वालों का बहुत विरोध भी करता हैं और कहता हैं- ''जो धर्म शंका की अनुमति नहीं देता वह धर्म नहीं है। दूसरों की खून-पसीने की कमाई पर मौज उड़ाना असली पाप है। वास्तव में पापी तुम हो।'' पृ. 75 सत्यव्रत बाबा महेश्वरानंद का विरोध करता है और परिणामस्वरूप सेवक उसे मार-मारकर फेंक देते हैं। आश्रमवासी उसे बहुत पीटते हैं।

दृश्य तेरह में एक व्यक्ति को छूरा मारता है, उस व्यक्ति को पुलिस पकड़ नहीं पाती और सत्यव्रत पर झूठा आरोप लगाया जाता है कि जिस व्यक्ति ने छूरेबाजी की हैं उस गिरोह से ही तुम व्यक्ति हो। सत्यव्रत सत्य की लड़ाई लड़ते-लड़ते अधमरा हो जाता है। वह बीमार पड़ता है। पुलिस उसके बारे में कहती है कि ''इसे थाने ले जाओ। उठा ले जाओ X X X यह साला गाँधीवादी वह नक्सली। उसे मरवा दिया, वह साला अपने-आप मर जाएगा।'' पृ.

इस तरह लड़ते-लड़ते एक ही दिन में सत्यव्रत अस्पताल में बिछाने आ जाता है। वो भी वही अस्पताल जिसका सुबह वह विरोध कर रहा था। डॉक्टर को जहाँ सुबह-सुबह खूनी रूप में देखा था, वहीं

उसे भरती कर जाता है। सत्यव्रत चीख-चीखकर अपनी बात कहता है लेकिन उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं होता।

हम चौदहवें दृश्य में दखेते हैं कि सत्यव्रत को अस्पताल में भरती करने के बाद उसकी पत्नी उसे मिलने के लिए आती है और तब चीख-चीखकर कहता है। यहाँ डॉक्टर जान बचाते नहीं मगर जान लेते हैं यह तो अस्पताल नहीं बूचड़खाना है। डॉक्टर सत्यव्रत को पागल मान लेते हैं और उसका दुनिया से नाता टूट जाता है। फिर भी सत्यव्रत अपनी सत्य की लड़ाई जीवन के अंत तक लड़ता है। सत्यव्रत अंत में कहता है कि, ''ठीक कहते हो डॉक्टर । अब ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे देखकर गुस्सा न आता हो। तुम लोगों में कहीं भी इंसानियत नहीं है। आदमी की कीमत तुम नहीं जानते।'' पृ. 70

अत: 'लड़ाई' नाटक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का एक ऐसा नाटक है जो हमें सोचने के लिए बाध्य करता है। वर्तमान समय में सत्य का कोई साथ नहीं दे रहा है। संपूर्ण चौदह दृश्यों में घटित घटनाओं को हम देखते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति भ्रष्टाचार, धर्मांधता, सांप्रदायिकता, जी हुजूरी, शिक्षा व्यवस्था में पनपता भ्रष्टाचार, मीडिया का बिक जाना आदि सामाजिक विसंगतियों से सत्यव्रत लढते-लढते अकेला रह जाता है। घर-परिवार का सहयोग भी उसे नहीं मिल पाता। अंत में इकतारावाला गाने लगता है-

''लड़ाई जारी है।
यह तो छाप तिलक लगाए
और जनेऊधारी है
यह जो जात-पात के पूजक है।'' पृ. 80

2.3.2 'लड़ाई' नाटक पात्र और चरित्र-चित्रण:

'लड़ाई' नाटक में चौदह दृश्य हैं। इसमें कुल पात्रों की संख्या सैंतालिस है, जिसमें पुरुष-पात्र इकतालिस हैं और महिला पात्र मात्र छ: है। उनके नाम इसप्रकार है- पुरुष पात्र है- अखबार बेचने वाले बच्चे, गायक, सत्यव्रत, बच्चा, रोटी वाला, आदमी-1, आदमी-2, आदमी-3, आदमी-4, बुजुर्ग, प्रिंसिपल, कंडक्टर, वह आदमी, यात्री-1, इंस्पेक्टर, यात्री-2, लोग, चपरासी, अधिकारी, संपादक, ग्रामीण-1, ग्रामीण-2, ग्रामीण-3, डॉक्टर, मिनिस्टर का आदमी, पुलिस, दरोगा, बदमाश, भिखारी-1, भिखारी-2, सेठ, नौकर, चाटवाला, लड़का-1, लड़का-2, लड़का-3, लड़का-4, गरीब आदमी, बुद्धिजीवी और महेश्वरानंद। महिला-पात्र में स्त्री, पत्नी, लड़की-1, लड़की-2, लड़की-3 है। प्रस्तुत नाटक के मुख्यपात्रों का परिचय इसप्रकार है-

1.3.2.1 सत्यव्रत:

विवेच्य नाटक के नायक का नाम सत्यवर्त शर्मा है। उसकी उम्र तीस-चालीस वर्ष है। सत्य उसके आचरण और प्रवृत्ति का प्रतीक है। वह सत्य के प्रति निष्ठावान है। वह सत्य की लड़ाई लड़ने का निश्चय

करता है, न कोई गलत काम करूँगा और न दूसरों को करने दूँगा। वह कहता है। अब मैं सत्य के लिए लडूँगा। न खुद कोई गलत काम करूँगा न दूसरे को करने दूँगा।'' पृ. 05 उसकी पत्नी उसे समझाने का प्रयास करती है, झूठ और बेईमानी तुम्हें पसंद नहीं थी, किंतु चुप रहते थे। किसी से लड़ते नहीं थे। परिवार और राजनीति में सब जगह असत्य का बोलबाला है। अव्यवस्थाओं के विरूद्ध अकेले लड़ने को तैयार है। सत्यव्रत जीवन की वास्तविकता को बताते समय कहता है-''झूठ खत्म नहीं होता, हारता है। आदमी हारता नहीं खत्म होता है। महापुरुषों की जीवनियाँ और इतिहास इसका गवाह है।'' पृ. 52

सत्यव्रत एक ईमानदार लेखक है। उसमें देश के प्रति अटूट विश्वास और निष्ठा है। उसके परिवार में पत्नी और एक छोटा बच्चा है। बच्चा दूसरी कक्षा में पढता है। सत्यव्रत बच्चे के स्कूल में हो रहे अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता है। कहता है हमें अपनी मात्र भाषा का अभिमान होना चाहिए- ''स्कूल में अपनी किताबें चोरी होने की शिकायत मेरे बच्चे ने आपसे की। आपने उसकी शिकायत सुनने से इनकार कर दिया। कहा कि अंग्रेजी में कहो तब तुम्हारी बात सुनी जाएगी। यह कौन-सा तरीका है? शिकायत तो अपनी भाषा में आप सुन ही सकते थे।'' पृ. 55 सत्यव्रत मानता है कि हमें अंग्रेजों से छूटकारा मिला परंतु अंग्रेजी की मानसिक गुलामी से हम आज भी आजाद नहीं हुए है। सामान्य लोगों के बच्चों को अच्छी शिक्षा से दूर रखा जाता है। सत्यव्रत सत्य का अनुसरण करते हुए जीवन-यापन करना चाहता है, किंतु चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार को देखकर उसमें विद्रोह की भावना जाग उठती है। दैनिक 'सत्यपथ' का संपादक 'भारतीय समाज की प्रगति' पर विशेषांक के लिए लेख माँगता है। 'सत्यपथ' अखबार से जुड़े होने पर भी शासन के विरूद्ध कुछ नहीं छपता है, इससे सत्यव्रत रूष्ट है। वह इस अखबार के लिए लेख लिखने के लिए तैयार नहीं होता है। सत्यव्रत कहता है- ''मैं नहीं लिखूँगा। इतना ही नहीं, आपकी पत्रिका बिकी हुई है, इसका अधिक से अधिक प्रचार करूँगा।'' पृ. ६१ वह आगे संपादक के साथ सत्य के लिए संघर्ष करते हुए कहता है कि तुम अपनी पत्रिका का नाम बदलकर 'असत्यपथ' रख दो। अखबारों की भ्रष्ट नीति से बहुत असंतुष्ट है। अखबार ढोंगियों और मक्कारों की वकालत करता है। वह अखबार में आग देना चाहता है। सत्यव्रत दृढ-निश्चियी है। वह सत्य से लड़ने का प्रारंभ घर से निकलते ही रोटी वाले के मिलने पर उसी से लड़ जाता है। बासी रोटी के कारण डबल रोटी वाले के साथ झगड़ा करने लगता है। बस में कंडक्टर से टिकट माँगने पर उससे भी बहस होती है। राशन के दफ्तर में भी राशन-कार्ड के लिए भी पैसे न देने पर वह वहाँ भी का पूर्ण नहीं होता है। शिकायत पेटी तो मात्र काम टालने का जरिया बना हुआ है। सत्यव्रत को यहाँ भी भ्रष्टाचार दिखाई देता है। ''शिकायत पेटी में शिकायत लिखकर कई कई बार डाल चुका हूँ। पर कुछ नहीं हुआ शिकायत पेटी धोखे की टट्टी है। परेब है। काम न करने का, टालने का बहाना है।'' सत्यव्रत किसी भी प्रलोभन में नहीं फँसता है। वह बाहर निकलता है। अस्पताल का दृश्य है। एक गरीब और बीमार व्यक्ति बाहर सर्दी में पड़ा हुआ है। सत्यव्रत डॉक्टर से उसे भरती करने के लिए कहता है। डॉक्टर जगह न होने के कारण उसे भरती नहीं करता है। उसी वक्त बाहर से फोने आने पर दूसरे व्यक्ति को भरती कर लेता है। इसका विरोध करने पर पुलिस उसे पीटती है-

सत्यव्रत : मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो। तुम सच्चाई का गला घोंट रहे हो।

पुलिस : बकवास बंद कर। (एक बेत मारता हैं)

सत्यव्रत : यह बकवास नहीं है, सत्य है

पुलिस : तेरी सत्यवादी की थाने चल। फसाद खड़ा करता है।

सत्यव्रत : वह आदमी मर गया इनकी

पुलिस : (बात काटकर खींचते हुए) अभी तू भी करेगा।'' पृ. 64

सत्यव्रत धर्मभीरू नहीं है। उसमें धर्मांधता नहीं है। वह स्वामी महेश्वरानंद के आश्रम में हवन के खर्च होने वाले पैसे को दूर प्रयोग बताता है। सामान्य जनता से पैसा इकट्ठा करके स्वामी जी खर्च कर रहे हैं। इससे सामान्य लोगों का कुछ भी भला होने वाला नहीं है। सत्यव्रत कहता है– ''जितने का घी और अन्न जला देंगे, उनमें स्कूल और अस्पताल खुल सकते हैं।'' पृ. वह देश के विकास को लेकर चिंतित है। जीवन के अंतिम क्षण तक वह झूठ के खिलाफ लड़ता है। वह अस्पताल में डॉक्टर से कहता है– ''जो कार्य गलत है, वह गलत है। मैं ऐसा भ्रष्ट जीवन नहीं जी सकता हूँ, मुझे सत्य चाहिए, जीवन नहीं। अस्पताल में सत्यव्रत की मृत्यु हो जाती है। यद्यपि सत्य की लड़ाई अकेले लड़ता हुआ भ्रष्ट व्यवस्था के द्वारा उसे मृत्यु दे दी जाती है। आज सत्य की जरूरत नहीं है।''

2.3.2.2 सत्यव्रत की पत्नी:

'लड़ाई' नाटक के प्रमुख पात्र सत्यव्रत पत्नी नाटक के प्रथम दृश्य और चौदवें दृश्य में दिखाई देती है। सुबह के समय सत्यव्रत अखबार जलाता है। तो सत्यव्रत की पत्नी उसे बुझाने के लिए सामने आती है। सत्यव्रत समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, सांप्रदायिकता, सत्य के लिए लड़ना चाहता है। परंतु उसकी पत्नी उसका साथ नहीं देती। उसका जीवन व्यवहारी रहा है। समाज में जो व्यवस्था बनी हुई है उसी के साथ हमें भी जीवन यापन करना चाहिए, ऐसा उसका मानना है। वो राशन कार्ड में अधिक के नाम जोड़ने को कहती है। वह अपने पति को पागलों जैसा व्यवहार करते हुए देखकर कहती है– 'हाय। यह तुम्हें क्या हो गया। तुम्हारा दिमाग कैसे खराब हो गया? मुसीबत में ही सही जिंदगी तो किसी तरह कट रही थी। अब कैसे कटेगी?' पृ. 51 जिस समय सत्यव्रत को थाने के बहार बुखार से पड़ा हुआ देखती है तो, उसे अस्पताल में भरती करने लेकर जाती है। सत्यव्रत की सत्यान्वेषी वृत्ति के कारण वह पूरे नाटक में परेशान रहती है।

2.3.2.3 प्रिंसिपल:

विवेच्य नाटक में शिक्षा व्यवस्था में पनप रहे भ्रष्टाचारी तंत्र के प्रतीक के रूप में प्रिंसिपल यह पात्र आता है। प्रिंसिपल बच्चों के माता-पिता की सालाना आय देखकर ही अपने स्कूलों में दाखिला देते हैं। अंग्रेजी भाषा को लेकर वह दृढ आग्रही होते हैं। अपने छात्रों के साथ मातृभाषा में बात करने की अपेक्षा अंग्रेजी भाषा में बात करना पसंद करता है। सत्यव्रत के बच्चे की पुस्तक गूम हो जाने पर जब बच्चा शिकायत देने जाता है तो, उसे अंग्रेजी में शिकायत करने को कहता है– ''हाँ, यह हमारा नियम है। शिक्षा

के लिए हमारा अनुशासन का एक ढंग है। यदि आपको हमारा अनुशासन पसंद नहीं है तो अपने बच्चे को स्कूल से हटवा सकते हैं।'' पृ. 56 वास्तविक रूप में स्कूलों का दाईत्त्व बनता है कि सारे बच्चों को समान शिक्षा दी जानी चाहिए।

2.3.2.4 कंडक्टर:

विवेच्य नाटक में कंडक्टर भ्रष्ट सरकारी अधिकारी का प्रतीक है। जो खुदाबक्ष मुसाफिरों को बिना टिकट या कम पैसे लेकर यात्रा करवाता है।

2.3.2.5 सम्पादक :

सम्पादक दैनिक अखबार 'सत्यपथ' के सम्पादक हैं, वो एक दैनिक चलाता है लेकिन बड़े लोगों के हाथों बिका हआ है। सत्यव्रत अपनी शिकायत लेकर उसके पास आता है तो, उसकी शिकायत लेने की अपेक्षा उसका ध्यान 'सत्यपथ' के विशेषांक के आलेख पर होता है। स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज के विकास पर एक अच्छा सा लेख लिखने की माँग करता है। संपादक मानता है कि आज़ादी के बाद देश की प्रगति हुई है परंतु सत्यव्रत उसे कहता है– ''हाँ, जरूर हुई है। लेकिन इतनी ही कि लोग खुद को और दूसरो को अधिक ठगना सीख गए हैं।'' पृ. 61 संपादक महोदय पत्रिका की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शासन के भ्रष्ट कारोभार को छिपाकर उसकी वाह–वाही में लग जाता है। दैनिक का नाम 'सत्यपथ' है, लेकिन संपादक असत्य का साथी है।

2.3.2.6 इन्स्पेक्टर :

इन्स्पेक्टर, कंडक्टर के गलत काम में उसका साथ देता है, सत्यव्रत सही कह रहा हैं या झूठ यह भी देखना वो जरूरी नहीं समझता। इन्स्पेक्टर भी कंडक्टर के भ्रष्टाचार में उनका साथ देता है।

2.3.2.7 डॉक्टर:

डॉक्टर का काम लोगों का जीवन बचाना है लेकिन नाटक में वर्णित डॉक्टर लोगों का जीवन बचाने के बजाए उनकी जान का व्यापार करता है। वो लोगों को अस्पताल में उनकी हैसियत और जान–पहचान के आधार पर भरती करके इलाज करवाता है।

2.3.2.8 बुद्धिजीवी:

विवेच्य नाटक में बुद्धिजीवि लोग धूर्तता और अवसरवादिता के प्रतीक है। वह सत्य को जानते–मानते हुए भी वे सत्य का पक्ष नहीं लेते और न ही झूठ के खिलाफ बोलते हैं। वे अपने ऊपर कोई भी आँच आने नहीं देते और भयवश उन्हें गलत का साथ देना पड़ता है। क्योंकि समाज में अपना स्थान टिकाएं रखना चाहते हैं।

2.3.2.9 महेश्वरानंद:

विवेच्य नाटक के महेश्वरानंद बाबा एक ढोंगी और पाखंडी बाबा है। जो धर्म के नाम पर पाखंड करनेवाले समूह का प्रतीक है । बाबा महेश्वरानंद मोह–माया से दूर रहने पर प्रवचन देता है और खुद ए.सी. गाड़ियों में घूमता हैं लेकिन सेवकों से मजदूरी करवाता है, सत्यव्रत उसके सामने अपनी बात रखना है तो वो उसको बहुत बुरी तरह मार–मारकर फिकवा देता है।

2.3.3 'लड़ाई' नाटक के संवाद:

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'लड़ाई' में संवाद रोचक एवं मर्मस्पर्शी है। उनमें रंगमंचीय संभावनाएं पूरी तरह निहित है। नाटक में छोटे–छोटे संवाद अधिक हैं। बड़े या लंबे संवाद बहुत कम है। छोटे–छोटे संवादों में भी कहीं–कहीं वर्णनात्मकता की झलक दिखाई देती है। नाटक छोटा हो या बड़ा संवादों की क्षमता से पाठक अभिभूत हो उठता है। सक्सेना जी ने हमारे सामने 'लड़ाई' नाटक के माध्यम से अति महत्त्वपूर्ण संवादों को रखा हैं और संवादों के माध्यम से हमारे समाने पूरी बात प्रस्तुत की है। नाटक के संवाद पात्रानुकूल है। 'लड़ाई' नाटक के संवाद छोटे–व्यंग्य, प्रश्नात्मक, काव्यात्मक, भावात्मक, पथात्मक और लाक्षणिक संवाद दिखाई देते हैं।

1. छोटे संवाद :

नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने लड़ाई नाटक में छोटे–छोटे संवादों के माध्यम से नाटक को और अधिक प्रभावकारी बनाया है। अस्पताल के चित्रण को देखा जा सक ता है–

ग्रामीण–1 : काहरे रोती हो, जो भाग्य में होगा वह तो भूगतना ही है।

सत्यव्रत : क्या बात है भाई?

ग्रामीण– 2 : यह बीमार है।

सत्यव्रत : तो अंदर अस्पताल में क्यों नहीं ले जाते?

ग्रामीण–3 : वहीं ले गए थे, दवा दे दी, भरती नहीं किया।

2. व्यंग्यात्मक संवाद :

''सत्यव्रत : दारोगा साहब, आप लोग सत्य की रक्षा नहीं करते।

दरोगा : सत्य की रक्षा करना हमारा काम नहीं है। हम शांति और व्यवस्था की रक्षा करते हैं।

सत्यव्रत : फिर सत्य की रक्षा कौन करेगा?

दरोगा : (व्यंग्य से) सत्य में बड़ी पावर है। वह अपनी रक्षा आप कर लेगा।''

3. प्रश्नात्मक संवाद :

'अरे शरिफ आदमी है आप। कहाँ उलझते हैं। इसतरह उलझियेगा तो कैसे चलेगा? कहाँ तक लडियेगा? किस-किस से लडियेगा।'

4. भावात्मक संवाद :

पत्नी : पहले कभी नहीं हुआ था। हाँ झूठ और बेईमानी के काम से पहले भी चिढते थे। खुद नहीं करते थे पर करनेवालो से लड़ते नहीं थे। गरीबी में गुजारा कर लेते थे। इधर लड़ने लगे थे। गाँधी, तिलक बड़े-बड़े लोगों की किताबें पढते थे, हर समय उन्हीं की बात करते थे। (गला रूंध जाता है) क्या पता था इसका नतीजा यह होगा।फ्फ्र

5. पद्यात्मक संवाद :

''लड़ाई जारी है
लड़ाई जारी है
यह तो छापा तिलक लगाए
और जनेऊधारी है
यह जो जातपात पूजक है
यह जो भ्रष्टाचारी है
यह जो खून चूसता रहता है
मजदूर-किसानों का
यह जो भूपती कहलाता है
जिसकी साहूकारी है।''

6. लाक्षणिक संवाद :

लड़का - 4 : तू क्या पुलिस कप्तान है?

लड़का - 3 : नहीं, पुलिस इसके बाप की है।

लड़का - 2 : खुद को अपने बाप का है नहीं।

लड़का - 1 : पागल है साला।

अत: कहा जा सकता है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने 'लड़ाई' नाटक में पात्रानुकूल, छोटे-छोटे, प्रश्नात्मक, भावात्मक संवादों का प्रयोग किया है। परिणामत: नाटक अधिक प्रभावकारी बना है।

2.3.4 'लड़ाई' नाटक का देश–काल तथा वातावरण:

नाटक में देश-काल तथा वातावरण का चित्रण महत्त्वपूर्ण होता है। इससे पात्रों के व्यक्तित्त्व में स्पष्टता और वास्तविकता आ जाती है। इसलिए प्रत्येक युग प्रत्येक देश तथा वातावरण का चित्रण उनकी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन और वेश-भूषा के अनुरूप होना चाहिए। परंतु इस चित्रण में रंगमंच की सुविधाओं और सीमित स्थान का ध्यान रखना आवश्यक है। नाटक की कथावस्तु जिस देश और काल से संबंधित होगी उसी के अनुरूप सारा वातावरण होगा, यह तो एक सामान्य तत्त्व है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी के 'लड़ाई' नाटक में उद्घोषक देश की वास्तविक परिस्थितियों को रेखांकित करता है कि आज़ादी के बत्तीस साल बाद भी आज जीवन के हर क्षेत्र में लड़ाई जारी है। उद्घोषक कहता है- ''बत्तीस सालआज़ादी के बत्तीस साल लड़ाई, उदासीनता से लड़ाई, जहालता से लड़ाई, गंदगी, बदनीयती, x x x । भाषावाद से लड़ाई, जातिवाद से लड़ाई, धर्मांधता से लड़ाई, क्षेत्रीयता से लड़ाई, लड़ाई खत्म नहीं हुई जारी है। और इस लड़ाई में हर आदमी अकेला, आस्था और विश्वास से टूटा हुआ। x x x । सत्य ही ईश्वर है, महात्मा गांधी ने कहा था, लेकिन कहाँ है सत्य? कहाँ है ईश्वर?फ्फ़ वर्तमान समय में यह परिस्थितियाँ अधिक प्रभावकारी हुई है।

शिक्षा के क्षेत्र में अराजकता, भाषा के प्रति द्वेष, घृणा का भाव है। इसे सत्यव्रत स्पष्ट करता है। शैक्षणिक वातावरण के बिगडे हुए रूप पर सत्यव्रत आवाज उठाता है। पढने वाले सभी बच्चों को एक ही नज़र से देखा नहीं जाता। पैसे वाले और राजनीतिक लोगों के बच्चों की ओर ही ध्यान दिया जाता है। जो सामान्य परिवार के बच्चे हैं उन्हें नीचे दिखाया जाता है। शिक्षा की ऐसी अवस्था पर हमें सत्यव्रत और प्रिंसिपल के संवादों के माध्यम से पता चलता है। बुद्धिजीवियों के द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होती परंतु किसी भी प्रकार की कृति दिखाई नहीं देती। इस बात को नाटककार ने बुद्धिजीवी एवं सत्यव्रत के संवादों के माध्यम से उकेरा है। सत्यव्रत और डबल रोटीवाला, सत्यव्रत एवं आम आदमी, संपादक, ग्रामीण, दरोगा, सिपाही, बदमाश, भिखारी, सेठजी, नौकरी एवं पुलिस के माध्यम से वर्तमान स्थितियों का चित्रण किया है। आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी हमारा देश भ्रष्टाचार, लाचारी, जी हुज़ूरी, हुकूमशाही, धांधली, सामान्य का होने वाला शोषण, अस्पताल में किए जानेवाले भेदभाव आदि का जीवंत वातावरण निर्माण हो जाता है।

2.3.5 'लड़ाई' नाटक में अभिनेयता :

अभिनय की दृष्टि से सर्वेश्वर जी के नाटक बड़े सशक्त है। उनके नाटकों में कलाकार की कसौटी अभिनय के आधार पर ही होती है। नाटककार सर्वेश्वर जी ने अपने नाट्य-लेखन में ही अभिनय पर विशेष ध्यान दिया है। सर्वेश्वर जी यह मानकर ही चलते हैं कि नाटक अभिनय के लिए ही होते हैं। वे अपनी नाट्य रचनाओं को इस देश के गाँव-गाँव में पहुँचाने के अभिलाषी थे। उनके लगभग सभी नाटक अभिनय की दृष्टि से सहज है और प्रभाव में व्यापक है। खुले और बंद मंच पर उनके नाटक सफलता से मंचित किए जा सकते हैं। 'लड़ाई' नाटक में सर्वेश्वर जी ने बड़ी सहज, सरल और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है।

संवाद छोटे-छोटे पर प्रभावी है। इनमें गीतों का प्रयोग होने से नाटकों की संप्रेषणीयता बढ जाती है। गीत भी लोकधुनों पर आधारित है जिसमें कहीं पर भी दुर्बोधता नहीं है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी के प्रायोगिक नाटकों की एक और विशेषता यह है कि इनका नाटक 'लड़ाई' सार्थक, प्रतीकात्मकता लिए हुए हैं। सक्सेना जी के द्वारा प्रयुक्त प्रतीक बहुआयामी होने के साथ-साथ बड़े सटीक है। वे पाठाकों और दर्शकों पर व्यापक प्रभाव डालने में समर्थ है। लड़ाई नाटक का नायक सत्यव्रत सबसे प्रमुख प्रतीक है। वर्तमान युग में सत्य को किस प्रकार हर क्षेत्र में करारी हार खानी पड़ती है। यही सत्यव्रत के द्वारा दर्शाया गया है। अभिनय की दृष्टि से 'लड़ाई' यह नाटक सफल और प्रभावकारी है।

2.3.6 'लड़ाई' नाटक की भाषा-शैली :

सर्वेश्वर जी भाषा के पारखी है। उनका नाट्-साहित्य सशक्त भाषा का उदाहरण है। नाटककार का मंचीय भाषा पर पूरा अधिकार है। नाट्य-साहित्य मंचन की दृष्टि से सफल है। उनकी भाषा सरल, सहज एवं व्यावहारिक है जो नाटक में रोचकता प्रदान करती है। भाषा में अभिनय की अद्भूत ताकत विद्यमान है। नाटक की स्थितियों के अनुरूप भाषा अपना रूप ग्रहण करती है। नाटक की भाषा में बिंबात्मक छटा उल्लेखनीय है। ''सरकार निरीह, राष्ट्रपति शासन लागू, नक्सवादियों और पुलिस में टकराव, बम-विस्फोट, गुप्त अड्डे गए, विद्यार्थियों पर आँसू गैस, पुलिस पर पथराव, विश्वविद्यालय में पुलिस, स्कूल-कॉलेज बंद, परीक्षाएं स्थगित, बसें जलाई गई, संसद और विधानसभा में हंगामा'' नाटककार ने वर्तमान कालीन परिस्थितियों का बिंब हमारे सामने निर्माण किया है।

सक्सेना जी की भाषा में ओज, माधुर्य एवं प्रसाद गुण की झलक दिखाई देती है। नाटक के अनुरूप गुणों को यदा कदा देखा जा सकता है। इसके लिए नाटककार को अलग से प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। सहज और सरल भाषा में उसके अंश स्वत: ही नज़र आने लगते हैं।

ओजगुण : सत्यव्रत कहता है- ''मैं यह चाय नहीं पीता। यह गलत काम है। यह चोर-बाज़ारी है। मैं चोरी से खरीदी कर खुद चोर बनना नहीं चाहता। मैं पड़ोसी की रिपोर्ट करूँगा। उसकी तहकीकात करवाऊंगा।''

माधुर्य गुण : सतयव्रत : धन्यवाद। खाली मेरा काम होने से क्या होगा, हज़ारों आदमी जब परेशान होते हैं। मैं तुम्हारे खास सिफारिश के लिए नहीं आया हूँ, शिकायत लेकर आया हूँ। अखबार लोकतंत्र के पहारेदार है। तुम्हें जगाना चाहता हूँ।फ्फ़ भाषा सरल, सहज एवं मार्मिक अभिव्यंजना करने में सक्षम हैं। बोलचाल की भाषा में लाक्षणिकता अद्भूत है। सहज एवं सामान्य भाषा की भंगिमा नाटक की शक्ति है। उनकी भाषा मंच को शक्ति देती है। सक्सेना जी व्यंग्यात्मकता प्रयोग की अपने नाटक में करते हैं- ''सत्यव्रत.शिकायत पेटी धोखे की टट्टी है। परेब है। काम न करने का, टालने का बहाना है। x x x । शिकायत की पेटी यहाँ ताबूत है जिसमें हर चीज जाकर दफनाने के लिए लाश में बदल जाती हैलेकिन मैं कुछ दफन नहीं होने दूँगा।'' सर्वेश्वर जी के नाटक में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग भी अधिक हुआ है, जिससे नाट्य-भाषा अधिक सशक्त एवं रोचक बन गई है। वे भाषा के अंग बनकर घुल-मिल गये हैं।

कहावतों और मुहावरों के प्रयोग का प्रयत्न अलग से नहीं किया गया है। इसका प्रयोग स्वाभाविक ही हो गया है-''मैं लोगों को इकट्ठा करूँगा/ अस्पताल की ईंट से ईंट बना दूँगा।''सक्सेना जी पात्रानुकूल भाषा के पक्षधर है। भाषा के स्वर में छोटे-छोटे पविर्तन कर पात्रों के अनुकूल बनाते हैं, जिससे पात्रों की मानसिकता स्पष्ट दिखाई है। नाटक जिस प्रकार यथार्थवादी है, उसी प्रकार उनकी भाषा में यथार्थता स्पष्ट झलकती है। जैसे- दरोगा : ''इसे थाने ले जाओ। उठा ले जाओ। उस साले नक्सली के लिखा। इसकी गवाही लिखकर, यदि होश में आ जाये, दस्तखत करवा लो, नहीं अंगूठा निशानी लगवा लो।''

सर्वेश्वर जी कहीं भी भाषा में जटिल अलंकारिकता एवं चमत्कार का प्रयोग नहीं करते हैं। जिस भाषा को जीवन में अपनाते हैं, उसी भाषा का प्रयोग मंच के लिए करते हैं। भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग नहीं है। उर्दू, अंग्रेजी एवं देशज शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग दिखाई देता है। उर्दू उनकी भाषा में अधिक है।

उर्दू के शब्द : हवालात, होश-हवास, शरीफ, सियासत

देशज शब्द : खर-पतवार, खियाल आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अंग्रेजी शब्द : लैंग्वेज, लेबिल, डिसिप्लीन, प्रिंसिपल आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

सर्वेश्वर जी ने अपने नाटक का बखूबी प्रयोग किया है। विषमताओं में समत्व की तलाश गीतों में ही संभव है। गीत कम शब्दों में अधिक-से-अधिक भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। 'लड़ाई' नाटक में न केवल मनोरंजन की दृष्टि से अपितु उद्देश्य की सम्प्रेषणीयता के लिए गीतों का नियोजन किया गया है। नाटक की संपूर्ण कथा-संवादों के साथ गीतों के द्वारा समांतर चलती है। पंद्रह गीतों की नौटंकी शैली में निहित किया गया है। गीतों में उद्देश्यमूलक प्रश्नात्मकता के द्वारा नाटककार सामाजिकों की आत्मीयता को विस्तार कर झकझोरने में सफल है। जैसे-

''सोचा लोकतंत्र है यह / जिसकी प्रहरी अखबार है।/

उस पर इस भोली जनता का/ जो भी हो ऐ एतबार है।''

अत: कहा जा सकता है कि भाषा एवं शैली की दृष्टि से ''लड़ाई'' नाटक सशक्त एवं प्रभावकारी है।

2.3.7 ''लड़ाई'' नाटक का उद्देश्य :

कोई भी साहित्य कृति बिना उद्देश्य की नहीं होती। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का नाटक 'लड़ाई' यह भी सोद्देश्यपूर्ण है। आज़ादी के बत्तीस साल बीत (अब कहना होगा 75 वर्ष) चुके हैं, लोगों की लड़ाई समाप्त हुई नहीं है। समाज में कहीं भी सुख और शांति नहीं है। प्रत्येक स्थान पर झूठ, छल, कपट, फरेब नज़र आ रहा है। हमारे चारों और व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेड़ी गई लड़ाई का नाटक है। 'लड़ाई' यथार्थवादी नाटक है। इस नाटक का नायक सामाजिक अव्यवस्था से तंग आकर व्यवस्था के प्रति आक्रोश जाग्रत करता है। नाटक का उद्देश्य समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से कोई भी व्यक्ति अकेले नहीं लड़ सकता है।

अकेली लड़ाई समाज और व्यवस्था को नहीं तोड़ती है, यद्यपि अकेला व्यक्ति स्वयं उसमें टूट जाता है। इसलिए भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ सभी को एकजुट होकर लड़ना होगा।

2.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न:

1) 'लड़ाई' नाटक के नाटकार .... है।

अ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना   ब) जयशंकर प्रसाद

क) लक्ष्मीनारायण लाल   ड) मोहन राकेश

2) 'लड़ाई' नाटक की प्रथम प्रस्तुति............ में हुई।

अ) 1969   ब) 1970   क) 1971   ड) 1972

3) 'लड़ाई' नाटक में पात्रों की संख्या .... है।

अ) 44   ब) 45   क) 46   ड) 47

4) 'लड़ाई' नाटक में स्त्री– पात्रों की संख्या .... है।

अ) 02   ब) 03   क) 05   ड) 06

5) गायक .... पर गाता है।

अ) इकतारा   ब) दूतारा   क) तीन तारा   ड) चार तारा

6) सत्यव्रत की उम्र लगभग .... है।

अ) तीस-चालीस   ब) तीस-बत्तीस   क) तीस-पैंतीस   ड) तीस-सैंतीस

7) झूठ खत्म नहीं होता हारता है किंतु आदमी हारता नहीं .... होता है।

अ) खत्म   ब) समापत्   क) अंत   ड) मृत

8) सत्यव्रत के बेटे का नाम............ है।

अ) अतुल शर्मा   ब) अजय शर्मा   क) अशोक शर्मा   ड) अमोल शर्मा

9) अखबार के पहरेदार .... होते हैं।

अ) लोकतंत्र   ब) राजतंत्र   क) नेता   ड) विपक्ष

10) 'लड़ाई' नाटक के दैनिक पत्र का नाम............ हैं।

अ) असत्यपथ   ब) सत्यपथ   क) गत्यपथ   ड) नागपथ

11) मिनिस्टर साहब का आदमी...........बेड पर है।

अ) नं. 15 | ब) नं. 16 | क) नं. 17 | ड) नं. 18

12) थाने में सत्यव्रत को ....बेत लगाए जाते हैं।

अ) 18 | ब) 19 | क) 20 | ड) 21

13) बुद्धिजीवी ....दंगों पर विचार करने आते हैं।

अ) राजनीतिक | ब) सांस्कृतिक | क) सांप्रदायिक | ड) शैक्षणिक

14) महेश्वरानंद ने ....दिनों का कीर्तन आयोजित किया है।

अ) 05 | ब) 06 | क) 07 | ड) 08

15) महेश्वरानंद द्वारा आयोजित कीर्तिन के लिए .... रुपयों की जरूरत हैं।

अ) 60 लाख | ब) 70 लाख | क) 80 लाख | ड) 90 लाख

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

1) बूचड़खाना – वधशाला, कसाई खाना, 2) बेहोश – मूर्छित, अचेत

3) सांप्रदायिक – दूसरे समुदाय के प्रति असहिष्णु 4) भूपति – राजा

5) कायर – डरपोक

2.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) 01	2) 1970	3) 47	4) 06
5) 01	6) तीस-चालीस	7) खत्म	8) अतुल शर्मा
9) लोकतंत्र	10) सत्यपथ	11) नं. 17	12) 21
13) सांप्रदायिक	14) 07	15) 60 लाख	

2.7 सारांश:

1) हिंदी के प्रयोगशील नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' यह नाटक सन् 1979 को प्रकाशित हुआ है। इस नाटक में भारत में आजादी के बाद हुए मोहभंग की व्यथा को दर्शाया गया है। स्वराज्य के सुराज्य बनाने के सपने के टूटने और भारत के सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन में आई विसंगतियों और भ्रष्ट आचरण का पर्दापाश किया गया है। यह नाटक कुल 14 दृश्यों का है जिसमें नायक सत्यव्रत प्रत्येक दृश्य में आजाद भारत के उक्त क्षेत्रों का सत्यान्वेषण करके उसके खिलाफ 'लड़ाई' करता है।

2) 'लड़ाई' नाटक में कुल सैंतालीस पात्रों की योजना की गई हैं जिसमें पुरुष पात्र इकतालिस हैं जबकि स्त्री-पात्रों की संख्या केवल छ: है। सत्यव्रत इस नाटक का नायक है। तो प्रिंसिपल, डॉक्टर, नेताजी, कंडक्टर, इंस्पेक्टर, संपादक, महेश्वरानंद आदि समाज के विभिन्न क्षेत्रों के भ्रष्ट व्यवस्था के प्रतिनिधि पात्र है। नाटक की कथावस्तु को प्रभावी करने के लिए कुछ गौणपात्रों की भी योजना की गई है। सत्यव्रत की पत्नी स्त्री पात्रों में मुख्य है जबकि बाकी महिलापात्र गौण है।

3) प्रस्तुत नाटक में आजादी के बाद के 32 वर्षों के सफर और विभिन्न क्षेत्रों की विसंगतियों एवं भ्रष्टाचारी व्यवस्था से जर्जर हुए भारतीय जीवन को व्यंग्यपूर्ण संवादों में साकार करने में लेखक सफल हुए हैं। साथ ही नाटक में छोटे संवाद, बड़े संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, प्रश्नात्मक संवाद, पद्यात्मक संवाद, लाक्षणिक संवाद दिखाई देते हैं।

4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का यह नाटक सन् 1979 अर्थात् आठवे दशक की रचना है। तब भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में कुशासन का बोलबाला हो गया था। आम जनता के सपने चूर-चूर हो गए थे। महात्मा गांधी ने जिस सत्य को ईश्वर मानकर सुराज्य का सपना देखा था। आजादी के बाद वह खंड-खंड में विभाजित हुआ। उसकी यथार्थ झलक नाटक के देश-काल-वातावरण में झलकती है।

५)'लड़ाई' नाटक अभिनेयता की दृष्टि से भी सरस बन पड़ा है। नाटक के कुल 14 दृश्यों में विभिन्न समस्याओं को अंकित करने के कारण अभिनेयता का प्रभाव बढा हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से भी यह सभी 14 दृश्य बेहद प्रभावकारी बने हैं। बीच-बीच में कोष्ठक में पात्रों की स्थितियों की संक्षिप्त विवरण देने से दृश्यात्मकता बढी है। अभिनय और रंगमंच की दृष्टि से बेहद सफल नाटक है।

6) लड़ाई' नाटक में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने बहुत ही सीधी, सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने नाटक के विषय, उद्देश्य और रंगमंचीयता को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया है। नाटक की भाषा में माधुर्य, ओज, भावकुता, आवेग, वैचारिकता, व्यंग्यात्मकता और नाट्यनुकूलता के गुण दिखाई देते हैं। साथ ही उन्होंने नाटक के कथ्य एवं उद्देश्य के सफलता के लिए पात्रानुकूल, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक भाषा एवं शैली का प्रयोग किया है।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1) सत्यव्रत का चरीत्र चित्रण किजिए ।

2) लड़ाई' नाटक के महिला पात्रों का परिचय दिजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न:

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक की कथावस्तु लिखिए।

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए।

3) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक के संवाद-योजना को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक की अभिनेयता की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक की भाषा एवं शैली को स्पष्ट कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'लड़ाई' नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करना।

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के बहुचर्चित नाटक 'बकरी' और 'अब गरीबी हटाव' को पढकर उसे रंगमंच पर प्रस्तुत करना।

3) आठवें दशक के सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के समकक्ष मराठी के नाटककार के साथ उनकी नाटक की तुलना करना।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, संपूर्ण गद्य-रचनाएं (खंड-2), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2004

2) सर्वेश्वर दलया सक्सेना के नाट्य-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन।

❑❑❑

इकाई 3

‘अब गरीबी हटाव’ – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

- 3.3.1 ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक की कथावस्तु।
- 3.3.2 ‘अब गरीबी हटाव’ पात्र और चरित्र–चित्रण एवं संवाद।
- 3.3.3 ‘अब गरीबी हटाव’ देश–काल वातावरण, अभिनेयता एवं भाषा शैली।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक की कथावस्तु से परिचित होंगे।
2) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक के पात्रों एवं उनकी चारित्रिक विशेषताओं को जानेंगे।
3) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक के संवादों की सरलता एवं विशेषताओं से परिचित होंगे।
4) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक के देश-काल वातावरण से परिचित होंगे।
5) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक की अभिनेयता से परिचित होंगे।
6) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक की भाषा एवं शैली की विशेषताओं से परिचित होंगे।

3.2 प्रस्तावना:

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाम सर्वपरिचित है। हिंदी रंगमंच के विकास में उनका योगदान सराहनीय रहा है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने हिंदी नाटक की पारंपरिक रीति को परिवर्तित करते हुए उसे आम लोगों के जीवन के साथ जोड़ने का उल्लेखनीय कार्य किया। नाटकों के कथ्य, संवाद, रंगमंचीयता, संगीत आदि को लेकर नए प्रयोग किए इसकारण उन्होंने हिंदी नाट्य-साहित्य में एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में पहचाना जाता है। प्रस्तुत इकाई में हम उनके 'अब गरीबी हटाव' इस नाटक का अध्ययन करनेवाले हैं। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'अब गरीबी हटाव' एक प्रसिद्ध नाटक है। इसका प्रकाशन सन् 1981 ई. में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। प्रस्तुत नाटक देश में व्याप्त गरीबी की समस्या को केंद्र में रखकर लिखा गया है। गरीबी और उससे निर्मित सामाजिक समस्याओं की दृष्टि से यह नाटक आज भी प्रासंगिक है। अत: उसका विस्तार से अध्ययन निम्नांकित मुद्दों पर किया जाएगा।

3.3 विषय विवरण :

3.3.1 'अब गरीबी हटाव' नाटक की कथावस्तु:

हिंदी के प्रयोगशील नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' यह नाटक का सन् 1981 में किताबघर, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस नाटक में भारत में व्याप्त 'गरीबी' की समस्या का केंद्र में रखा गया है। सर्वेश्वर जी ने भारत में 'गरीबी हटाव' न कोई नारा और न कोई शीर्षक माना है बल्कि इसे अधिकांश भारत के जनसमूह की नियति माना है। आजादी के बाद भी 'गरीबी' हटाने के लिए 'गरीब' को ही अपनी कमर कसनी पड़ती है। इसलिए इस नाटक को भारत के परिवेश में एक व्यापक मानवीय नियति के रूप में ग्रहण करने की बात नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना कहते हैं। यह नाटक किसी व्यवस्था के विरोध में नहीं बल्कि उस जन-चेतना के व्यापक अपमान और शोषण की यथार्थ अभिव्यक्ति है। यह नाटक अनादिकाल से गरीबी का अभिशाप भोग रहे जन-समूह की आकांक्षाओं के घुटन और उससे निर्मित यातना को साकार करता है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने केवल 11 दिनों में 'अब गरीबी हटाव' नाटक की रचना की थी। इस नाटक को उन्होंने कुल सात दृश्यों में विभाजित किया है और हर दृश्य नट-नटी के संवादों से शुरू होता है। नट और नटी के संवादों के बाद पाठक या दर्शक इस नाटक के परिवेश से जुड़ जाते हैं। यह नाटक दो कहानियों को साथ लेकर चलता है। इस नाटक की कथावस्तु मूलत: तीन मुद्दों से संबंधित है- 1. गाँव की गरीबी 2. लोकतंत्र की मानसिकता और 3. राजतंत्र की वृत्ति।

नाटक के प्रथम दृश्य की कथावस्तु नट-नटी के संवाद से शुरू होती है। नट 'सत्यमंडली' नाटक का नायक है। इसमें नटी, नट को कहती है- 'जल्दी चलो, जल्दी चलो। कहीं डंडे का घोड़ा भी चलता है? इस पर नट कहता है, क्यों नहीं चलता। युगों से चलता आ रहा हैं। सारे देश में डंडे का घोड़ा चल रहा हैं। बड़े

शान से चल रहा है।' दोनों का यह संवाद ही पूरे नाटक के विषय को प्रथम दृश्य में ही साकार करता है। नट और नटी 'डंडे का घोड़ा' यह नाटक करना चाहते थे लेकिन वहाँ एक नेताजी आते हैं। गाँव में मुख्यमंत्री आने वाले है और इसलिए गाँव में एक सांस्कृतिक महोत्सव रखा गया है। नेताजी को यहाँ अपना एक नाटक प्रस्तुत करना चाहते हैं और वे उस नाटक का नाम 'गरीबी हटाओ' रखते हैं। नेताजी इस नाटक के जरिए यह दिखाना चाहते हैं कि गाँव में खुशहाली है। गाँववालों को उनके रहते कोई समस्या या दिक्कत नहीं है। नेताजी अपने बल का प्रयोग करके नट-नटी को धमकाते हैं और अपनी धूर्त बातों में उलझा ही लेते हैं। आखिर नट-नटी नेता की बात मान लेते हैं या फिर वह बात मानने के लिए मजबूर होते हैं।

नाटक के दूसरे दृश्य में नट और नटी अब नेता जी की बात मानकर अपने नाटक का नाम बदल देते हैं। तब नेताजी कहते हैं कि हमें नाचना नहीं आता लेकिन नचाना बहुत खूब आता हैं। नट और नटी नाटक पेश करते हैं उसकी कहानी इसप्रकार है- 'गरीबन का पुरवा' नाम का गाँव है। इस गाँव में सत्तर प्रतिशत

आबादी हरिजन हैं और बचे हुए जाट-ब्राह्मण पंद्रह-पंद्रह प्रतिशत हैं। नेताजी को हरिजन समाज का समर्थन चाहिए क्यों कि वे आगामी दस सालों तक चुनाव लड़ना चाहते हैं और उसे जीतना भी चाहते हैं। गाँव के सरपंच का नाम शर्मा हैं और मुख्यमंत्री का नाम त्रिपाठी हैं। गाँव में एक ही कुआँ है और इसमें चार सौ घर के लिए पानी की व्यवस्था बहुत ही अपर्याप्त है। गाँव के तीस प्रतिशत आबादी होने वाले उच्च जाति के लोगों के घरों में एक-एक कुआँ है लेकिन सत्तर प्रतिशत आबादी के पानी की व्यवस्था के लिए बस एक कुआँ और एक छोटा-सा ताल है। कुछ लोग पास वाले गाँव से भी पानी ढोकर लाते हैं। लेकिन सरपंच, कृषिमंत्री और मुख्यमंत्री के बीच संवाद से लगता है जैसे गाँव में खुशहाली ही खुशहाली है, समस्या का कोई नामोनिशाण ही नहीं। फिर भी कृषिमंत्री केवल दिखावा करने के लिए गाँववालों को कुआँ बनाने की बात करने का मात्र आश्वासन देते हैं। मुख्यमंत्री जी 'गरीबन का पुरवा' गाँव की गरीबी हटाने के लिए उद्योगधंधों को बढावा देने और 'गरीबी हटाव मंत्रालय' बनाने का आश्वासन भी देते हैं। तीन सालों में उनकी सरकार गरीबी हटाओं कार्यक्रम पर छह करोड़ 92 लाख रुपए खर्च करने की बात स्पष्ट करते हैं। इतने में शोरगुल होता है और कुछ लोग बिफरी हुई, पत्थर जैसी, खुले-उलझे बालोवाली, तार-तार धोती पहने एक औरत को लेकर आते हैं। एक ग्रामीण मुख्यमंत्री को बताता है कि यह औरत अपने दोनो बच्चों के साथ कुएं में कूद रही थी लेकिन हम लोगों ने इसे पकड़ लिया। मुख्यमंत्री उसकी आत्महत्या का कारण पूछते हैं तो लोग बताते हैं कि इसका नाम गरीबन है। यह भूखमरी से तंग आकर जान देने गई थी। उसका पति गरीबा हत्या के जुर्म में जेल चला गया है और इसकारण गाँव में उसको कोई काम नहीं देता है। इसकारण उसपर भूखे मरने की नौबत आई है। ग्रामीण लोग मुख्यमंत्री को समझा रहे थे कि गरीबन के पति गरीबा को हत्या के झूठे मुकदमे में फँसाया गया है। तब दरोगा उस ग्रामीण पर पुलिसिया रौब छाड़कर उसे चूप कराता है और मुख्यमंत्री मामले को नजरअंदाज करके हम सब मिलकर गरीबी हटाकर रहेगा का संकल्प करके निकल जाते हैं। मुख्यमंत्री उसकी समस्या का हल निकालने के बजाए दरोगा को बुलाते हैं और दरोगा उसे आत्महत्या करने के जुर्म में गिरफ्तार करके जले में डाल देते हैं।

नाटक के तिसरे दृश्य में में राजा के सामने सिपाही एक औरत और एक आदमी को जंजीरों में बाँधकर सामने लाते हैं। राजा इशारा करते हुए सिपाही को दोनों को आजाद करने को कहते हैं। राजा उनसे कहते हैं कि, हमने सुना है तुम दोनों अच्छे कलाकार हो। अच्छा नाचते-गाते हो कुछ नाचो-गाओ इसलिए हमने तुम्हें बुलाया है। पुरुष गाता हैं और स्त्री नाचती है। राजा को उनका नाच-गाना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन असल में राजा वासनांध था और उसकी निगाह उस औरत पर थी। औरत का नाम गरीबन था लेकिन राजा उसका नाम गौरीबानु रख देता है। राजा मंत्री को आदेश देता है कि इस गरीबन के गाँव का नाम ङ्गगरीबन का पुरवाफ रख दो। वासनांध राजा उस औरत को अपने ही महल में रखता है। तब औरत उसे कहती है कि 'महाराज हम गरीब हैं। महल से हमार क्या काम? हमारी गरीबी हट जाए बस।' तब राजा उसे कहते हैं कि 'मेरे सामने खड़े होकर गरीबी का नाम लेती हैं। आज से तू गरीब नहीं हैं। इसतरह राजा उस औरत को अपनी दासी बनाकर रखना चाहता है। वह उसके आदमी को यहा तो भगना चाहता है या फिर बंधी बनाकर रखना चाहता है। आज लोकतंत्र में भी राजनेता बिल्कुल इस राजा की तरह साम, दाम, दंड, भेद की नीतियों से औरत की तरह जनता को अपना दास बनाकर रखना चाहते हैं।

नाटक के चौथे दृश्य में लोकतंत्र में पनप रही तानाशाही का वर्णन आया है। जिस तरह राजसत्ता में राजा गरीबन को गौरीबानु बनाकर भोगने के लिए अपनी दासी बनाता है उसी प्रकार लोकतंत्र में आत्महत्या के जुर्म गिरफ्तार जेल में बंद गरीबन को दरोगा और सरपंच भोगना चाहते हैं। गरीबन को भोगने के लिए वह उसे खाना खिलाते हैं, उसे प्यार से बाते करते हुए सहलाते हैं। गरीबन को बड़े लोगों की गाली-गलौच सुनने की आदत पड़ी थी। लेकिन अचानक सरपंच और दरोगा की प्यारी बातें सुनकर आश्चर्य होता है। दरोगा उसे बहला-फुसलाकर पाने की कोशिश करता है। दरोगा गरीबन की कमजोरी को अच्छी तरीके से जानता था कि उसके दो बच्चे ज्ञानु और सरस्वति हैं। ये दोनों बच्चे सरपंच की गाय चराते हैं, उनके घर का सारा काम करते हैं लेकिन उस औरत को यह बताया जाता है कि उसके बच्चों की बहुत अच्छे से परवरिश हो रही है। उन्हें स्कूल भेजा जाएगा और अच्छा खाना खिलाया जाएगा। दरोगा कहता है कि तुम्हारे बेटे को खूब पढा-लिखाकर सिपाही बनाया जाएगा और तुम्हारी लड़की को स्कूल में दाई बना देंगे। इसतरह औरत को झूठी तसल्ली देकर उसका यौन शोषण किया जाता है। औरत अपने बच्चों के लिए सरपंच और दरोगा के गंदी नियत का शिकार हो जाती है।

पाँचवे दृश्य में पुन: राजसत्ता का परिवेश साकार होता है। दासी बनी गौरीबानु अर्थात् गरीबन राजा के पास अपने गाँव, अपने घर वापस जाने की गुहार लगाती है। लेकिन वासनांध राजा गरीबन को तरह-तरह के लालच दिखाकर अपने वासना का शिकार बनाना चाहता है। वह उसके पति को सिपाही बनाने और उसके बूढे माता-पिता को गाँव में एक पक्का मकान बनाकर देने का लालच दिखाता है। गाँव के हर लोगों की दु:ख-तकलीफ को दूर करने का वचन देता है। पति को नौकरी, माता-पिता को पक्का मकान और गाँववालों के लिए एक कुआँ बनाने का लालच दिखाकर राजा गौरीबानू को नाचने के लिए मनाता है। औरत राजा की हर बात मानती है क्योंकी राजा भी उसकी हर बात मानने का झूठा वादा करता हैं। जब औरत राजा को अपना साथ देने का वादा माँगती है तो राजा भी झूठा वादा करके उसके साथ नाचने का नाटक करता है।

लोकतंत्र में गरीबन के साथ जो होता है बिलकुल राजसत्ता में भी गौरीबानू के साथ होता हैं। लोकतंत्र और राजतंत्र में कुछ खास अंतर नज़र नहीं आता। गौरीबानू विवश होकर राजा की हर बात मानने के लिए मजबूर होती है।

नाटक के छठे दृश्य में राजतंत्र में प्रजा के विद्रोह की घटना का वर्णन है। राजा गौरीबानू को अपने वासना का शिकार बना चुका था। वह अपने भोग-विलास के लिए उसके पति को आजाद करता है। उसे सिपाही बनाता है। जब गरीबन का होने वाला पति सैनिक बनकर बाहर आता है तो एक प्रहरी से उसकी बातचीत होती है। तब प्रहरी उसे बाताता है कि वह भी पहले राजद्रोह में कारागार में बद था। अब वह राजा का प्रहरी बन गया हैं। उस पहले प्रहरी के बाप ने राजा को लगान देने से इनकार किया था, इसलिए उसे यहाँ बंदी बनाकर रखा गया था लेकिन बात मानने पर उसे अब मुखिया बना लिया गया है। गौरीबानू का पति और वह पुराना प्रहरी दोनों एक-दूसरे को अपना दु:ख व्यक्त करते हैं और राजा को मार डालने की योजना बनाते हैं। दोनों राजा से त्रस्त प्रजा में चेतना जगाते हैं और लोगों में एक व्रिदोह फैल जाता है।

नाटक के सातवें और अंतिम दृश्य में नाटक पुन: वर्तमान लोकशासन के परिवेश में आता है। लोकतंत्र की अव्यवस्था के खिलाफ हर व्यक्ति के मन में विद्रोह जाग उठता है। इस दृश्य में गरीबा जेल से भाग जाता है। वह गाँव में आकर अपने लोगों से मिलता है तब उसे पता चलता हे कि उसकी पत्नी गरीबन के साथ दरोगा और सरपंच ने बलात्कार किया हैं और उसके दोनों बच्चे सरपंच के घर बंधुवाँ मजदूर बनकर रहे और बाद में उन्हें शहर में बेच दिया गया। यह सब सुनकर गरीबा अत्याधिक क्रोधित होकर उन दोनों को मार डालने की सोचता है। लेकिन ग्रामीण उसे समझाते हैं कि ऐसा करने से कुछ नहीं होगा नुकसान तो हमारी ही बिरादरी का होगा। मेरे दादाजी ने उनका विरोध किया था लेकिन आज उनके पोते भी शोषण की इसी परंपरा को आगे बढा रहे हैं। इसलिए हमें इकट्ठा होकर उनका वंश ही समाप्त करना होगा। ग्रामीण गरीबा को संगठन का महत्त्व समझाते हुए लोकतंत्र विरोधी ताकतों से मिलजुलकर लड़ने को कहता है। अंत में नट और नटी भी भ्रष्ट नेता का खुलकर विरोध करते हैं। नेताजी उन्हें यह दृश्य दिखाने से रोकते हैं लेकिन नट-नटी नेता की बात नहीं मानते। तब नेता जी पुलिस को बुलाने की धमकी देते हैं। तब नट-नटी कहते हैं कि पुलिस गरीब है, नेताजी कहते हैं सी.आर.पी. बुलाऊंगा, तब वे कहते हैं, यह भी गरीब हैं। 'फौज बुलाऊँगा', नटी कहती है, 'फौज भी गरीब हैं। तब सभी लोगों की चेतना जाग जाती है। जनता सही बातों को पहचान लेती हैं। अभिनय करनेवाले दर्शकों से बात करते हैं और नाटक समाप्त हो जाता है।

3.3.2 'अब गरीबी हटाव' पात्र और चरित्र-चित्रण एवं संवाद:

नाटक में पात्र और चरित्र-चित्रण एवं संवादों का बहुत बड़ा स्थान होता है। पात्र जहाँ नाटक के कथावस्तु के प्रवाह को आगे बढाते हैं तो इन्हीं पात्रों के संवाद से कहानी परत-दर-परत खुलती जाती है। इसकारण नाटक के चरित्र-चित्रण और उनके संवादों का अध्ययन करना जरूरी है।

✻ 'अब गरीबी हटाव' पात्र और चरित्र–चित्रण:

नाटक के पात्र और उनकी चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी से ही हम नाटक का गहराई से अध्ययन कर सकते हैं। 'अब गरीबी हटाव' नाटक का कथानक लोकशासन और राजशासन इन दो परिवेशों में साकार हुआ है। इसकारण दो परिवेशों के अनुसार नाटक के कुल १७ पात्र आए हैं। विवेच्य नाटक में नट, नटी, नेताजी, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच, दारोगा, ग्रामीण, गरीबन, गरीबा, सिपाही, राजा, आदमी, औरत (गरीबन उर्फ गौरी बानू), मंत्री, सेनापति, प्रहरी आदि पात्र शामिल हैं।

नाटक के कुछ मुख्य पात्र लोकशासन तो कुछ मुख्य पात्र राजशासन में आते हैं। लोकशासन में नट, नटी, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच, गरीबा, गरीबा की पत्नी (गरीबन), ग्रामीण, गरीबा के बच्चे, नेताजी, दारोगा आदि आते हैं। तो राजशासन में राजा, सिपाही, आदमी, औरत, प्रहरी, मंत्री आदि पात्र आए हैं। इन प्रमुख पात्रों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है–

✻ **लोकशासन में आए प्रमुख पात्रों का परिचय इसप्रकार हैं–**

✻ **नट :**

नट 'सत्यमंडली' नाटक का नायक है। नट लोकतंत्र में चल रही अव्यवस्था को भलिभाँति समझता है। वह नाटक के प्रारंभ में व्यंग्यपूर्ण तरीके से कहता है कि आज राजाओं और नेताओं का झूठ चल सकता हैं तो हमारा क्यों नहीं चल सकता। नट नायक होने के बावजूद विदूषकों की हरकतें करता है। क्योंकि उसे पता है कि आज जिन्हें हम अपना नेता समझते हैं वह असल में विदूषक बनकर रह गए हैं। वह पहले अपने नाटक का नाम 'डंडे का घोड़ा' रखना चाहता था, लेकिन बाद में नेताजी के धमकाने पर नाटक का नाम 'गरीबी हटाव' रखता है। नट नेताजी की बात मानना नहीं चाहता था लेकिन नेताजी उसे पुलिस की धमकी देकर बात मानने के लिए मजबूर करते हैं। नाटक के अंत में नट नेताजी के विरोध में खड़ा रहता है और उनके दमन तंत्र का विरोध भी करता है। एक नट की जिम्मेदारी होती है कि वह दर्शकों के सामने सच्चाई लाए। अंत में नट अपनी इस जिम्मेदारी को पूरा करता है। इसतरह नट के चरित्र में बुद्धिमानी, प्रसंगावधान, समयानुसार लचीलापन और अंत में दायित्वबोध की विशेषता दिखाई देती है।

✻ **नटी :**

प्रस्तुत नाटक की मुख्य स्त्री पात्र नटी में स्त्रीयोचित सभी गुण मौजूद है। वह नट को अच्छे कपड़े पहनने और अच्छा आचरण के लिए समझाती है। नट द्वारा विदूषकों जैसी हरकतों को देखकर वह उसे सजग करती है कि इससे दर्शक नाराजा हो जाएंगे। नेताजी जब नट–नटी पर दबाव बनाते हैं तब एक समय वह हिम्मत से उनका विरोध भी करती है। नेताजी उन्हें अपना 'गरीबी हटाव' नाटक खेलने के लिए कहते हैं तब वह विरोध करते हुए कहती है कि 'अगर ऐसा न हुआ तो नेताजी क्या कर लेगा? यहाँ पन नटी नट से ज्यादा साहसी और हिम्मतवाली नज़र आती है। अंत में नट–नटी दोनों मिलकर नेताजी का विरोध करते हैं।

लोगों के सामने नेताजी का पर्दापाश करते हैं और लोगों का सही प्रबोधन करते हैं। इसतरह नटी के चरित्र में स्त्री सुलभ गुण, साहसी, समझदार, सहयोगी, विद्रोही, जनप्रबोधक के गुण दिखाई देते हैं।

✻ मुख्यमंत्री :

विवेच्य नाटक का मुख्यमंत्री एक ऐसा जनप्रतिनिधि है जो केवल सत्ता का भूखा है। वह जिस गाँव के लोगों के कल्याण करने के लिए आया है, उसे उस गाँव का नाम तक पता नहीं है। इसका नाम त्रिपाठी है जो हरिजनों को सत्तर प्रतिशत आबादी का समर्थन पाने की स्वार्थी हेतु से उनके बस्ती में आया है। 'गरीबन का पूरवा' गाँव के लोगों को वह गरीबों के कल्याण के लिए किए कामों की झूठी जानकारी देता है। गरीबों के कल्याण के लिए उनकी सरकार ने 'गरीबी हटाव मंत्रालय' बनाने और गत तीन वर्षों में अरबों रुपए के विकासकार्य करने की बात करता है। गरीबन के पूरवा गाँव के विकास के लिए यहाँ उद्योग-धंधों को बढावा देने का आश्वासन देता है। वह गाँव में कुएं बनाकर पानी की समस्या हल करने की बात कहता है। इसतरह मुख्यमंत्री के चरित्र में स्वार्थी राजनेता, झूठे वायदे करने वाला, झूठी जानकारी देनवाला, हरिजनों के वोटों पर ध्यान रखनेवाले राजनेता के गुण दिखाई देते हैं।

✻ कृषिमंत्री :

विवेच्य नाटक में कृषिमंत्री का पात्र दूसरे दृश्य में बहुत कम समय के लिए आया है। कृषिमंत्री को अपना खुद का व्यक्तित्त्व नहीं है। वह सभी बातें मुख्यमंत्री त्रिपाठी से पूछकर बताता हैं। वह हरिजनों के लिए कुआँ खुदवाने को कहता हैं, लेकिन हरिजनों के पास इसके लिए जमीन न होने कारण वह वहाँ कुआँ खुदवाने में असमर्थता दिखाता है और उन्हें केवल आश्वासन देता है। हरिजन बस्ती में कृषिमंत्री पहली बार आया हैं। कृषिमंत्री केवल दूसरे दृश्य में दिखाई देता है। उसके चरित्र में स्वार्थी राजनेता, दूसरे पर निर्भर रहनेवाला, फैसले करने में अक्षम व्यक्ति के गुण दिखाई देते हैं।

✻ सरपंच :

विवेच्य नाटक में सरपंच का नाम शर्मा है। सरपंच एक बहुत ही घटिया किस्म का व्यक्ति है। वह 'गरीबन का पूरवा' गाँव का एक भ्रष्ट सरपंच है। वह हरिजन टोले पर केवल वोटों के लिए ध्यान देता है। क्योंकि इनकी आबादी 70 प्रतिशत है और इनके भरोसे पर वह अगले दस सालों तक चुनाव लडना और जीतना चाहता है। वह चुनाव जीतने के लिए एक व्यक्ति की हत्या करता है और इसके जुर्म में गाँव के गरीबा को फँसाता है। हरिजन जाति के लोग उसे पसंद नहीं करते। इसलिए वह हरिजनों की बस्ती में जान-बूझकर पानी की व्यवस्था नहीं करता। कृषिमंत्री को इसके लिए जमीन न होने की बात कहता है। गरीबा की पत्नी गरीबन जब भूखमरी से तंग आकर अपने बच्चों के साथ खुदखुशी करने जाती है तो कुछ लोग उसे बचाकर सांस्कृतिक कार्यक्रम में लाते हैं। तब सरपंच की वासनांध नज़र गरीबा की पत्नी पर पड़ती है। वह दरोगा से मिलकर उसे जेल में बद करवा देता है ताकि बाद में उसका यौन-शोषण कर सके। वह उसके दोनों बच्चों को बंधुआ मजदूर बनाकर कर घर के सारे काम करवाता है और कुछ समय बाद उन्हें शहर में बेच

देता है। इसतरह सरपंच के चरित्र में भ्रष्टाचारी, स्त्री लंपट, अमानवीय, झूठा, हत्यारा आदि गुण दिखाई देते हैं।

✻ गरीबा :

विवेच्य नाटक में गरीबा 'गरीबन का पूरवा' गाँव का एक गरीब व्यक्ति है। गरीबा सरपंच द्वारा किए गए हत्या के आरोप में जेल में बंद है। वह नाटक के अंतिम दृश्य में सामने आता है। जब उसे ग्रामीण से उसकी पत्नी के बलात्कार और बच्चों को बेचने की बात पता चलती है। तो वह उसका बदला लेने के लिए तैयार होता है। लेकिन ग्रामीण द्वारा समझाने पर वह समझ जाता है कि शक्ति से नहीं तो युक्ति से इनका बदला लेना चाहिए। गरीबा के चरित्र में मजबूर पति, पिता, बेगुनाह, साजिश का शिकार, विद्रोही और समझदार आदि गुण दिखाई देते हैं।

✻ गरीबा की पत्नी (गरीबन) :

विवेच्य नाटक में 'गरीबन का पूरवा' गाँव का जिक्र आया है, शायद यह नाम गरीबा की पत्नी के नाम पर पड़ा था। गरीबन के पति गरीबा को सरपंच हत्या के झूठे केस में फँसाकर जेल भेजता है। इससे गाँव में गरीबन का बहिष्कार किया जाता है। उसे कोई काम नहीं देता इसकारण उसे और उसके दो बच्चे ज्ञानू और सरस्वति पर भूखमरी की नौबत आती है। भूखमरी से तंग आकर वह बच्चों समेत कुएँ में गिरकर आत्महत्या की कोशिश करती है। लेकिन गाँववाले उसे बचाकर सांस्कृतिक कार्यक्रम में लाते हैं। सरपंच और दरोगा मिलकर उसे जेल भिजवाते हैं। जेल में उसके दोनों बच्चों को मारने की धमकी देकर दोनों उसका यौन शोषण करते हैं। गरीबन बच्चों के खातिर अत्याचार को चूपचाप सहती है। इसतरह विवेच्य नाटक में गरीबन के चरित्र में कमजोर ग्रामीण महिला, गाँव से प्रताड़ित महिला, अत्याचारित स्त्री, मजबूर माँ और पत्नी, बच्चों की भलाई के लिए अपने सर्वस्व का त्याग करने वाली महिला के गुण दिखाई देते हैं।

✻ ग्रामीण :

विवेच्य नाटक में ग्रामीण यह पात्र बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतिनिधि है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में वह गरीबन को लेकर आता है ताकि उसके पति को इंसाफ मिले। लेकिन सरपंच और दरोगा की मिलीभगत से कुछ नहीं हो पाता। दरोगा उसे धमकाकर वहाँ से भगाता है। वह मुख्यमंत्री को गाँव की पानी की समस्या, गरीबी, भूखमरी, गरीबन के पति की बेगुनाही आदि की जानकारी देने का प्रयास करता है लेकिन मुख्यमंत्री सब्र से काम करने और हरसंभव मदद करने का आश्वासन उसे देता है। नाटक के अंतिम दृश्य में जब ग्रामीण के पास गरीबा जेल से भागकर आता है। तब वह उसकी पत्नी और बच्चों पर हुए अत्याचार की दास्ताँ उसे बताता है। गरीबा उन्हें मार डालने का फैसला करता है लेकिन वह उसे समझाता है कि जोश से नहीं होश से काम लेना चाहिए। सदियों से चली आ रही शोषण की मानसिकता को जड़ों से खत्म करने के लिए संगठित होकर काम करने की सलाह देता है। गरीबा उसकी बात मान लेता है। इसतरह नाटक के ग्रामीण इस पात्र के चरित्र में बुद्धिजीवि वर्ग का प्रतिनिधि, न्याय दिलाने के लिए सजग, गाँव की समस्याओं को मुख्यमंत्री तक

पहुँचाने का प्रयास करने वाला सजग ग्रामीण, गरीबा को बल से नहीं बल्कि युक्ति से काम लेने को कहने वाला पथ प्रदर्शक, संगठन की ताकत पर विश्वास रखनेवाला आदि गुण दिखाई देते हैं।

✻ **गरीबा के बच्चे :**

नाटक में गरीबा के दो बच्चे हैं। उसे एक लड़का है जिसका नाम ज्ञानू है और एक लड़की है जिसका नाम सरस्वति है। सरपंच द्वारा हत्या के केस में फँसाने के कारण उनका पिता जेल में बंद है जबकि माँ भूखमरी और गाँव की प्रताड़ना से तंग आकर उनके साथ खुदकुशी करती पकड़ी जाने के कारण जेल में बंद हैं। इसकारण इन दोनों बच्चों को सरपंच अपने घर बंधुवा मजदूर की तरह काम करवाता है। इनमें से ज्ञानू बहुत समझदार है। वह सरपंच के अत्याचार और अन्याय के बारे में सभी गाँववालों को बताता है। अंत में सरपंच उन्हें शहर में बेच देता है। इस तरह इस नाटक में गरीबा के बच्चों के चरित्र में माता-पिता के प्रेम से दूर, सरपंच के षड्यंत्र और अन्याय के शिकार आदि विशेषता दिखाई देती है।

✻ **नेताजी :**

नाटक में नेताजी भ्रष्ट राजनेता एवं राजनीति के प्रतीक पात्र के रूप में आते हैं। वे अपना काम निकलवाने के लिए साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाने की कला को बहुत खूब जानते हैं। वह नट और नटी को धमकाकर उनका नाटक बंद करवाते हैं और अपना नाटक 'गरीबी हटाव' को दिखाने का दबाव बनाते हैं। लेकिन अंत में नट और नटी नेता का विरोध करते हुए दर्शकों के सामने उसे बेनकाब कर देते हैं। इसतरह नेताजी के चरित्र में भ्रष्ट और अवसरवादी नेता, स्वार्थ के लिए घिनौनी राजनीति करने वाला, जनसेवा का दिखावा करने वाला और अपनी बात न मानने पर धमकाने वाले नेता के गुण दिखाई देते हैं।

✻ **दरोगा :**

विवेच्य नाटक में दरोगा भ्रष्ट प्रशासन का प्रतीक है। वह एक स्त्री लंपट व्यक्ति है। गरीबन को भोगने के लिए वह उसकी कमजोरी को भाँपकर उसे झूठी बातों में बहलाता है। उसके बच्चों के खाने-पीने और शिक्षा का उचित प्रबंध करने की झूठी बात कहकर उसके शरीर को भोगता है। वह सरपंच के साथ मिलकर दुष्कर्म करता है। इसतरह दरोगा के चरित्र में भ्रष्ट पुलिस अधिकारी, स्त्री लंपट विलासी अधिकारी, दुष्कर्म करने वाला, गरीबा को झूठे केस में फँसानेवाला, धमकानेवाला आदि गुण दिखाई देते हैं।

✻ **राजशासन में आए प्रमुख पात्रों का परिचय इस प्रकार हैं–**

✻ **राजा :**

राजा गरीबन और उसके होने वाले पति को पकड़कर लाने को कहता है। वह दोनों को जबरदस्ती नाचने-गाने को कहता है। लेकिन उसे नाच-गाने से ज्यादा गरीबन की सुंदरता पंसद है। इसलिए वह उसे अपने महल में दासी बनाकर रखता है और उसके होने वाले पति को कारागार में डाल देता है। वह बहुत ही लंपट है और गरीबन को चकनी-चुपड़ी बातों में बहलाकर उसका भोग करता है। वह उसका नाम गौरीबानू करता है और उसके पति को सिपाही बनाने, माता-पिता को पक्का मकान बनवाने, गाँव में कुआँ खुदवाने

का झूठा आश्वासन देकर उसका भोग करता है। इसतरह नाटक के राजा के चरित्र में भोगविलासी, स्त्री लंपट, विश्वासघाती, झूठा आश्वासन देने वाला आदि खलनायक के गुण दिखाई देते हैं।

* **सिपाही :**

नाटक के एक ही दृश्य में सिपाही यह पात्र आता है। यह राजा का आदमी है और राजा के आदेश पर वह बिना कुछ जुर्म के गरीबन और उसके मंगेतर को पकड़कर राजा के सामने पेश करता है।

* **आदमी :**

नाटक के राजशासन की कहानी में आदमी यह पात्र एक मेहनतकश व्यक्ति है। वह गरीबन से प्यार करता हैं। लेकिन वासनांध राजा उसकी इस खुशी को छिन लेता है। गरीबन को अपनी दासी बनाकर वह आदमी को कारागार में डाल देता है। लेकिन गरीबन जब राजा को घर वापस भेजने की बात कहती है तो वह उसके आदमी को प्रहरी बनाकर सेना में शामिल करवाता है। आदमी राजा की ज्यादतियों से तंग आकर पुरानेवाले प्रहरी से मिलकर उसकी हत्या करने का नियोजन करता है। पुराना प्रहरी भी उसका मित्र बन जाता है। इसतरह आदमी के चरित्र में मेहनती व्यक्ति, एक प्रेमी, राजा के अन्याय से कैदी बनना, बाद में सैनिक बनकर सेना में शामिल होना, राजा के अत्याचार के खिलाफ विद्रोही आदि विशेषताएं दिखाई देती हैं।

* **औरत :**

नाटक के लोकशासन में गरीबा की पत्नी के साथ हुआ था, बिलकुल वहीं अंजाम राजशासन में औरत के साथ होता है। लंपट राजा गरीबन को भोगने के लिए उसे जबरन अपनी दासी बनाकर उसका नाम गौरीबानू रखता है। वह अपने गाँव, अपने घर जाकर अपने मंगेतर के साथ शादी करना चाहती है। लेकिन राजा उसके होनेवाले पति को कारागार में डालकर अत्याचार करता है। तब औरत उसके आदमी को छोड़ने, उसके माँ बाप के लिए एक मकान बना देने और गाँव में कुआँ बनवाने के बदले में राजा को अपना सर्वस्व सौंप देती है। उसका आदमी सही-सलामत रहे इसलिए वह अपनी इज्जत तक दाँव पर लगाती है। इसतरह औरत के चरित्र में एक सुंदर नर्तकी, बेबस प्रेमिका, बेबस बेटी, अत्याचारित महिला और परिवार एवं गाँव के लिए सर्वस्व न्यौछावर करनेवाली महिला की विशेषताएं दिखाई देती है।

* **प्रहरी :**

नाटक में प्रहरी यह पात्र बुद्धिजीवि वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है। वह राजा का सैनिक है। उसके पिता के गुनाह करने के कारण राजा उसे सैनिक बनाता है। जब आदमी सैनिक बनकर राजा के अत्याचार का बदला लेने और हत्या करने का नियोजन करता है तब प्रहरी भी उसका साथ देता है। लेकिन प्रहरी समझदार है वह जानता है कि राजा को मारने से कुछ नहीं होगा। इसलिए पूरी जड़ों को खत्म करना जरूरी है। वह आदमी को झूठ-मूठ राजा के गुण गाने को कहता है ताकि उनपर कोई शक न करे। बाद में प्रहरी लोगों को विद्रोह के लिए तैयार करते हैं। इसतरह प्रहरी के चरित्र में बुद्धिजीवि, राजा का सैनिक, समझदार दोस्त, राजा का विद्रोही, संयमी व्यक्ति आदि विशेषताएं दिखाई देती है।

✻ **मंत्री :**

नाटक में मंत्री का चरित्र-चित्रण बहुत कम जगह पर आया है। मंत्री राजा के हाँ में हाँ मिलाने वाला व्यक्ति है। वह राजा का गुलाम है। मंत्री के पास उसकी खुद की समझ नहीं है। वह केवल राजा के इशारों पर काम करता है। राजा अगर गलत बात करता है तो भी मंत्री उसका साथ देता है। इसतरह मंत्री का चरित्र एक कठपुतली की तरह है जो राजा के इशारों पर नाचता है।

✻ **'अब गरीबी हटाव' नाटक के संवाद:**

नाटकों में संवादों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। संवादों के बिना नाटक की कथावस्तु आगे नहीं बढ सकती। साथ ही पात्रों के चारित्रिक विकास में भी संवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत नाटक की संवाद योजना में नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी को शतप्रतिशत सफलता मिली है। सीधे-साधे, सरल संवादों से विषय की स्पष्टता बढी है। गरीबी के समस्या की भयावहता और राजतंत्र की लापरवाही को व्यंग्यपूर्ण संवादों में साकार करने में लेखक सफल हुए हैं। इस नाटक में छोटे संवाद, बड़े संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, प्रश्नात्मक संवाद, पद्यात्मक संवाद, लाक्षणिक संवाद दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत नाटक में छोटे और लंबे दोनों प्रकार के संवाद दिखाई देते हैं। नाटके सभी सात दृश्यों के संवाद की शुरुआत नट और नटी के संवाद से हुई हैं। नाटक का प्रारंभ ही नट और नटी के एक ऐसे संवाद से हुआ है जिससे नाटक की थीम की जानकारी दर्शकों को मिलती है-

नटी : जल्दी चलो, जल्दी चलो। कहीं डंडे का घोड़ा भी चलता है?

नट : क्यों नहीं चलता । युगों से चलता आ रहा है। सारे देश में डंडे का घोड़ा ही रहा है।
बड़े शान से चल रहा है। घोड़े जल्दी चलो, जल्दी चलो भाई।

नटी : बस भी करो, रंगभूमि आ गई है। दर्शकगण क्या कहेंगे? तुम सूत्रधार हो,
विदूषकों-सी सूरत बना रखी है।

नट : मुझी को क्यों कहेंगे? कौन नेता आज विदूषक नहीं लगता। सभी विदूषक है, डंडे के
घोड़े पर चले जा रहे हैं। घोड़े जल्दी चलो, जल्दी चलो, जल्दी चलो भाई।

नटी : यह नेता लोग है। उनका डंडे का घोड़ा भी चल जाता है। हम गरीब रंगकर्मी है।
हमारा नहीं चलेगा।''

नट और नटी के इस संवाद से ज्ञात होता है कि यह नाटक देश की राजनीति और उससे निर्मित समस्या पर आधारित होगा।

बाद में एक नेताजी आते हैं और नट-नटी को अपना नाटक बंद करने के लिए कहकर उनका नाटक खेलने के लिए धमकाते हैं। वहाँ नटी और नेता के बीच थोड़ी कहा सुनी भी होती है-

नेताजी : अब हम नाटक करेंगे, अपना नाटक हटाओ। ऐलान करो, नाटक होगा 'गरीबी हटाव।'

नट : आप सूत्रधार के नाते इसमें अभिनय करेंगे या केवल हुकम देंगे।

नेताजी: अभिनय? मंच पर? वैसे हम अभिनय कर लेते हैं पर रंगमंच पर कभी नहीं किया।

नटी : फिर आप क्या करेंगे? गाएंगे, नाचेंगे?

नेताजी: गाना-नाचना हमें नहीं आता। नचाना जानता हूँ। सारे देश को नचा सकता हूँ।

नट : फिर यह आपका 'गरीबी हटाव' नाटक कैसे होगा।''

स्पष्ट है कि इन संवादों से हमें नेताजी की स्वार्थीवृत्ति एवं लोक शासन की समस्याओं की जानकारी मिलती है।

नाटक के लोकशासन की कहानी में आए 'गरीबन का पूरवा' गाँव में आए मुख्यमंत्री त्रिपाठी जब सरपंच को गाँव की खैर सलामती पूछते हैं-

मुख्यमंत्री: क्या ठीक हैं, यहाँ का शर्मा जी?

सरपंच : सब ठीक हैं त्रिपाठी जी।

मुख्यमंत्री : कोई समस्या?

सरपंच : समस्या थोड़ी पीने के पानी की हैं। एक ही कुआँ हैं चार सौ घरों में।

कृषिमंत्री : फिर हरिजन पानी कहाँ से लाते हैं?

सरपंच : एक छोटा-सा ताल हैं। कुछ लोग पास के गाँव से भी ले आते हैं। वहाँ हरिजनों का एक कुआँ भी हैं।''

स्पष्ट है कि गाँव में पीने के पानी की गंभीर समस्या होने और गरीबों की बदतर स्थिति के बावजूद भी भ्रष्ट सरपंच शर्मा मुख्यमंत्री त्रिपाठी को सब कुछ ठिक होने की झूठी बात बताता है।

गरीबा की पत्नी बेरोजगारी और भूखमरी से तंग आकर बच्चों समेत खुदकुशी करने जाती है तब लोग उसे बचाकर मुख्यमंत्री के पास ले आते हैं-

मुख्यमंत्री : क्या बात है?

ग्रामीण : यह औरत, हुजूर, अपने दो बच्चों के साथ कुएँ में कूद रही थी। हम लोगन ने पकड़ लिया। नहीं, जान से चली जाती।

मुख्यमंत्री : क्या हुआ इसको?

ग्रामीण : भूखी मर रही थी, सरकार।

मुख्यमंत्री : क्यों?

ग्रामीण : कहीं काम नहीं मिलता इसे। न खेत में, न सड़क पर।

मुख्यमंत्री : इसका आदमी?

ग्रामीण : वह जेहल काट रहा है, सरकार।

मुख्यमंत्री : क्यों?

दरोगा : एक हत्या का मामला था, सर। पिछले चुनाव में शर्माजी के खिलाफ सरपंच का

जो उम्मीदवार था उसका उसने रात में गंडासे सिर काट दिया था।

ग्रामीण : इसीसे कोई काम नहीं देता सरकार। बहुत गरीब है हुजूर, इसका पेट पालना मुश्किल हो रहा है।

स्पष्ट है कि इस संवाद से गाँव की बेरोजगारी, भूखमरी, गरीब आदि समस्याओं से तंग आकर खुदकुशी करने की समस्या को नाटककार ने उजागर किया है।

प्रस्तुत नाटक की दूसरी कहानी राजशासन की है। लोकशासन में जो समस्या दिखाई देती है वही राजशासन में भी है। राजा अपनी हवस के लिए गरीबन को अपनी दासी बनाता है और उसके होने वाले पति को कारागार में डाल देता है–

राजा : बहुत खूब। शाबाश औरत। तुम्हारा नाम क्या है?

औरत : गरीबन।

राजा : मंत्री, इसके गाँव के पुरवे का नाम आज से गरीबन का पुरवा रख दो।

मंत्री : जो आज्ञा, महाराज।

राजा : औरत, हम खुश हुए। तुम आज से हमारे महल में रहोगी। और जो माँगना हो माँगो।

स्पष्ट है कि राजा गरीबन नाम की औरत को जबरदस्ती अपनी दासी बनाकर रखता है और उसे भोगने के लिए झूठी बातों से रिझाने की कोशिश करता है।

राजा गरीबन में अपने महल में रखकर उसका यथेच्छ भोग करता है। उसकी गरीबी दूर करने के बजाए उसका सर्वस्व छिन लेता है और केवल उसे झूठे वादे करता है–

औरत : महाराज

राजा : बोल।

औरत : मेरे उसको छोड़ दे।

राजा : छोड़ देंगे । और कुछ?

औरत : हमारे माँ–बाप के लिए एक अच्छा सा घर

राजा : बनवा देंगे, और कुछ?

औरत : घर के सामने कुआँ खुदवा दे। बहुत दूर से पानी

राजा : वह भी खुदवा देंगे । अब तो कह मैं आपकी हुई।

स्पष्ट है कि राजा उस औरत को बहलाने के लिए उसकी सभी माँगे पूरी करने का झूठा आश्वासन देता है।

नाटक के अंत में नट–नटी नेताजी और उनकी भ्रष्ट नीतियों का विरोध करते हुए दर्शकों को सजग होकर लड़ने के लिए उकसाते हैं। तब नेताजी दोनों को धमकाते हैं–

नेताजी : बंद करो, बंद करो बकवास। यह तुम लोग क्या कर रहे हो? यह 'गरीबी हटाव' नाटक है।

नटी : नहीं, 'अब गरीबी हटाव'।

नट : अब यही रास्ता आप लोगों ने छोड़ा है। राजतंत्र और लोकतंत्र दोनों को हम देख चुके। सबने अपना मतलब साधा है। अब गरीबी हटाने का यही तरीका रह गया है, सब गरीब मिलकर अपनी गरीबी हटाएं।

इसतरह नाटक के छोटे-छोटे सटीक, सरल और अर्थपूर्ण संवादों से 'अब गरीबी हटाव' नाटक की प्रभाव बढता है। नाटक के संवाद नाटककार के उद्देश्य को पाठक एवं दर्शकों तक पहुँचाने में सफल हुए हैं।

3.3.3 'अब गरीबी हटाव' देश–काल वातावरण, अभिनेयता एवं भाषा शैली:

*** देश–काल वातावरण :**

नाटक के विषय को समझने के लिए इसमें देश-काल-वातावरण का विशेष महत्त्व रहता है। नाटककार नाटक के विषय एवं कहानी के अनुसार देश-काल-वातावरण का नियोजन करता है जिससे उसकी प्रभावत्मकता बढती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का यह नाटक सन् 1981 ई. अर्थात् आठवे दशक की रचना है। तब भारत में राजनीति की विसंगतियाँ और भ्रष्टाचार की समस्या चरमसीमा तक पहुँची थी। सर्वेश्वर जी वास्तववादी नाटककार होने के कारण उन्होंने इस नाटक में राजतंत्र और लोकतंत्र के वातावरण को साकार किया है। राजतंत्र में भी राजा की दमनकारी वृत्ति के कारण प्रजा गरीबी और लाचार थी और आज आजादी के बाद आए लोकतंत्र में भी भ्रष्ट राजनेताओं के कारण वह गरीबी को ढोने के लिए मजबूर बनी है।

'अब गरीबी हटाव' नाटक राजशासन और लोकशासन इन दो भागों में प्रस्तुत हुआ है। नाटक के पहले दृश्य में गरीबन का पूरवा गाँव का परिवेश साकार हुआ है। दूसरे दृश्य में गाँव में सांस्कृतिक महोत्सव की तैयारी का परिवेश साकार हुआ है। तीसरे दृश्य में राज दरबार का विलासपूर्ण वातावरण साकार किया गया है। चौथा दृश्य पुलिस चौकी के हवालत का है जहाँ खुदकुशी करनेवाली औरत को गिरफ्तार करके लाया गया है। पाँचवाँ दृश्य राजा के अंत:पुर का है जहाँ राजा की सेज को फूलों से सजाया गया है। छठा दृश्य कारागार का है जहाँ दो प्रहरी विद्रोह की बातें कर रहे हैं। सातवें दृश्य में गाँव की एक झोपड़ी है और वहाँ जेल से भागा हुआ कैदी आता है। अंत में नट-नटी सभी लोगों को सजग करके नेताजी के खिलाफ विद्रोह के लिए तैयार करने का माहौल साकार हुआ है। इसतरह पूरे नाटक में दो कालों के अनुसार वातावरण को साकार किया है। दोनों भी कालखंडों में नारी का शोषण, प्रजा का शोषण समान रूप है। बेरोजगारी, भूखमरी, गरीबी आदि से प्रजा तो दु:खी है ही, लेकिन नारी का यौन-शोषण भी हो रहा है। नाटककार ने 'गरीबन का पुरवा' गाँव को भारत के उन सभी गाँवों का प्रतिनिधि गाँव बनाकर उभारा है, जहाँ जातिवाद, गरीबी, भूखमरी, उच्च वर्ग का शोषण है। गरीब सदियों से गरीब है और उसे गरीब ही रहने के लिए व्यवस्था मजबूर किया जाता है। राजशासन में राजा हो या फिर लोकशासन में मुख्यमंत्री, सरपंच, कृषि मंत्री, दरोगा सभी गरीबों का शोषण करने से बाज नहीं आते हैं। नेता और अधिकारियों से मिलीभगत से उनका शोषण चलता रहता है इसका सटीक चित्रण देश-काल-वातावरण के अनुसार करने में नाटककार सफल हुए हैं।

❊ अभिनेयता :

नाटक दृश्य-श्राव्य विधा होने के कारण उसकी सही परीक्षा रंगमंच पर होती है। इसलिए नाटक में अभिनेयता के लिए अनन्यसाधारण महत्त्व होता है। नाटक के पात्रों की शारीरिक, भाषिक, वेशभूषा तथा भावनिक प्रदर्शन की कला अभिनेयता कहलाती है। नाटक की सफलता अभिनेता और उसके अभिनय पर निर्भर होती है। नाटककार के उद्देश्य को दर्शकों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी अभिनेता पर होती है। वह अपने अभिनय की ताकत से दर्शकों को विचारप्रवृत्त करता है। अभिनेता पात्र की भूमिका को प्रस्तुत करने से पूर्व उस पात्र के स्क्रिप्ट को अच्छे तरीके से पढकर चिंतन-मनन करके उस पात्र को अपने अभिनय में जिंदा करता है।

'अब गरीबी हटाव' नाटक की कथावस्तु में अभिनेयता का संपूर्ण ध्यान रखा गया है। इस नाटक की कथावस्तु अभिनय से युक्त सही क्रम में विकसित होती है। पहले दृश्य में नट-नटी और नेता जी के संघर्ष से अभिनय को सही दिशा में गति मिलती है। संघर्ष के साथ कथानक का उदय होता है और नाटककार दर्शकों की जिज्ञासा को अंत तीव्र बनाते हुए उसे अभिनेयता की ताकत पर चरमसीमा तक ले जाता है। नाटक में औरत के अभिनेयता से अंत तक उसे प्रेक्षकों की सहानुभूति मिलती है। चौथे दृश्य में नाटक चरमसीमा में पहुँचता है और नाटक का अंत कई सवालों पीछे रखकर प्रेक्षक की जिज्ञासा को शांत करने के बजाए उन्हें विचार प्रवृत्त करता है। नाटक का हर दृश्य अभिनय पूर्ण है। नट-नटी का अभिनय संदर बन पड़ा है। तीसरा और चौथा दृश्य की घटनाएं अभिनेयता की दृष्टि से सक्षम है। छठे दृश्य में अभिनय शिथिल पड़ता है लेकिन अंतिम दृश्य की अभिनेयता की सक्षमता से उसका एहसास नहीं होता।

पात्रों के अभिनय की स्पष्टता के लिए नाटककार ने पात्रों के संवादों के पूर्व कोष्टकों में पात्रों की क्रियाओं के संकेत दिए हैं जिससे उनकी अभिनेयता में सजीवता दिखाई देती है। नाटककार ने इस नाटक को क्लिष्टता से बचाते हुए छोटे-छोटे दृश्य, घटनाओं की संक्षिप्तता, सुसंवाद की सहजता के कारण इसे अभिनेयता के लिए सुलभ बनाया है। रंगमंच पर नाटक के सफल निर्देशन के लिए बीच-बीच में नाटककार ने निर्देश दिए है। दृश्य परिवर्तन के संकेत, प्रकाश-योजना और ध्वनि योजना का भी मार्गदर्शन किया है। नाटक के बीच-बीच में गीतों को शामिल करके उन्होंने अभिनेयता की गरीमा को बढाया है। अतः प्रस्तुत नाटक अभिनेयता की दृष्टि से सफल बना है।

❊ भाषा-शैली :

नाटक में भाषा और शैली एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। नाटककार नाटक के विषय के संदर्भ में अनुभव किए प्रसंगों को भाषा और शैली के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाता है। इसलिए भाषा-शैली नाटक के शरीर का काम करते हैं। 'अब गरीबी हटाव' नाटक में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने बहुत ही सीधी, सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने नाटक के विषय, उद्देश्य और रंगमंचीयता को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया है। नाटक की भाषा में माधुर्य, ओज, भावकुता, आवेग, वैचारिकता, व्यंग्यात्मकता और नाट्यनुकूलता के गुण दिखाई देते हैं। साथ ही उन्होंने नाटक के कथ्य एवं उद्देश्य के सफलता के लिए

पात्रानुकूल, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक भाषा एवं शैली का प्रयोग किया है। नेताजी, मुख्यमंत्री, राजा, गरीबन, दरोगा आदि की भाषा पात्रानुकूल है। नाटक में प्रहरी और ग्रामीण दोनों बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधि होने के कारण उनकी भाषा में व्यंग्यात्मकता दिखाई देती है।

नाटक के भाषा की रोचकता बढाने के लिए कुछ जगहों पर मुहावरों का प्रयोग हुआ है जैसे कि- चक्कर काटना, हवाई किला बनाना, नचाना, दीमक लगना, गड्ड-मड्ड हो जाना, हवस जगना, हिम्मत न हारना, मसर्रत हासिल होना, रिरियाना, फटी आँखों से देखना, मालामाल कर देना, कुत्तों की तरह सूँघना, दीवारों के भी कान होना, दाँत पीसना, मुँह छिपाना आदि। साथ ही नाटक में उर्दू, देशज, अंग्रेजी शब्दों का आवश्यकतेनुसार प्रयोग करने से भाषा स्वाभाविक लगती है। हर दृश्यों में गीतों का प्रयोग करके नाटककार ने नाटक के प्रभाव को बढाया है। लोक-जीवन से जुड़े गीतों के जरिए नाटककार सक्सेना जी ने नाटक के उद्देश्य को प्रभावी बनाया है। इस नाटक में कुल सोलह गीतों का प्रयोग हुआ है इसमें लोकगीत, गणेशवंदना, कव्वाली आदि गीतों का प्रयोग हुआ है। कुल मिलाकर कहे तो भाषा-शैली की दृष्टि से भी यह नाटक शतप्रतिशत सफल हुआ है।

3.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न:

1) 'अब गरीबी हटाव' यह नाटक .... ने लिखा है।

अ) लक्ष्मीनारायण लाल ब) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

क) कमलेश्वर ड) अनामिका

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक का प्रकाशन सन् .... ई. को हुआ है।

अ) सन 1981 ब) सन 1991 क) सन 2001 ड) 2011

3) 'अब गरीबी हटाव' नाटक में भारत में व्याप्त .... की समस्या को केंद्र में रखा गया है।

अ) दहशतवाद ब) गरीबी क) देहजप्रथा ड) बेरोजगारी

4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने 'अब गरीबी हटाव' नाटक की रचना .... दिनों में की थी।

अ) 21 ब) 31 क) 11 ड) 41

5) 'अब गरीबी हटाव' नाटक में .... गाँव का वर्णन आया है।

अ) रामपुर ब) लखनौ क) गरीबन का पुरवा ड) अमीरन का पुरवा

6) 'अब गरीबी हटाव' नाटक में आए गाँव में हरिजन बस्ती की आबादी............ प्रतिशत है।

अ) 70 ब) 80 क) 60 ड) 90

7) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक में कुल पात्र ………… है।

अ) 7 ब) 17 क) 15 ड) 12

8) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक में ग्रामीण और प्रहरी वर्ग के प्रतिनिधि ………… है।

अ) बुद्धिजीवी ब) गरीब क) अमीर ड) समाजसेवी

9) ‘अब गरीबी हटाव’ नाटक में मुख्यमंत्री और सरपंच के नाम………… है।

अ) त्रिपाठी और शर्मा ब) दुबे और चौबे क) सिंह और वर्मा ड) द्विवेदी और सिंह

10) गरीबा और गरीबन को ………… बच्चे हैं।

अ) दो ब) चार क) तीन ड) पाँच

11) गरीबा और गरीबन के बच्चों का नाम ………… था।

अ) राम-शामू ब) बंटी-बबली क) मुन्ना-मुन्नी ड) ज्ञानू-सरस्व्ति

12) गरीबा और गरीबन………… वर्ग के प्रतिनिधि है।

अ) गरीब ब) अमीर क) मध्यम ड) उच्च

13) नट ………… नाटक मंडली में सूत्रधार था।

अ) सत्यवती ब) देववती क) प्रभात ड) साधना

14) नट और नटी ………… नाटक पेश करना चाहते थे।

अ) डंडे का बैल ब) डंडे का हाथी क) डंडे का घोड़ा ड) डंडे का आदमी

15) नेताजी नट और नटी को ………… नाटक खेलने के लिए दबाव बनाते हैं।

अ) गरीबी हटाओ ब) डंडे का घोड़ा क) क्रांति ड) हिंदुस्तान

16) राजा गरीबन को दासी बनाकर उसका नाम………… रखता है।

अ) सायरा बानू ब) गौरी बानू क) दिलशाद बानू ड) अनारकली

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

रंगभूमि = रंगमंच, नाटक खेलने की जगह,

विदूषक = नाटक में हँसी–मजाक करने वाला पात्र,

नट–नटी = नाटक में अभिनय करने वाले प्रमुख पात्र

दृश्य = नाटक के अंक, भाग, दृश्य–लोप = दृश्य या भाग की समाप्ति

कथावस्तु = नाटक की कहानी, चरित्र-चित्रण = नाटकों के पात्रों की विशेषता

अभिनेयता = रंगमंच की दृष्टि से अभिनय कला की विशेषता

देश-काल-वातावरण = नाटक में आए परिवेश की जानकारी

गरीबन का पूरवा = नाटक में आए अभावग्रस्त गाँव का प्रतीकात्मक नाम

गरीबा और गरीबन = नाटक में आए गरीब वर्ग के प्रतिनिधि पात्र

3.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
2) सन 1981
3) गरीबी
4) 11
5) गरीबन का पुरवा
6) 70
7) 17
8) बुद्धिजीवी
9) त्रिपाठी और शर्मा
10) दो
11) ज्ञानू-सरस्वती
12) गरीब
13) सत्यवती
14) डंडे का घोड़ा
15) गरीबी हटाओ
16) गौरी बानू

3.7 सारांश:

1) हिंदी के प्रयोगशील नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' यह नाटक का सन् 1981 में किताबघर, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस नाटक में भारत में व्याप्त 'गरीबी' की समस्या का केंद्र में रखा गया है। सर्वेश्वर जी ने भारत में 'गरीबी हटाव' न कोई नारा और न कोई शीर्षक माना है बल्कि इसे अधिकांश भारत के जनसमूह की नियति माना है। आजादी के बाद भी 'गरीबी' हटाने के लिए 'गरीब' को ही अपनी कमर कसनी पड़ती है।

2) नाटक के पात्र और उनकी चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी से ही हम नाटक का गहराई से अध्ययन कर सकते हैं। 'अब गरीबी हटाव' नाटक का कथानक लोकशासन और राजशासन इन दो परिवेशों में साकार हुआ है। इसकारण दो परिवेशों के अनुसार नाटक के कुल 17 पात्र आए हैं। विवेच्य नाटक में नट, नटी, नेताजी, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच, दारोगा, ग्रामीण, गरीबन, गरीबा, सिपाही, राजा, आदमी, औरत (गरीबन उर्फ गौरी बानू), मंत्री, सेनापति, प्रहरी आदि पात्र शामिल हैं।

3) प्रस्तुत नाटक में गरीबी के समस्या की भयावहता और राजतंत्र की लापरवाही को व्यंग्यपूर्ण संवादों में साकार करने में लेखक सफल हुए हैं। इस नाटक में छोटे संवाद, बड़े संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, प्रश्नात्मक संवाद, पद्यात्मक संवाद, लाक्षणिक संवाद दिखाई देते हैं।

4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का यह नाटक सन् 1981 अर्थात् आठवे दशक की रचना है। तब भारत में राजनीति की विसंगतियाँ और भ्रष्टाचार की समस्या चरमसीमा तक पहुँची थी। सर्वेश्वर जी वास्तववादी नाटककार होने के कारण उन्होंने इस नाटक में राजतंत्र और लोकतंत्र के वातावरण को साकार किया है। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक राजशासन और लोकशासन इन दो भागों में प्रस्तुत हुआ है।

5) 'अब गरीबी हटाव' नाटक की कथावस्तु में अभिनेयता का संपूर्ण ध्यान रखा गया है। इस नाटक की कथावस्तु अभिनय से युक्त सही क्रम में विकसित होती है। पहले दृश्य में नट–नटी और नेता जी के संघर्ष से अभिनय को सही दिशा में गति मिलती है। संघर्ष के साथ कथानक का उदय होता है और नाटककार दर्शकों की जिज्ञासा को अंत तीव्र बनाते हुए उसे अभिनेयता की ताकत पर चरमसीमा तक ले जाता है।

6) 'अब गरीबी हटाओफ नाटक में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने बहुत ही सीधी, सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने नाटक के विषय, उद्देश्य और रंगमंचीयता को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग किया है। नाटक की भाषा में माधुर्य, ओज, भावकुता, आवेग, वैचारिकता, व्यंग्यात्मकता और नाट्यानुकूलता के गुण दिखाई देते हैं। साथ ही उन्होंने नाटक के कथ्य एवं उद्देश्य के सफलता के लिए पात्रानुकूल, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक भाषा एवं शैली का प्रयोग किया है।

3.8 स्वाध्याय :

अ) टिप्पणियाँ

1) गरीबा की पत्नी (गरीबन)

2) गरीबा के बच्चे

3) दरोगा

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न:

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक की कथावस्तु लिखिए।

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक के लोकशासन में आए पात्रों का परिचय दीजिए।

3) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक के राजशासन में आए पात्रों का परिचय दीजिए।

4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक के संवाद-योजना को स्पष्ट करे।

5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक की अभिनेयता की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

6) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक की भाषा एवं शैली को स्पष्ट कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखित 'अब गरीबी हटाव' नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करना।

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के बहुचर्चित नाटक 'बकरी' को पढकर उसे रंगमंच पर प्रस्तुत करना।

3) आठवें दशक के सर्वेश्वर दया सक्सेना के समकक्ष मराठी के नाटककार के साथ उनकी नाटक की तुलना करना।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) सर्वेश्वर दयाव सक्सेना, संपूर्ण गद्य-रचनाएं (खंड–2), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2004

2) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाट्य-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन – शोधप्रबंध म. गांधी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

❑❑❑

इकाई 4

लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' (नाटक)

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवरण

4.3.1 लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों में चित्रित समसामायिकता

4.3.2 लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों की शीर्षक सार्थकता एवं उद्देश

4.3.3 लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों में चित्रित समस्याएँ

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य :

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने गरीबों के विरूध्द मे यहां दोनों नाटक लडाई जारी रखते है।
2. 'लडाई' और 'अब गरिबी हटाओ' नाटकों की समकालीनता से परिचित होंगे।
3. 'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों के शीर्षक की सार्थकता से परिचित होंगे।
4. 'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों के उद्देश्य से परिचित होंगे।
5. 'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों की समस्याओं से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना:

प्रयोगधर्मी नाटककार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना हिंदी के महत्त्वपूर्ण साहित्यकार रहे हैं। सक्सेना 'तिसरे सप्तक के प्रमुख कवि रहे हैं। वे मूलत: कवि होने के बावजूद अन्य विधाओं में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने जीवन में सात काव्य संग्रहो, तीन उपन्यास, दो – कहानी संग्रहों, तीन नाटकों, एकांकी संग्रह, नुक्कड नाटक, नृत्य नाटिका और बाल साहित्य भी लिखे है। उन्होने जो देखा और भोगा है उसे ही अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाया है। व्यवस्था के प्रति आवाज उठानेवाले सक्सेना के 'बकरी', 'लडाई' और 'अब गरिबी हटाओं' जैसी उनके बहुमूल्य नाटय कृतियों से हिंदी साहित्य समृध्द हुआ है। उनके नाटक निम्न–मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर लिखे गए है। सत्य और यथार्थ को समाज के सामने रखने में वे कभी पीछे नहीं रहे। उनके नाटकों में व्यवस्था पर करारा व्यंग किया है। उन्होंने अपने नाटक द्वारा सामाजिक विसंगति, छिछली राजनीति और असंगतियों और विकृतियों को अभिव्यक्ति का विषय बनाया है। उन्होंने केवल मनोरंजन के लिए नाटक न लिखकर उसके द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों और विकृतियो का पर्दाफाश करके उस में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। उनके नाटकों में जीवन के प्रति अनुराग, सत्य के लिए आग्रह, विषमताओं के प्रति सजग दृष्टि, कडा व्यंग्य और नए बिंबो की क्षमता है। कूल मिलाकर इनके नाटक इन्सानियत के लिए लडते है।

4.3 विषय विवरण:

इस इकाई में हम 'लडाई' और 'अब गरिबी हटाओ' नाटकों की समसामायिकता, शीर्षक की सार्थकता, उद्देश्य और चित्रित समस्याएँ पर अध्ययन करेंगे। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के दोनों लघु व्यंग नाटकों का मूल प्रतिपाद्य है अन्याय – अत्याचार का डटकर मुकाबला करना। राजनिति और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, विसंगति पर प्रहार करके उसे समाप्त करने के लिए जनता को जागृत करना, गरीबी हटाने के लिए मजबूर करना आदि। इस दृष्टि से यह दोनो नाटकों के अंत आशावादी है। लेखक ने आज के आधुनिक बोध को दर्शाने का प्रयास किया है। गरीबों के विरूध्द मे यह दोनों नाटक लडाई जारी रखते है।

4.3.1 'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओं' नाटकों चित्रित समसामायिकता

समसामायिकता : समसामायिकता को समकालिक, समकालीन, समयपरक, वर्तमान नाम से जाना जाता है। एक ही समय के दौरान विद्यमान, घटित या उत्पन्न हुए घटनाएँ को समसामायिकता कह सकते है। समसामायिक विषयों पर लेखन के लिए अपने आसपास के समाज की समझ, राजनितिक संबंधो के प्रति जागरूकता करने का काम सर्वेश्वरदयाल सक्सेना अपने नाटक 'लडाई' और 'अब गरिबी हटाओं' में किया है। इन नाटकों को पढकर ऐसा लगता है यह घटनाएँ अभी घटित हो रही है। सक्सेना जी ने अपने नाटकों में अपने काल की समस्याओं, चुनौतियों और संघर्ष को लिखा है। सामाजिक और राजनितिक घटनाएँ जो एक दुसरे से समसामायिक लगती है। दोनों नाटकों में सक्सेना ने समसामायिकता को केंद्र मे रखकर ही लिखने का प्रयास किया है। समकालीन शब्द आधुनिकता से टकराकर लोकप्रिय हुआ है। समकालीन संदर्भ मे यह नाटक यर्थाथता से अंकन करते है।

'लडाई' नाटक में चित्रित समसामायिकताः

प्रस्तुत नाटक जन समाज के चारों और व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेडी लडाई को आधार बनाया है। इस सत्य की लडाई में सबको हिस्सा लेने का आवाहन लेखक सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने किया है। 'लडाई' नाटक में सत्य के लिए लडनेवाले 'सत्यव्रत' ने नाम से चरित्र को प्रस्तुत किया है। यह पात्र आम आदमी है जो आज भी हमें आसपास दिखाई देते है। 'लडाई' नाटक की प्रथम प्रस्तुती 1979 के आसपास हो गयी है। पिछले पचास वर्षो के बाद नाटक में जिन विषय को उजागर किया है। वर्तमान रूप में यह विषय दिखाई देते है। यह नाटक बहुत उत्तेजक, समकालीन और समसामायिक परिस्थितियों में अनेकानेक प्रश्न उठाकर उस पर व्यापक स्तर पर विचार - विमर्श को शुरूआत करने के साथ ही अनेक सन्दर्भों को उद्धाटित करते है। इसीतरह 'लडाई' नाटक में सक्षमता के साथ समसामायिकता का चित्रण हुआ है।

1. **भ्रष्टाचार–**

आज शिक्षा, राजनीति, राशन दफ्तर, अखबार दफ्तर, पुलिस स्टेशन, बस आदि सभी जगह भ्रष्टाचार चल रहा है। सक्सेना भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते है, इसलिए 'लडाई' नाटक मे सत्यव्रत के माध्यम से भ्रष्ट व्यवहार का खुलकर विरोध करते है। प्रिन्सिपल स्कुल के माध्यम से, नेता लोग, राशन अधिकारी, बस कंडक्टर अखबार का संपादक, दरोगा आदि के भ्रष्टाचार करनेवाले के खिलाफ 'लडाई' नाटक का नायक सत्यव्रत लडाई लडता है। परंतु अधिकारी और राजनेता लोंग उसे ही निगल लेते है। यही बताना लडाई नाटक का लक्ष्य रहा है।

2. **लडाई –**

उद्घोषक नाटक की शुरूआत में आजादी के बत्तीस साल की लडाई का जिक्र किया है। लेकीन आजादी के 75 साल बाद भी यह लडाई जारी है। लेखक ने आज अज्ञानता, उदासीनता, गंदगी, लालच, बेईमानी, गरीबी, मानसिक गुलामी, साम्राज्यवाद, सामंतीवाद, भाषावाद, जातिवाद, धर्मांधता, क्षेत्रीयता आदि से आज के आम आदमी अकेला पडा है, इसके विरुद्ध में लडाई लडने की बात कहता है। महात्मा गांधी ने कहा है ईश्वर सत्य है। लेकीन ईश्वर कहा है। होता तो यह लडाई हर आदमी को लडने नही पडती थी। लेखक ने सत्यव्रत के माध्यम से प्रस्तुत नाटक मे लडाई जारी करने का संकेत देते है।

3. **धोखाधडी, मिलावट–**

आज धोखाधडी और मिलावट सभी वस्तु और जगह में देखने मिलती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपने नाटक में राशन से चीनी, अनाज, मंजन की शीशी, बेकरीवाला की डबलरोटी, चाटवाला का ढंकने का इंतजाम न करना आदि पर नाटक का नायक सत्यव्रत विरोध करना चाहता है। तो उसे ही झूठा साबित करके प्रताडित किया जाता है। आज यही अवस्था आम आदमी के साथ हो रही है। धोखाधडी व मिलावट पर विरोध करने से उनका आवाज ही बंद किया जा रहा है।

4. **आम आदमी की पीडा–**

'लडाई' नाटक में सत्यव्रत के माध्यम से आम आदमी की पीडा को चित्रित किया है। आज की दुनिया में यह पीडा प्रमुख विषय बन गयी है। नाटक में सत्यव्रत को शरीफ आदमी होनें की बात कहते है। तब वह कहता है गलत काम देखना, चूप रहना, यदि बोलने को कहा जाए तो झूंठ बोलना, शिकायत नहीं करना तो समाज आपको स्वीकृति देगा नहीं तो आपको पीडा सहनी पडेगी। इसका विरोध से सत्यव्रत जैसे आम आदमी को पीडा सहनी पडती है। इसी आम आदमी को दुनिया में रहकर उसे दुनिया से अलग कर दिया है। जो यही आदमी दुनिया को बदलना चाहता है।

5. **विभिन्न परिस्थितियाँ–**

आज सामाजिक, राजकीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि विभिन्न परिस्थितीयों में ज्यादात्तर उतार चढाव का सामना करना पड रहा है। उसके प्रति जागरूकता करने का काम सक्सेना ने अपने 'लडाई' नाटक में किया है। समाज में फैले अज्ञान, अंधश्रध्दा, अशिक्षा, चोरी, नशेखोर, घूसखोर, रिश्वतखोर, निक्कमेपन, खूनी आदमी का चित्रण किया है। सत्यव्रत समाज में फैले बुराई के विरूध्द लोगों को जागृत करनें का प्रयास करता है। समाज के साथ राजनीतिक विषयों पर लेखक ने पाठक का ध्यान आकृष्ठ किया है। अस्पताल में गरीब आदमी को बेड नहीं मिल रहा है। खाली बेड होने के बावजूद भी गरीब आदमी की उपचार न होने के कारण मृत्यु हो जाती है। इस आदमी की बेड मिनिस्टर के आदमी को दी जाती है। राजनीतिक हस्तक्षेप बढने के कारण आम गरीब आदमी को व्यवस्था से वंचित होना पड रहा है। 'लडाई' नाटक में धर्मान्धता कितनी बढ गयी है इसका प्रासंगिक उदाहरण है परलोक आश्रम का स्वामी महेश्वरानंद है। धर्म के नाम पर साइकिल पंचरवाला गरीब आदमी तीन रूपये कमाता था। उनको किर्तन के नाम पर चंदा इकठ्ठा करने के लिए घुमाया जा रहा है। सात दिन किर्तन चलने से उनकी रोजी–रोटी बंद हो जायेगी। इनके जेसै असंख्य आदमी से शांति के नामपर साठ लाख रूपया वसूल किया जाएगा। इस अध्यात्मिकता की अफीम का विरोध सत्यव्रत करता है तब उसे आश्रम से निकाला जाता है। आज देश में सभी जगह ऐसी ही धर्मान्धता बढ गयी है। उसीतरह सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थिति पर लेखक ने भाष्य किया है।

6. **युवा पीढी की अवस्था–**

आज देश मे युवावर्ग की संख्या सबसे ज्यादा है जो देश का भविष्य है। 'लडाई' नाटक में युवा पीढी परीक्षा मे पास होने के लिए मास्टर गोयल और खन्ना को चाकू से घुसैड देने की बात कहते है। यही लडके अलग तरकीब बताते है, हडताल करवाकर परीक्षा में बहिष्कार कर देना जिसमें एक साल निकाला जा सकता है। लडकीयों को छेडना आम बात हो गयी है। उसके विरोध करनेवाले सत्यव्रत जैसे लोगों को मारछोड का सामना करना पडता है। यही युवा पीढी नशें में चूर अफीम की तस्करी कर रहे या भिख मांग रहे इसका वर्णन लेखक ने किया है।

इसी तरह बुध्दिजीवी, अखबार के संपादक, स्कूल के प्रिन्सिपल, अस्पताल के डॉक्टर आदि के माध्यम से समसामायिकता का चित्रण 'लडाई' नाटक में चित्रित हुआ है।

'अब गरीबी हटाओं' नाटक में चित्रित समसामायिकता–

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का तीसरा नाटक 'अब गरीबी हटाओं' एक प्रसिध्द नाटक है। इसका प्रकाशन सन् 1981 ई. में हुआ। यह नाटक देश में व्याप्त गरीबी पर आधारित है। इस नाटक में सत्ता का प्रतीक मुख्यमंत्री, राजनेताओं का प्रतीक सरपंच तो विलसिता का प्रतीक राजा है। नेताजी सुविधाभोगी पात्र के रूप में उपस्थित है। वे लोगों पर अन्याय, अत्याचार करते है। यह सारे पात्र की विशेषताएँ आज भी हमारे आस पास दिखाई देते है। समकालीन संदर्भ में लेखक ने पुलिस यंत्रणा, क्रुरतम व्यवहार करनेवाले पात्रों से वासना का शिकार हो गयी औरत को चित्रित किया है। ग्रामीण आदमी और औरत पीडित एवं शोषित पात्र है। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक व्यवस्था विरोधी नाटक नही हैं, जन-समर्थन का नाटक है। जो सदियों से आज तक एक व्यापक अपमान और शोषण का शिकार बना हुआ है। यह नाटक उसकी आकांक्षाओं और घुटन को उसकी यातना और उसके संघर्ष को उसी चट्टान के नीचे दिखाने की कोशिश करता है। यह नाटक पढकर ऐसा लगता है की यह सारी घटनाएँ अभी घटीत हो रही है। सही रूप से यह नाटक समकालीन साहित्य के लिए भी एक अप्रतिम उदाहरण है।

1. **राजनीतिक और लाकेतंत्र व्यवस्था–**

'अब गरीबी हटाओं' नाटक में नेता, मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच, राजा और मंत्री के माध्यम से गरीब आदमी और औरत का शोषण करते है इसका वर्णन किया है। यह सभी शोषक पात्र सुविधाभोगी राजनीतिज्ञ है। राजनीति का हथियार बनाकर गाँव की गरीब औरतों को लालच दिखाकर अपने हवस का शिकार बनाते है। नेताजी कहता है असत्य का नाटक भी सत्यमंडली को ही करना होगा। वह कहते है सत्य, असत्य कला, साहित्य, थिएटर यह राजनीति में नहीं होता। सूत्रधार नेताजी दूत मानकर सत्य विषय के नाटक को नेताजी के कहने पर असत्य का मिलावट करता है। नेतारूपी सूत्रधार आकर नाटक बंद करता है। राजनीति मे चलनेवाले भ्रष्टाचार को चित्रित किया गया है। वह स्पष्ट करता हैं कि राजतंत्र और लोकतंत्र गरीबी नहीं हटा सकते। अब तो गरीब लोगों को मिलकर यह काम पूरा करना पडेगा। समाज की दुखती रगों पर हाथ रखने की तत्कालीन कोशिश सर्वेश्वर ने इस नाटक के माध्यम से किया है। समाज के ग्रामीण आदमी और प्रहरी सरपंच और राजा असलियत का पर्दाफाश करते है।

2. **गरीबी–**

आज देश में २५ प्रतिशत आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रहे है। चालीस साल में बहुत बडा बदलाव नही हुआ। वर्तमान समाज में गरीबों पर धूर्त लोगोंद्वारा किस प्रकार अन्याय अत्याचार होता है। इसका 'अब गरीबी हटाओं' नाटक में चित्रित किया है। इस नाटक में चित्रित मुख्यमंत्री देश की गरीबर को हटाने के लिए प्रयत्नशील है। वास्तव में देश की गरीबी नहीं बल्कि गरीबों को हटाने में रत है। नाटक में सक्सेना यह बोध कराना चाहते है कि जीवन के नाटक में नेता, विदुषक और सूत्रधार बनकर सारे देश में डंडे का घोडा चला रहा है। जिनके कारण देश में गति नहीं आ पा रही है। नाटक का नायक नट गरीब आदमी स्पष्ट कहता है कि राजतंत्र और लोकतंत्र गरीब को नहीं हटा सकते इसके लिए गरीबों को ही संघटित होकर प्रयास करना चाहिए।

औरत दो बच्चों के साथ कुंए में कूद रही थी। इसका कारण गरीब होने के कारण पेट पालना मुश्किल हो रहा था। इसलिए गरीबी के कारण आत्महत्या करने जा रही औरत अपने बच्चों को कुएं की गुड रोटी बात बनायी। इसी तरह पूरे नाटक में केंद्र में गरीबी के कारण हो रही दुर्दशा का चित्रण किया है।

3. **जातिगत भेदभाव–**

'अब गरीबी हटाओं' नाटक में जातिगत भेदभाव का चित्रण हुआ है वैसे तो प्राचीन काल से जातिगत भेदभाव भारतीय समाज में मौजूद है। लेखक ने अपने नाटक में जातीगत भेदभाव मे व्यापक रूप में अपमान, शोषण और अत्याचार का जिक्र किया है। नाटक में मुख्यमंत्री को दरोजा 'गरीबन का पूरवा' में हरिजन सत्तर प्रतिशत बताता है बाकी ब्राम्हण करीब करीब बराबर की बात कहता है। जब जब जादा आबादीवाले हरिजन पाणी के लिए कुआ खूदवाने की बात कहते है। तब सरपंच कहता है कि उनकी जमीन गाँव में नही कुआ खुदवा देंगे तो बराबरी की भावना जागृत हो जाएगी इसके बादमें वैसेही काम चलाने की बात कहते हैं। एक जगह प्रहरी कहता है छोटी जात काम हुकुम बजाना होता है। हुकुम देना नहीं। इसी तरह पूरे नाटक में नाचक्री होने का कारण अत्याचार, अपमान, शोषण और प्रतिशत होना पडता है। इस नाटक में जातीगत भेदभाव समकालीन संदर्भ में यर्थाथता से चित्रित हुआ है।

4. **अत्याचार और शोषण–**

वर्तमान समाज व्यवस्था में अत्याचार और शोषण धूर्त लोगों द्वारा बढता ही जा रहा है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने 'अब गरीबी हटाओं' नाटक में नेता, मुख्यमंत्री, सरपंच, राजा, मंत्री और दरोगा गरीबन का पूरवा' गाव के लोगों पर अत्याचार और शोषण करते है। वहाँ की गरीब औरत पर सरपंच, दरोगा और राजा अत्याचार करते है। साथ ही इस गाववालों पर यह शोषित लोगों द्वारा लगातार शोषण किया जाता है। उसका विरोध करने से मारा या बंदी बना जाता अथवा झूठे आरोप मे आजीवन कारावास दिया जाता है। नाटक के नायक और नायिका इसका शिकार बन गयी है। उनका पूरा परिवार विध्वंस हो जाता है। इस संदर्भ में लेखक की समयपरकता दिखती है।

इसी तरह 'अब गरीबी हटाओं' नाटक में चित्रित समसामायिकता में सत्य–असत्य की लडाई, महंगाई, नेताओं के आश्वासन, व्यंग्य आदि के माध्यम से दिखाई देती है।

4.3.2 लडाई एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटको की शीर्षक सार्थकता एवं उद्देश्य शीर्षक की सार्थकता एवं उद्देश–

शीर्षक किसी भी रचना का महत्वपूर्ण अंग होता है। शीर्षक वह केंद्र बिंदु है, जिससे पाठक को विषय वस्तु का सामान्य एवं आकर्षक बोध हो जाता है। नाटकों के शीर्षक से पाठकों के मन में उत्सुकता जागृत होती है। शीर्षक के बिना नाटक की पूर्तता नहीं हो सकती। नाटक का शीर्षक स्पष्ट, अर्थपूर्ण, विषयानुकूल और प्रभावात्मक होना चाहिए। लघुता, नवीनता, औचित्यपूर्ण जिज्ञासा जगानेवाला शीर्षक उपयुक्त होता है। लाक्षणिकता, आकर्षकता आदि गुणोंसे युक्त शीर्षक महत्वपूर्ण होता है। नाटक का शीर्षक कथावस्तु, पात्र,

घटना, वातावरण उद्देश आदि तत्वों में से किसी एक तत्व के प्राधान्य पर निश्चित किया जाता है। कभी–कभी प्रतीकार्थ को महत्व देने वाला शीर्षक भी दिया जाता है। शीर्षक के बिना नाटक परिपूर्ण हो ही नहीं सकता। शाीर्षक से ही नाटक पहचाना जाता है। नाटक में जो सार्थकता शीर्षक है। सार्थकता का मतलब– बहुत बढिया होता है। सार्थक शीर्षक भी अपने आप में हर प्रकार से औचित्यपूर्ण है। सार्थक शीर्षक का अर्थ है– सफलता या उद्देशपूर्ण शीर्षक।

किसी भी व्यंग्य नाटक का उद्देश समाज तथा राजनीति की विकृतियों, विसंगतियो को रंजक तथा उपहासात्मक ढंग से उद्घाटन कर उसे बदलाव के लिए प्रेरित करना होता है। कोई भी कार्य निरूद्देश नहीं होता उसके लिए साहित्य कृति भी अपवाद नहीं है। नाटककार भी किसी ना किसी उद्देश से ही नाटयकृति का निर्माण करता है। बिना किसी निश्चित उद्देश से लिखा नाटक शक्ति तथा प्रभावोत्पादकता के गुण से वंचित होता है। नाटककार किसी ना किसी उद्देश को सामने रखकर ही नाटकीय कथा, घटनापात्र, प्रसंग आदि का विकास करता है। साथ ही नाटकीय क्रिया– व्यापार द्वारा अपना उद्देश दर्शकों तथा पाठकों तक पहुँचाता है। नाटककार द्वारा अभिव्यक्त उद्देश में उसके व्यक्तित्व एवं दृष्टिकोन तथा युगीन चेतना की झलक मिलती है। किसी भी साहित्य कृति का उद्देश महान और मंगलमय होना चाहिए। नाटक भी एक साहित्यिक रचना होने के कारण किसी एक उद्देश को लेकर लिखा जाता है। उद्देश प्राप्ति के बाद नाटक का संघर्ष समाप्त होता है।

'लडाई' और 'अब गरीबी हटाओं' नाटकों की शीर्षक सार्थकता –

'लडाई' व्यंग प्रधान नाटक है। इस नाटक में सर्वेश्वर ने जन समाज के चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ छेडी गयी लडाई को आधार बनाया है। नाटक एक प्रासंगिक और सार्थक सवाल उठाता है कि झूठ के इस विराट और अंतहिन रेगिस्तान में सत्य का व्रत लेने या उसपर चलने का हौसला दिखाने का अर्थ अनिवार्यतः एक हारी हुई लडाई लडना ही क्यो? नाटक का शीर्षक ही कथावस्तू के आधार बनाया है। इसमें सत्य में लडाई में सबको हिस्सा लेने का आवाहन किया है। नाटक में उद्घोषक देश की परिस्थिति को उघाडकर घोषणा करता है, आजादी के सालों बाद भी आज जीवन के हर क्षेत्र में लडाई जारी है। 'लडाई' में सत्य के लिए लडनेवाला सत्यव्रत का चरित्र प्रस्तुत है। पूरे नाटक में उसकी सत्य के लिए लडाई दिखाई है। अंत मे सत्य के लिए लडते हुए वह मर जाता है। सर्वेश्वर दयाल का 'लडाई' नाटक शीर्षक की सार्थकता को पहचाना जा सकता है। पूरे नाटक 'लडाई' में अन्याय, अत्याचार के विरूध्द लडना, राजनीति एवं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरोध लडना विसंगती के विरूध्द लडना और जनता को जागृत करने के 'लडाई' शीर्षक की सफलता उद्देशपूर्ण है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'अब गरीबी हटाओं' नाटक में चित्रित मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच, राजा और नेताजी गरीबी हटाने के लिए प्रयत्नशील का नाटक कर रहे है। वास्तव में देश की गरीबी नहीं बल्कि गरीबों को हटाने में रत है। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक की शीर्षकता से ही पता चलता है लोकतंत्र की मानसिकता, राजतंत्र की वृत्ति और देश की गरीबी पर ध्यान केंद्रीत होता हैं। लोकतंत्र और राजतंत्र मे बार बार गरीबी हटाने के वादे होते रहे। लेकीन दोनों भी गरीबी हटाने में असमर्थ रहे। अतः उसके लिए स्वयं गरीबों को

ही मिलाकर प्रयास करना चाहिए। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक देश में व्याप्त गरीबी की समस्या पर आधारित शीर्षक से नाटककार सर्वेश्वर ने अनादि काल से परम्परित रूप से स्वीकार कर यह सिध्द किया है कि गरीबी के विरूध्द में सदैव गरीबों को लडना होगा। आज भी गरीबों को अपनी स्थिती में सुधार लाने के लिए स्वयं कमर कसना होगा। यह इस नाटक का संदेश है। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक सही रूप में शीर्षक की सार्थकता को दर्शाता है।

'लडाई' और 'अब गरीबी हटाओं' नाटकों का उद्देश्य –

कोई भी साहित्य कृति बिना उद्देश्य की नही होती। सर्वेश्वर के दोनों नाटक सौदध्यपूर्ण है इनके नाटकों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिती पर करारा व्यंग करते है। लेखक का उद्देश्य ही है की राजनीतिक लोगों से सामान्य जनता पर होनेवाला अत्याचार को दिखाना। उनके नाटकों का अध्ययन करने के पश्चात निम्न कोई उद्देश्य सामने आते है।

1. **राजनीतिक तथा सामाजिक व्यवस्था पर चोट करना –**

सक्सेना के नाटकों मे राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था करारा व्यंग करता है। 'लडाई' नाटक का नायक सत्यव्रत भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाता है तो राजनेता किस प्रकार उसका आवाज दबाते है यह बताना प्रस्तुत नाटक उद्देश्य है। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक राजनेताओं की गरीबी के प्रति झूठी हमदर्दी को दर्शकों के सामने लाना नाटक का उद्देश्य है। इस प्रकार समाज की वास्तविक स्थिती सत्यव्रत, नायक, नट और नटी नाटक व्यंग के माध्यम से पाठकों को बताते है। आम जनता की पीडा दर्शको के सामने लाने का प्रयास सर्वेश्वर ने अपने नाटक के माध्यम से किया है।

2. **गरीबी पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार को सामने लाना–**

वर्तमान समाज व्यवस्था में गरीबों पर धूर्त लोगों द्वारा किस प्रकार अन्याय – अत्याचार होता है। इसका जिक्र 'अब गरीबी हटाओ' और 'लडाई' नाटक में मिलता है। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में राजनेताओं की गरीबों के प्रति झूठी हमदर्दी को दर्शकों के सामने लाना नाटक का उद्देश्य है। इस नाटक के माध्यम से गरीब को अपनी गरीबी हटाने के लिए प्रेरित करना ही नाटक का उद्देश्य है। 'लडाई' में सत्य की लडाई लडानेवाले गरीब सत्यव्रत को कई जगह मार खानी पडती है। इस गरीबों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार सत्यव्रत और गरीब आदमी के माध्यम से लेखक ने पाठकों के सामने लाया है।

3. **भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना–**

आज शिक्षा, राजनीति, राशन, दफ्तर, पोलिस स्टेशन, बस आदि सभी जगह भ्रष्टाचार चल रहा है। सक्सेना भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते है। इसलिए वे भ्रष्ट व्यवहार का खुलकर विरोध करते है। उनके 'लडाई' नाटक का नायक सत्यव्रत को भ्रष्टाचार के खिलाफ लडाई लडना पडता है। परंतु राजनेता उसे कैसे निगल जाते है। यही बतलाना प्रस्तुत नाटक का लक्ष्य रहा है। अब गरीबी हटाओं मे सरपंच और दरोगा

भ्रष्टाचार करते है। उसकी किंमत गरीब आदमी को भूगतनी पडती है। भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने का काम सक्सेनाजी ने अपने दोनों नाटक में किया है।

4. **ग्रामीण जीवन से परिचय कराना–**

आज भी ग्रामीण लोगों का जीवन दयनीय है। गरीबी के कारण ग्रामीण लोग न बदन पर पूरे कपडे पहन सकते है और न शिक्षा पा सकते है। वे जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति में असफल रहते है। 'लडाई' नाटक में सत्यव्रत अस्पताल के बारे में बताते, गरीब गांव की अस्पताल मे मर जाता है। उसके डॉक्टर ध्यान तक नहीं देते। इसी तरह 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में 'गरीबन का पूरवा गाँव का चित्रण किया है। गरीब आदमी और औरत के माध्यम से गाँव की दयनीय स्थिती का चित्रण किया है। आज भी देहातों में तनी समस्याएँ है कि उनके कारण ग्रामीण लोगों का जीवन कष्टप्रद तथा अभावपूर्ण है। इसी बात का परिचय कराना सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का उद्देश रहा है।

5. **स्त्रियों पर अत्याचार को दिखाना–**

सक्सेना ने अपने नाटकों मे स्त्रियों पर चल रहे अत्याचारों को दिखाकर समाज को सचेत करने का प्रयास किया है। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में राजा, दरोगा और सरपंच नाटक की नायिका औरत पर अत्याचार करते है। राजा उसकी सुंदरता पर मोहित होकर अपने महल मे रखवाता है। उनके आदमी को बंदी बनाया जाता है। उनके नाटकों मे लोकतंत्र और राजतंत्र मे वासना का शिकार बनाया है। इसी तरह नारी के शोषण पर करारा व्यंग किया है। अन्याय करनेवालों के पद, रूप एवं नाम बदल गए है। इस प्रकार नाटक के द्वारा स्त्रियों पर चल रहे अत्याचार को डटकर विरोध करने की सलाह दी है।

6. **काले धंधे को उजागर करना–**

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपने नाटकों मे आम जनता को गुमराह बनाकर उनका शोषण करना राजनेताओं का धंदा हो गया है। इस काले धंदे को बंद करना नाटक का एक उद्देश्य रहा है। 'लडाई' नाटक में सत्यव्रत राशन, दफ्तर, मंजन कंपनी, डबलरोटीवाला बदमाश की अकिम व्यापार काले धंदे को उजागर करता है। 'अब गरीबी हटाओं' नाटक में राजा और नेताजी काले धंदे को बढावा देते है। आज तक चल रहे काले धंदे को उजागर करने का प्रयास सक्सेना ने अपने नाटक मे किया है जो उनका उद्देश्य रहा है।

7. **धार्मिक पाखंड चित्रण –**

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक धर्म के नामपर लोगों को फँसाने का चित्रण करके दर्शक को सूचित करने का उद्देश्य है। 'लडाई' नाटक मे सत्यव्रत ढोंगी महेश्वरानंद का पर्दाफाश करता है। परलोक आश्रम मे अखंड किर्तन के नाम पर लोगों को धर्म का डर दिखाकर 60 लाख रूपये चंदा इकठ्ठा करते है। वे अध्यात्मिकता को अफीम मानते है। धर्म के नाम पर ढोंगी साधू दूसरों को भय दिखाकर अपनी नींव डालते है। सत्यव्रत जैसे लोग धार्मिक पाखंड का पोल खोलते है तो उन्हे नास्तिक कहकर धर्म के शत्रू कहकर उनको मारा या निकाला

जाता है। सक्सेना अपने नाटकों में धार्मिकता पाखंड का पोल खोलकर पाठक को जागृत करने का उद्देश्य रहा है।

8. **विविध समस्याओं से परिचित कराना–**

समाज में व्याप्त विविध समस्याओं को समाज से परिचित कराना एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। सक्सेना ने अपने नाटकों के माध्यम से समाज व्याप्त जिन आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक समस्याओं को समाज के सामने रखा है। उन समस्याओं को दूर करके समाज की विसंगतियों को दूर करना चाहिए। 'लडाई' और 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों के विविध समस्याओं से परिचित करना पाठकों का लक्ष्य दर्शाया है। सक्सेना जी को लगता है कि इन समस्याओं का परिचय करना लोगों का ध्यान आकृष्ठ करना उद्देश्य रहा है।

इस प्रकार सक्सेना ने अपने दो नाटकों से यह सूचित किया है कि व्यक्ति ने अन्याय – अत्याचार को सहने के बजाए उसका डटकर विरोध करना चाहिए। अतः अपने नाटकों में विविध क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, विसंगती को यथार्थता से दिखाया है। उस पर व्यंग के माध्यम से चोट करने के उद्देश्य से तथा वास्तविक स्थिती का चित्रण करने की दृष्टी सक्सेना के नाटकों मे मिलती है। सक्सेना अपने नाटकों मे विविध उद्देशों को पाठको तक पहुँचाने में सफल हुए है।

4.3.3 'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओ' नाटकों में चित्रित समस्याएँ –

समस्याएँ– समस्या शब्द को कठिण या 'विकर प्रसंग' के अर्थ मे लिया गया है। आज मानव जिस युग में वास्तव कर रहा है, उसे विज्ञान युग की अपेक्षा 'समस्या युग' कहना अधिक संगत होगा। विज्ञान के कारण मानव प्रगतिशील बन गया है लेकिन प्रगतशिल जीवन के साथ – साथ अनेक जटिलताओं का जन्म हुआ है। मनुष्य जीवन से संबंधित हर कोई क्षेत्र 'समस्या' ने बाँध रखा है। अर्थात कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है, जहाँ व्यक्ति के सामने कोई समस्या नही। इसलिए साहित्य में उसे स्थान मिलना स्वाभाविक ही है। साहित्य में लोकमंगल की भावना होती है। इसी कारण इन समस्याओं को दूर करके मानव जीवन सुखी बनाने के लिए साहित्यकारो ने समस्याओं को साहित्य में स्थान दिया है। नाटक ऐसी विधा है, जिसके द्वारा समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है।

'लडाई' एवं 'अब गरीबी हटाओं' नाटकों में चित्रित समस्याएँ –

सक्सेना जी के नाटकों मे चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात यह कहा जा सकता है कि उन्होंने 'आधुनिक स्वतंत्र भारत में निर्माण हुयी समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने जिन समस्याओं को अपने नाटकों में उजागर किया है, उससे समाज आज परेशान है। उनके नाटकों में आम आदमियों के जीवन की समस्याएँ है। सक्सेना ने जिन समस्याओं को अपने नाटकों में स्थान दिया है वे समस्याए इस प्रकार है –

1. **भ्रष्टाचार की समस्या –**

आज देश में सबसे भीषण समस्या भ्रष्टाचार या रिश्वत की है। आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार माना जाता है। भ्रष्टाचार वर्तमान काल की मुख्य समस्या है। सक्सेना ने अपने नाटकों में इस समस्या को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। उसके 'लडाई' नाटक में सत्यव्रत कार्ड न बनवाने की शिकायत अधिकारी से करते हुए कहता है कार्ड इसलिए नहीं बना रहे है कि वे घुस चाहते है। दूसरे एक प्रसंग में बस का कंडक्टर एक व्यक्ति से पैसे लेता है। मगर उसे टिकट नहीं देता। सत्यव्रत कंडक्टर के खिलाफ इन्स्पेक्टर से शिकायत करता है लेकिन इन्स्पेक्टर भी कंडक्टर से मिला होने के कारण उसे टाल देता है। इस प्रकार भ्रष्टाचार इतना बढ गया है छोटे छोटे क्लर्क से लेकर बडे – बडे अधिकारी तक सभी गैरकानूनी मार्ग अपना रहे है अर्थात भ्रष्टाचार कर रहे है। इस समस्या को सक्सेना ने अपने नाटकों के माध्यम से पाठको के सामने रखा है।

२. **आर्थिक समस्या–**

आज व्यक्ति के सामने पैसों की एक महत्वपूर्ण समस्या है। 'लडाई' का प्रमुख पात्र सत्यव्रत सत्य की लडाई लडने की बात कहता है तब उसकी पत्नी उसे कहती है कि बच्चो की फीस जानी है। महिने का राशन लाना है। दूध और रोटीवाले को हिसाब देना है। तुम सत्य की लडाई लडोगे तो यह लडाई कौन लडेगा। इससे परिवार मे व्याप्त आर्थिक समस्या के स्वरूप सामने आते है। इस प्रकार आम आदमी के जीवन में आर्थिक विषमता के कारण अनेक समस्याएँ निर्माण होती है इस बात को सक्सेना ने अपने नाटकों के माध्यम से स्पष्ट किया है।

३. **धार्मिक समस्या–**

प्राचीन काल से धर्म समाज का केंद्रबिंदु रहा है। लेकिन समाज कंटक लोगों के हाथों में धर्म का अधिकार पडने पर उसका नाजायज फायदा उठाया जाता है। धर्म के ठेकेदार धर्म के नामपर अनाचार, अत्याचार, शोषण करते हैं। साधु लोग धर्म के नामपर विविध संस्थाओं तथा व्यक्ति द्वारा धन इकठ्ठा करके उसका लाभ उठाते है। 'लडाई' में एक गरीब व्यक्ति सत्यव्रत से चंदा मांगता है। पूछने पर वह बताता है कि पाप का नारा और आत्मा की शांति के लिए स्वामी महेश्वरानंद जी आए है। हजारों आदमी चंदा वसूल कर रहे है। साठ लाख रूपये तक अखंड किर्तन के वसूल किये गये थे। सत्यव्रत विरोध करने के लिए स्वामी महेश्वरानंद के पास जाकर विरोध करते है। उन पैसे में से स्कूल और अस्पताल खूलवाने की बात करते है। तब सत्यव्रत को 'नास्तिक' कहकर लोग मारकर भगा देते है।

४. **गरीबी तथा दारिद्रता की समस्या–**

गरीबी तथा दरिद्रता की समस्या भारत देश के सामने सबसे बडी समस्या है। इस समस्या का भयानक रूप गाँवो में अधिक दिखाई देता है। 'अब गरीबी हटाओ' मे मुख्यमंत्री के सामने पेश की गयी औरत गरीबी के कारण अपने दो बच्चो के साथ जान देने लगी थी क्योंकि उसके पास आत्महत्या के सिवाय दूसरा उपाय नहीं था। वह अपने बच्चों से कहती है इस कुँए में गुड हैं हम तैरकर खा लेंगे। इस प्रकार वह अपने बच्चों के

साथ जान देने लगी थी लेकिन लोग उसे पकडकर ले जाते है। इस घटना से गरीबी तथा दरिद्रता की भयावहता हमारे सामने आती है।

५. अन्याय–अत्याचार की समस्या –

आज स्वार्थी लोग अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए आम जनता पर अन्याय– अत्याचार करते है जिससे आम लोगों का जीवन कष्टप्रद बना है। समाज के विभिन्न स्तरों से हो रहे अन्याय के कारण उन्हें असुविधा महसूस होती है। 'लडाई' नाटक में एक ग्रामीण बीमार व्यक्ति अस्पताल के बाहर लेटा है। बार – बार बिनती करने पर भी 'जगह नहीं है' कहकर उसे अस्पताल में भर्ती नहीं कर लिया जाता। लेकिन मिनिस्टर साहब का आदमी आने पर उसे तुरंत भर्ती कर लिया जाता है। 'अब गरीबी हटाओ' में औरत को राजा जबरदस्ती अपने महल में रखता है और उसके पति को सैनिक पकडकर ले जाते है। इस प्रकार ग्रामीण जनता अत्याचार का शिकार बन रही है। इस समस्या को सक्सेना ने अपने नाटकों में उजागर किया है।

६. बेकारी तथा शिक्षा संबंधी समस्या–

बेरोजगारी की समस्या आधुनिक युग की महत्वपूर्ण समस्या है। आज भारत में बेरोजगारी की संख्या बढ रही है। शिक्षा – व्यवस्था भी रोजगार उपलब्ध कराने में असफल रही हैं। इसी कारण लोगों के मन में शिक्षा के प्रति अनास्था निर्माण हो रही है। छात्र गैरकानूनी मार्ग अपनाकर परीक्षा में पास हो जाते है। लेकिन नौकरी न मिलनेपर उन्हें बेकारी का सामना करना पडता है। 'लडाई' का एक प्रसंग शिक्षा के प्रति अनास्था दर्शाना है। 'लडाई' नाटक के एक प्रसंग में लडका कहता है कि मैने मेजपर चाकू रखकर साठ नंबर नकल किए। दूसरा कहता है मैने तो सोचा है खन्ना साहब के घर जाकर साफ कह दूँगा, सर पास कर दीजिए वरना ठीक नहि होगा। तीसरा कहता है हडताल या परीक्षा का बहिष्कार करेंगे उससे एक साल जाएगा। इस प्रकार आज की शिक्षा व्यवस्था से ऐसे लोग पढकर निकल रहे है जो जीवन को स्वावलंबी बनाने में असमर्थ है। सक्सेना ने छात्रों के संवाद के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या को चित्रित किया है।

७. राजनीतिक समस्या –

आधुनिक काल में राजनीति भ्रष्टाचार का साधन बन गई है। वर्तमान राजनीति अपने आपको जनता का प्रतिनिधि कहते है परंतु असल में समाजसेवा के पीछे उनका स्वार्थ छिपा रहता है। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में नेताजी कहता है, हम नेता है नेता, कही भी जा सकते है। वे कहता है पांच पांच मंडलिया हमारी पार्टी में है और सबका सूत्रधार मैं ही हूँ। इस नाटक में मुख्यमंत्री, कृषिमंत्री, सरपंच और दरोगा जैसे राजनीति का गलत इस्तेमाल करते है। इसी तरह दिन ब दिन राजनेताओं की भ्रष्ट प्रवुत्ति बढती जा रही है। सक्सेना ने तो अपनी नाटकों में राजनीतिक समस्या को उठाया है।

१. जाति की समस्या–

जाति समस्या आज के भारतीय समाज व्यवस्था की एक ज्वलंत समस्या है। प्राचीन काल से समाज में निम्न जातियाँ अन्याय और अत्याचार सहती आयी है। आज भी निम्न जाति में पैदा हुए लोगों का जीवन

पीडादायक है। समाज के उच्चवर्णीय लोग हरिजनों को उनके अधिकारों से जान बूझकर दूर रखते हैं। इसका सफल चित्रण सक्सेना के नाटकों में मिलता है। उनके 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में मुख्यमंत्री के पूछने पर सरपंच बताता है कि गाँव में पानी का एक ही कुँआ है। हरिजन लोग पडोस के गाँव से, जहाँ हरिजनों को स्वतंत्र कुआँ नही है। तालाब से पानी लाते है। कृषिमंत्री कुंआ खुदवाने की बात कहता है तब सरपंच कहता है उनकी जमीन नहीं है गाँव में कहा खोदेंगे? फिर कुँआ खुदवा देंगे तो साले सिर पर चढनें लगेंगे बराबरी की हवस जाग जाएगी। वैसे उनको कुँआ जरूरी नहीं है। इसप्रकार आज भी जाति प्रथा के शिकार हरिजन लोग बन रहे है।

इसीप्रकार 'लडाई' नाटक में बेसहारा लोगों की समस्या, सत्यव्रत भिखारी की व्यथा का वर्णन किया है। भाषा की समस्या में प्रिसिंपल अंग्रेजी के सिवा अन्य भाषा में शिकायत नहीं सुनता। सत्यव्रत विरोध करने उनके बच्चों के स्कूल से निकालने की बात प्रिंसिपल कहता है। मिलावट की समस्या में सत्यव्रत मंजन की शीशी, रोटीवाले मिलावट की बात कहता है। पथभ्रष्ट अखबार की समस्या में सत्यव्रत पथभ्रष्ट अखबार संपादक को उनकी जिम्मेदारी बताता है। इस प्रकार अखबार भी पथभ्रष्ट बने है तथा सभी बातें पाठकों के सामने नहीं ला रहे है। प्रशासनिक अव्यवस्था की समस्या मुख्यमंत्री गरीबी हटाने का आश्वासन देता है। यातायात की समस्या की भी जिक्र सक्सेना ने 'लडाई' नाटक में किया है। 'अब गरीबी हटाओ' नाटक में शोषक की समस्या का जिक्र किया है। अंधविश्वास की समस्या का चित्रण सक्सेना ने अपने नाटकों में किया है

निष्कर्ष–

समस्याओं ने आज मानवी जीवन को जकड रखा है, त्रस्त किया है। समस्या का स्वरूप विश्वव्याप्त है। समाज मे व्याप्त समस्याओं को साहित्य के द्वारा समाज से अवगत किया जा सकता है। सक्सेना जी के नाटकों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करने के पश्चात यह कहा जा सकता है कि उन्होंने आधुनिक स्वतंत्र भारत में निर्माण हुयी समस्याओं का यथार्थ चित्रण अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है। उससे समाज आज परेशान है त्रस्त है। उनके नाटाकों में आम आदमियों के जीवन की समस्याएँ है।

4.4 स्वय अध्ययन के लिए प्रश्न–

निम्नलिखित विकल्पों मे से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'लडाई' नाटक में सत्य के लिए लडनेवाले के..................नाम से चरित्र को प्रस्तुत किया है।

   अ. सत्यव्रतब. रोटीवाला   क. नेताजी   ड. सूत्रधार

2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने सत्यव्रत के माध्यम से प्रस्तुत नाटक में .... जारी करने का संकेत देते है।

   अ. अनशन   ब. लडाई   क. रास्ता रोको   ड. हडताल

3. स्वामी महेश्वरानंद का .... आश्रम में अखंड कीर्तन हो रहा है।

   अ. मृत्यु लोक   ब. परलोक   क. धर्म   ड. शांती

4. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का प्रसिध्द तीसरा नाटक है। जिसका प्रकाशन .... में हुआ है।

अ. 1979 ब. 1994 क. 1981 ड. 1971

5. 'अब गरीबी हटाओ' नाटक देश में व्याप्त .... की समस्या पर आधारित है।

अ. मँहगाई ब. लडाई क. भ्रष्टाचार ड. गरीबी

1. अब गरीबी हटाओं नाटक के गाव का नाम................. था।

अ. गरीब का पूरवा ब. गरीबन क. पूरवा ड.

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

जहालत– अज्ञान, मुर्खता, अशिआ

बदनियती– बेईमानी, लालच

जालसाजी – धोखाधडी

दियासलाई – माचिस

आनन फानन– अतिशीघ्र, तुरेनए बात की बात में

बुनियादी – आरंभिक

खब्ती– पागल सनकी

सियासत – राजनीति

बैरयी– पागलपन

गँडसा – चारा काटने का औजार

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. सत्यव्रत 2. लडाई 3. पालोक 4. 1981 5. गरीबी

6. गरीबी का पूरवा

4.7 सारांश

1. 'लडाई' के अंत में लेखक पाठकों को सोचने के लिए मजबूर है कि सत्यव्रत जैसे व्यक्ति सत्य की लडाई कब तक लडेगा? क्या आपकी लडाई अर्थहीन थी? तो क्या समाज में एक अकेले आदमी की लडाई चल रही है। यह एक सामसामायिकता की लडाई है। सत्यव्रत जैसे अकेले आदमी की गलत बातसें के लिए लडाई अर्थहीन है? यदि नहीं तो कौन जिसके साथ मिलकर वह सतय की लडाई लढे? इस प्रकार लेखक ने हर एक

व्यक्ति को इस लडाई में सहभागी होने का आवाहन करते है। 'लडाई' नाटक की शीर्षक सार्थकता सही लगती है। लेखक ने सत्यव्रत के माध्यम से समाज में कैसे भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, एठी चुनावबाजी, जात-पाँत का बोलबाला, आर्थिकता, बेकारी तथा शिक्षा संबंधी समस्याएँ समाप्त नहीं होती तब तक हमें यह लाडाई जारी रखनी होगी अर्थात हम सबको मिलकर सत्य के लिए लडना चाहिए। यहाँ नाटक समाधान की ओर बढा है।

2. 'अब गरीबी हटाओ' नाटक को पढकर ऐसा लग रहा है की उसमें से सारी घटनाएँ अभी घटीत हो रही है। आज के समकालीन संदर्भ में राजतंत्र और लोकतंत्र गरीबी नही हटा सकते। गरीब मिलकर ही अपनी गरीबी दूर कर सकते है। आहे नाटक समाप्त करते हुए वे लिखते हैं कि यह नाटक आगे तभी हो सकता है, जब आप में इतनी ताकत आ जाए आप हम मिलकर इनकी ताकत का मुकाबला कर सके, नाटक आगे चलवा सके। अतः गरीबी हटाने के लिए स्वयं गरीबों को ही प्रयास करना चाहिए इसमे हम नाटककार से नाटक की शीर्षक सार्थकता दिखती है। राजनितिक, चित्रण, ग्रामीण जीवन की समस्या, स्त्रियों पर चल रहे अत्याचार और जातिभेद की समस्या को सक्सेना जी ने अपने नाटक में समस्याएँ की ओर ध्यान आकृष्ठ किया है और उसे समाधान की ओर संकेत दिया है।

इस प्रकार सक्सेना दो अपने नाटकों के माध्यम से समकालीन संदर्भ, शीर्षक की सार्थकता और समाज मे प्रचलित समस्याओं की सूक्ष्म अंकन किया है।

4.8 स्वाध्याय

अ. टिप्पणियाँ :

1. जातिगत भेदभाव
2. धार्मिक पाखंड
3. युवा पिढी की अवस्था

ब. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'लडाई' नाटक के समसामायिकता का परिचय दीजिए।
2. 'अब गरीबी हटाओ' नाटक के समसामायिकता का परिचय दीजिए।
3. 'लडाई' एवं 'गरीबी हटाओ' नाटक के शीर्षक की सार्थकता बताइए।
4. 'लडाई' नाटक की समस्याएं को चित्रित कीजिए।
5. 'अब गरीबी हटाओ' नाटक की समस्याएं को चित्रित कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1. हिंदी के लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की तुलना में इसी तरह मराठी हिंदी लेखक जानने की कोशिश कीजिए।
2. आप के आस पास देखे गए 'गरीबी और लाडाई' के संबंधित नाटक की चर्चा कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक एक नवीन मूल्यांकन - लेखक - डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे, साहित्य सागर, हंसपुरम, कानपूर
2. नाटककार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे, साहित्य सागर, हंसपुरम, कानपूर

❑❑❑